# अभिजन और समाज

## अनुक्रम

अभिजन   अवधारणा और सिद्धात

□□

सतरहवी शताब्दी मे 'एलीट' शब्द का प्रयोग वस्तुओ की किसी खास अच्छाई के लिए किया जाता था, और आगे जाकर श्रेष्ठ सामाजिक समूहो के लिए भी इसका इस्तेमाल किया जाने लगा जैसे वज्र सैनिक दस्तो अथवा अभिजात वग के उच्चतर स्तरो के लोगो के लिए।[1] आक्सफोड अगरेजी शब्दकोश के अनुमार अगरजी भाषा मे 'एलीट' शब्द का प्रयोग पहले पहल 1823 मे हुआ, उस समय तक यूरोप के अ य देशा मे इस शब्द का प्रयाग सामाजिक समूहा के लिए होन लगा था। किंतु यूरोप म उन्नीसवी शताब्दी के आखिरी हिस्से तक अथवा ब्रिटेन और अमरीका मे बीसवी शताब्दी के चौथे दशक तक सामाजिक और राजनीतिक रचनाओ मे इस शब्द का प्रयोग व्यापक रूप से प्रचलित नही हो पाया था। उस समय यह अभिजनो से सबधित समाजशास्त्रीय सिद्धाता के माध्यम से विशेपत विल्फ्रेड परेतो की कृतियो द्वारा प्रचलन म आया।

परेतो ने 'अभिजन' (एलीट) शब्द की व्याख्या दो भि न तरीका से की। उसने शुरू म इसकी बहुत ही सामा य परिभाषा प्रस्तुत की मान लीजिए कि मानवीय गतिविधि के प्रत्येक क्षेत्र मे प्रत्येक व्यक्ति को उसकी क्षमता के अनुमार एक सूचकाक प्रदान कर दिया जाता है, ठीक वैस ही जैसे कि स्कूल म परीक्षाओ म विविध विपयो के लिए अक प्रदान कर दिए जाते है। यह भी मान लीजिए कि सर्वोच्च कोटि की क्षमता के लिए 10 अक निर्धारित कर दिए जाए जिस व्यक्ति के पास कोई भी ग्राहक न आए उसे 1 अक दिया जाए और वज्र मूख के लिए 0 (शू य)। जिस व्यक्ति ने ईमानदारी या बेईमानी से लाखो रुपये कमा लिए हो उसे हम दस अक देंगे। हजारो की कमाई करने वाले को 6 अक दिए जाएगे, किसी तरह पेट पालने वाले को एक अक और भिक्षा पर जीने

के लिए विवश लोगो को शून्य मिलेगा। इसी प्रकार मानवीय गतिविधि के प्रत्येक क्षेत्र मे अक निधारित किए जाए और जिन लोगो को किसी विशिष्ट मानवीय गतिविधि के क्षेत्र मे सर्वोच्च अक मिलें यदि उनका एक वग बनाया जाए तो उस वग का अभिजन अथवा एलीट कहा जाएगा।[2] परेतो स्वय अभिजन की इस अवधारणा का और अधिक उपयोग नही करता है उसने इसका प्रयोग सामाजिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे व्यक्तिगत कायक्षमता की असमानता पर प्रकाश डालने तथा चिंतन की मूल विषयवस्तु 'शासक अभिजन' (गवनिंग ऐलीट) की परिभाषा के प्रस्थान बिंदु के रूप म किया है। उसका कहना है 'हम यहा जिस विशिष्ट शोध म व्यस्त है उसमे यानी सामाजिक सतुलन के अध्ययन मे अभिजन का दो वर्गो म विभाजन सहायक सिद्ध होगा। ये दो वग हैं शासक अभिजन जिसम शासन के भीतर प्रत्यक्षत अथवा परोक्षत महत्वपूण भाग लेने वाले लोगो का समावेश होता है तथा शासकेतर अभिजन वग जिसमे समाज के शेष लोग शामिल है। इस प्रकार हम किसी देश की जनता म दो स्तर दिखाई देते है 1 निम्नतर स्तर, अर्थात अभिजनेतर जिनके शासन पर सभावित प्रभाव से यहा तुरत हमारा कोई सबध नही है, तथा 2 उच्चतर स्तर अर्थात अभिजन वग जिसे दो उपवर्गो म विभाजित किया जा सकता है क, शासक अभिजन, तथा ख शासकेतर अभिजन।[3]

परेतो के पूववर्ती ग्रथो के आधार पर यह पता लगाना कठिन नही है कि वह इस अवधारणा तक कैसे पहुचा। अपने ग्रथ कोस द इकानामी पालीतीक[4] म उसने समाज के भीतर के सपत्ति वितरण के सामान्य वक्र का विचार प्रतिपादित किया था। एक अन्य ग्रथ लेस सिस्तेम्स सोसियालिस्तेस'[5] मे उसने दो तक प्रस्तुत किए। पहला तो यह कि यदि व्यक्तियो का वर्गीकरण उनकी मेधा के स्तर, गणित के प्रति उनकी प्रवृत्ति सगीत की प्रतिभा, नैतिक चरित्र सरीखे अन्य आधारो पर किया जाए तो सभवत वैसे ही वितरण-वक्रो का निर्माण होगा जसे कि सपत्ति के सदभ म तैयार होते हैं, दूसरा यह कि यदि व्यक्तियो का वर्गीकरण उनके राजनीतिक और सामाजिक प्रभाव अथवा सत्ता के आधार पर किया जाए तो अधिकाश समाजो म यह स्थिति सामने आएगी कि जिन व्यक्तियो का सपत्ति के वितरण सबधी अनुक्रम म जो स्थान था वही स्थान उन्हे इस अनुक्रम म भी मिलेगा। तथाकथित उच्च वग आम तौर पर सबसे अधिक मालदार भी होते हैं। य वग अभिजन अथवा 'कुलीन' वग का प्रतिनिधित्व करते हैं।[6]

इसके बावजूद अपने ग्रथ 'दि माइड ऐंड दि सोसायटी म परेतो ने इस प्रश्न का

उठान के ढग म महत्वपूण परिवतन कर दिया है। वहा परेतो कि ही गुणा (सत्ता और प्रभाव महित) के वितरण वक्रो के यभट म नही फसता, वरन वह शासक अभिजन अथात सत्ताधारी वग और आम जनता अर्थात सत्ताहीन वग के बीच साधारण विराध का अध्ययन करता है। यह हा सकता है कि परेतो की धारणा म यह परिवतन गायतानो मोस्का की कृतियो के अध्ययन का परिणाम हो। गायतानो मोस्का पहला विचारक था जिसन अभिजन और जन साधारण के बीच अय पारिभाषिक शब्दा के प्रयोग द्वारा व्यवस्थित रूप से भेद किया तथा इसे बुनियाद बनाकर राजनीति के नए विज्ञान की रचना करन की कोशिश की।[7] मोस्का ने अपने मूलभूत विचार को इन शब्दा म व्यक्त किया

मभी राजनीतिक सरचनाओ म समान रूप से पाए जाने वाले अचर तत्वा और प्रवृत्तिया म स एक तथ्य इतना स्पष्ट है कि वह विहगम दष्टि डालने पर भी दिखाई पड जाता है। जो समाज नाममात्र के लिए ही विकसित हो पाए है और जिनम सभ्यता का विहान अभी मुश्किल से ही हुआ है उनसे लेकर अत्यधिक विकमित और शक्तिशाली समाजो तक से प्रत्येक समाज मे दो वग उभर आए है शासक वग और शासित वग। प्रथम वग म लोगो की सख्या तो कम होती है, लेकिन समस्त राजनीतिक कामकाज वो वही वग अजाम देता है, सारी सत्ता उसके ही हाथो मे केंद्रित होती है तथा वह सत्ता के लाभा को प्राप्त करने मे रस लता है इसके विपरीत दूमरा वग बहुसख्यक है वह प्रथम वग द्वारा कभी कमोबेश वैधानिक तरीका से और कभी कम तथा कभी ज्यादा स्वेच्छाचारपूण और हिंमक तरीका से चालित और नियत्रित होता है।[8] मास्का कहता है कि एक अल्पसख्यक वग बहुसख्यक समाज पर केवल इस कारण शासन कर पाता है कि वह सगठित है ' जब एक सगठित अल्पसख्यक वग एक ही मनोवत्ति मे प्रेरित हाकर काम करता है ता असगठित बहुसख्यक समाज पर उसका आधिपात्य अपरिहाय हो जाता है। बहुसख्यक वग के प्रत्येक अकेले व्यक्ति (सदस्य) के मुकाबले मे अल्पसख्यक वग की शक्ति अपराजेय बन जाती है। इसका कारण यह है कि व्यक्ति को एक सगठित अल्पसख्यक वग के समग्र बल का सामना करना पडता है। साथ ही अल्पसख्यक केवल इसी कारण सगठित हो जाता है कि वह अल्पसख्यक है साथ ही यह भी सत्य है कि अल्पसख्यक वग के सदस्य प्राय (सामथ्य की दष्टि से) श्रेष्ठ लाग होते है। ' अल्पसख्यक शासक वग के सदस्या म नियमित तौर पर कोई न कोई ऐसा गुण अवश्य होता है जा उनके समाज म बहुत प्रतिष्ठित अथवा बहुत प्रभावशाली होता है, फिर भले ही वह गुण यथाथ हो अथवा महज दिखावा।[9]

मास्का और परेतो दाना न ही 'अभिजना अयात उन व्यक्ति समूहा का अध्ययन

किया जो या तो प्रत्यक्षत राजनीतिक सत्ता का प्रयोग करते हैं अथवा जिनमें उसको प्रभावित करने की बहुत अधिक सामर्थ्य होती है। इसके साथ ही उन्होंने यह बात स्वीकार की कि 'शासक अभिजन' अथवा 'राजनीतिक वर्ग' स्वयं भी पृथक सामाजिक समूहों से मिलकर बनता है। परेतो ने कहा कि 'समाज के उच्चतर स्तर अर्थात अभिजन वर्ग में नाममात्र के लिए अनेक व्यक्ति समूह होते हैं लेकिन उनमें हमेशा ही गहरा अंतर नहीं होता, उन्हें कुलीन वर्ग भी कहा जाता है।' उसने इस संदर्भ में सैनिक, धार्मिक तथा वणिक कुलीन वर्गों और धनिक वर्गों' का भी उल्लेख किया।'[10] इस मुद्दे को परेतो की शिष्या मेरी कोलाबिंस्का ने फ्रांस के अभिजनों के अध्ययन में और भी बारीकी के साथ उभारा। उसने शासक अभिजनों के विभिन्न उपसमूहों के बीच व्यक्तियों के संचार के तत्व की विस्तार से चर्चा की, तथा ऐसे चार समूहों धनिक सामंत सैनिक कुलीन वर्ग और पुरोहित वर्ग के इतिहास का विस्तार से विवेचन किया।[11] इसके बावजूद परेतो का सबसे अधिक बल शासक अभिजन और शेष (अतर्भिजन) के भेद पर है और लोकतांत्रिक समाजों में स्वयं अभिजन की संरचना की विस्तृत और व्यापक विवेचना का कार्य विशेषत मोस्का ने किया। इस प्रकार वह उन विविध दलीय संगठनों का उल्लेख करता है 'जिनमें यह राजनीतिक वर्ग बटा हुआ है' तथा जिन्हें बहुसंख्यक वर्गों के मत प्राप्त करने के लिए आपस में होड करनी पडती है। आगे जाकर वह कहता है कि 'इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि प्रतिनिधिमूलक (शासन) प्रणाली अनेक सामाजिक शक्तियों को राजनीतिक व्यवस्था में भाग लेने का मार्ग प्रदान करती है, और इसी कारण वह अन्य सामाजिक शक्तियों विशेषत नौकरशाही के प्रभाव को संतुलित और सीमित कर देती है।' इस अंतिम अवतरण से राजनीतिक व्यवस्थाओं के विकास की व्याख्या के बारे में परेतो और मोस्का के दृष्टिकोण के बीच विद्यमान भारी मतभेद का भी बोध होता है। परेतो हमेशा शासक अभिजन और जनसाधारण के बीच के भेद की सार्वभौमिकता पर ही बल देता है तथा वह 'लोकतंत्र' तथा प्रगति की आधुनिक धारणाओं की कठोर शब्दों में आलोचना करता है। इसके विपरीत मोस्का आधुनिक लोकतंत्र की विशेषताओं को मान्यता देने और सीमित अर्थों में उसके समर्थन के लिए तैयार है। यह सही है कि अपने प्रथम ग्रंथ में उसने यह कहा है कि संसदीय लोकतंत्र में प्रतिनिधि का निर्वाचन मतदाताओं द्वारा नहीं किया जाता वरन यह एक नियम सा ही बन गया है कि वह अपने आपको उनसे निर्वाचित कराता है अथवा उसके मित्र उसे निर्वाचित कराते हैं।' लेकिन अपनी बाद की कृतियों में वह यह स्वीकार करता है कि बहुसंख्या अपने प्रतिनिधियों द्वारा सरकारी नीति पर एक निश्चित मात्रा में नियंत्रण रख सकती है। जैसा कि

मोजेन ने कहा है मोस्का मार्क्स के विचारों की आलोचना करते समय ही जनसाधारण और अल्पसंख्यकों के बीच गहरा फर्क करता है उसके अतिरिक्त वह अधिकांश तौर पर एक ऐसे सूक्ष्म और जटिल सिद्धांत का प्रतिपादन करता है जिसके अंतर्गत राजनीतिक वर्ग स्वयं ही विविध सामाजिक शक्तियों से प्रभावित और नियंत्रित होता है। ये सामाजिक शक्तियां समाज के भीतर अनेक विभिन्न हितों का प्रतिनिधित्व करती हैं। इनके अतिरिक्त राजनीतिक वर्ग (परेतो का शासक अभिजन) समूचे समाज की उस नैतिक एकता से भी प्रभावित और नियंत्रित होता है जो विधि शासन (कानून के शासन रूल आफ ला) में अभिव्यक्त होती है। मोस्का के सिद्धांत के अनुसार अभिजन शासन का संचालन बल और धोखाधड़ी' के द्वारा नहीं होता, वरन वह किसी न किसी रूप में समाज के महत्वपूर्ण और प्रभावशाली समूहों के हितों और प्रयोजनों का प्रतिनिधित्व करता है।

मोस्का के चिंतन में एक अन्य तत्व भी है जो उसके मूल स्वरूप में संशोधन करता है। आधुनिक काल में अभिजन अनिवार्यतः शेष समाज से ऊंचा उठा हुआ नहीं होता, वह एक उप-अभिजन वर्ग के माध्यम से समाज के साथ घनिष्ठतापूर्वक जुड़ा होता है। यह उप-अभिजन एक बहुत व्यापक समूह होता है जिसके अंतर्गत सारे सरकारी कर्मचारियों के समूचे नव मध्यवर्ग' प्रबंधकों और सफेदपोश कर्मचारियों, विज्ञानियों तथा इंजीनियरों, विद्वानों और बुद्धिवादियों का समावेश होता है। इस समूह में से अभिजन की भर्ती तो होती ही है (अभिजन का प्रयोग यहां शासक वर्ग के संकीर्ण अर्थ में किया गया है) यह स्वयं भी समाज के शासन का एक महत्वपूर्ण तत्व होता है तथा मोस्का कहता है कि किसी भी राजनीतिक संगठन की स्थिरता इस द्वितीय स्तर के अभिजन की नैतिकता बुद्धिमत्ता और क्रियाशीलता पर निर्भर होती है।' इस प्रकार ग्राम्सची की भांति यह मानना गलत नहीं होगा कि मोस्का का 'राजनीतिक वर्ग एक पहेली है। मोस्का की धारणाएं इतनी अनिश्चित और लचीली हैं कि उसका अभिप्राय साफ तौर पर समझ में नहीं आता। कभी वह मध्यवर्ग के बारे में सोचता है कभी आम संपत्तिशाली लोगों के बारे में और कभी उन लोगों के बारे में जो अपने आपको 'शिक्षित' कहते हैं।' लेकिन ऐसे भी अवसर आए हैं जब मोस्का राजनीतिक व्यक्तियों को ही अभिजन मान बैठा है।'[12] आगे जाकर 'मोस्का का राजनीतिक वर्ग निश्चित तौर पर शासक समूह का बौद्धिक पक्ष बन जाता है। मोस्का का अभिजन परेतो की अभिजन संबंधी धारणा के बहुत करीब आता है। परेतो की धारणा बुद्धिजीवी वर्ग के ऐतिहासिक तत्व और राजनीतिक तथा सामाजिक जीवन में उसके काम की व्याख्या का एक अन्य प्रयास है।[13]

मोस्का और परेतो द्वारा प्रतिपादित धारणाओ मे निम्न समान प्रत्यय हैं प्रत्येक समाज म एक ऐसा अल्पसख्यक वग होता है और होना ही चाहिए जो शेष समाज पर शासन करता है, यह अल्पसख्यक वग 'राजनीतिक वग' अथवा शासक-अभिजन है, इसम व लोग होते है जिनके हाथा मे राजनीतिक सत्ता हाती है अथवा जा लाग राजनीतिक निणया पर प्रत्यक्ष प्रभाव डाल सकते है। यह वग कालातर म सदस्यता की दष्टि से परिवर्तित होता रहता है। यह परिवतन साधारणतया समाज के निम्नतर स्तरा मे आने वाले सदस्या की भरती, कभी कभी नए सामाजिक समूहो के समावेश तथा क्राति की स्थिति म स्थापित अभिजन के स्थान पर एक 'प्रति अभिजन' के उदय के कारण हाता है। 'अभिजन के परिसचार' के तथ्य का आगे एक अय अध्याय म विस्तार स अध्ययन किया जाएगा। इस बिंदु से मोस्का और परेतो के चिंतन मे दूरी शुरू हो जाती है। परेतो प्रत्येक समाज मे शासको और शासितो के बीच पथक्करण पर बहुत बल देता है तथा वह इस विचार को स्वीकार नही करता कि इस मामले मे लोकतत्रीय राजनीतिक व्यवस्था अय व्यवस्थाआ की अपक्षा भिन्न होती है।[14] वह अभिजनो के परिसचार की व्याख्या मुख्यतया मनोविज्ञानिक आधारा पर करता है तथा इसके लिए वह अवशिष्टो (भावा) की कल्पना का इस्तेमाल करता है जिसका उसने दि माइड ऐंड सोसायटी' के प्रारभिक भावा मे विस्तार से वणन किया है। दूसरी ओर मोस्का स्वय अभिजन राजनीतिक वग के उच्च स्तरा और उसम प्रतिनिधित्व प्राप्त करने वाले हिता अथवा सामाजिक शक्तियो की विषमताओ तथा आधुनिक समाज के भीतर मुख्यत राजनीतिक वग के निम्नतर स्तर अर्थात नव मध्यवग के माध्यम से शष समाज के साथ उसके घनिष्ठ सबधा के बारे म कही अधिक सजग है। इस प्रकार मोस्का यह स्वीकार करता है कि आधुनिक लोकतत्रीय समाज तथा अय प्रकार की राजनीतिक व्यवस्थाआ म अतर है तथा कुछ सीमा तक यह भी कि बहुसख्या पर शासन करने वाले अल्पसख्यक वग की महज प्रभुता के अलावा उनके बीच कुछ पारस्परिक सबध भी होता है। वह नए अभिजनो (अथवा अभिजन के अनगत नए तत्वा) के उदय के लिए समाज के भीतर नए हितो (उदाहरण के लिए प्रौद्योगिकीय अथवा आर्थिक हितो) का प्रतिनिधित्व करने वाली नई सामाजिक शक्तिया को आशिक तौर पर जिम्मेदार मानता है।[15] अत यह कहा जा सकता है कि मोस्का अभिजना के परिसचार की व्याख्या समाजशास्त्रीय तथा मनोवैज्ञानिक दोना दष्टिया से करता है।

परेतो और मोस्का के बाद अभिजना के बारे म जो भी अध्ययन हुए उनम राजनीतिक सत्ता की समस्या के बारे म इन दोनो की, और विशेषत मोस्का की

दिलचस्पी का अनुसरण किया गया। इस प्रकार एच० डी० लासवेल ने अपने प्रारंभिक लेखन जिसकी प्रशंसा स्वयं मोस्का ने की थी तथा हाल में ही हूवर संस्थान के अंतर्गत अभिजनों संबंधी अपने अध्ययन में राजनीतिक अभिजन पर विशेष ध्यान दिया है। वह कहता है राजनीतिक अभिजन में राजनीतिक निकाय के सत्ताधारियों का समावेश होता है। सत्ताधारियों में नेतृत्व तथा उन सामाजिक संरचनाओं का समावेश होता है जिनमें नेताओं का अभ्युदय होता है तथा जिनके प्रति किसी निश्चित अवधि के भीतर वे जिम्मेदार होते हैं।[16] इस धारणा तथा परेतो और मोस्का की धारणा में अंतर यह है कि इसमें राजनीतिक अभिजन को उन अन्य अभिजनों से पृथक दिखाया गया है जो भले ही सामाजिक दृष्टि से कितने ही प्रभावशाली हों किंतु सत्ता के प्रयोग के साथ घनिष्ठतापूर्वक जुड़े हुए न हों, तथा जिन सामाजिक संरचनाओं के भीतर से अभिजनों की विशेषत भरती होती है (तथा जिनमें सामाजिक वर्ग भी शामिल हैं) उनकी कल्पना उस चिंतनधारणी में फिर से दाखिल कर दी गई है जिससे कि उसे विशेषत परेतो ने निकाल फेंका था। अभी हमारे सामने यह बात स्पष्ट हो जाएगी कि मूलत अभिजन धारणा का उदय सामाजिक वर्गों के विरुद्ध हुआ था। रेमंड एरन की रचनाओं में भी यही बात मिलती है। रेमंड एरन ने भी मुख्यत अभिजन को शासक वर्ग ही माना है जो अल्पसंख्या में होता है लेकिन उसने अभिजन और सामाजिक वर्गों के बीच संबंध स्थापित करने की चेष्टा की है।[17] उसने इस बात पर बल दिया है कि आधुनिक समाजों में अभिजन अनेक (बहुल) होते हैं, तथा बुद्धिवादी अभिजन के सामाजिक प्रभाव का विवेचन किया है जो आम तौर पर राजनीतिक सत्ता की व्यवस्था का अंग नहीं होता।[18]

अभिजन के प्रत्यय में जो नए भेद किए गए हैं और परिशोधन हुआ है उसके कारण अब पुरानी पारिभाषिक शब्दावली की अपेक्षा अधिक स्पष्ट शब्दावली इस्तेमाल करने की जरूरत है।[19] अब 'अभिजन' शब्द का प्रयोग आम तौर पर वस्तुत उन कृत्यमूलक, मुख्यत व्यावसायिक समूहों के लिए किया जाने लगा है जिनको समाज में (किसी भी कारणवश) उच्च स्तर प्राप्त है। आगे मैं अभिजन शब्द का प्रयोग इसी अर्थ में करूँगा। इस प्रकार के अभिजनों का अध्ययन कई प्रकार से लाभदायक होता है अभिजनों का आकार, विभिन्न अभिजनों की संरचना उनके पारस्परिक तथा सत्ता का प्रयोग करने वाले समूहों के साथ उनके संबंध—ये कुछ ऐसे तथ्य हैं जिनका अध्ययन विभिन्न प्रकार के समाजों के बीच भेद करने और सामाजिक संरचना में होने वाले परिवर्तनों के कारणों की व्याख्या की दृष्टि से आवश्यक होता है। इसी प्रकार अभिजनों के बंद अथवा खुले चरित्र का अर्थात उनके सदस्यों की भरती की प्रकृति और इसमें निहित सामाजिक

गतिशीलता (एक समूह से दूसरे समूहा म सदस्यो के मुक्त विचरण अथवा आवागमन) का भी महत्व है। यदि इन कृत्यमूलक समूहा के लिए अभिजन शब्द का प्रयोग सामान्य अर्थ मे किया जाए तब हम समाज पर शासन करने वाला उस अल्पसंख्यक समूह के लिए एक और शब्द (नाम) तलाश करना होगा जो ठीक उसी अर्थ मे कृत्यमूलक समूह नही होता तथा जिसका हर परिस्थिति म इतना अधिक सामाजिक महत्व होता है कि उसे एक पृथक नाम दिया जाना उचित होगा। मैं राजनीतिक सत्ता अथवा प्रभाव का प्रयोग करने वाल तथा राजनीतिक नेतृत्व के संघर्ष म प्रत्यक्षत भाग लेने वाले समूहा के लिए मोस्का के अनुसार 'राजनीतिक वग शब्द का प्रयोग करूगा तथा इस राजनीतिक वर्ग के भीतर उस छोटे से समूह को राजनीतिक अभिजन कहूगा जो किसी निश्चित समय पर किसी समाज म राजनीतिक सत्ता का वास्तव मे प्रयोग करते है। अत राजनीतिक अभिजन की सीमाओ का निर्धारण अपेक्षाकृत आसान होता है उसम सरकार के सदस्य प्रकाशन के उच्च अधिकारी सनिक अधिकारी, तथा कुछ मामलो म राजनीतिक दृष्टि स प्रभावशाली कुलीन वर्गीय परिवार अथवा शाही खानदान, या शक्तिशाली आर्थिक उद्यमो के नेता शामिल रहते ह। राजनीतिक वग की सीमाओ का निर्धारण इतना आसान नही होगा। उसम निश्चय ही राजनीतिक अभिजन का समावेश होगा लेकिन उसम 'प्रति-अभिजन अथवा उन राजनीतिक दलो के नेताओ का समावेश भी हो सकता है जो सत्ता मे बाहर होते है। इनके अतिरिक्त राजनीतिक वग म नए सामाजिक हिता अथवा वर्गों (जसे श्रमसघीय नेताओ) तथा राजनीति म सक्रिय रूप से भाग लेन वाले व्यापारिक समूहा और बुद्धिजीविया के प्रतिनिधिया की भी गणना होती है। अत यह कहा जा सकता है कि राजनीतिक वग के भीतर अनक समूह होते है जो आपस मे भिन्न भिन्न मात्रा म सहयोग, प्रतिस्पर्धा अथवा मुठभेड करते है।

मोस्का और परेतो ने राजनीतिक अभिजन का प्रत्यय नए सामाजिक विज्ञान मे एक मूल पारिभाषिक शब्द के रूप म प्रस्तुत किया[20] लेकिन उसका एक और पक्ष भी है जो उनकी रचनाओ म साफ उभरकर नही आ पाया — वह उस राजनीतिक सिद्धात का अग है जो आधुनिक लोकतत्र तथा उससे भी अधिक आधुनिक समाजवाद की धारणाओ के विरुद्ध है तथा उनकी आलोचना करता है।[21] सी० जे० फ्रीडरिख ने इस तथ्य की ओर ध्यान दिलाया है कि उन्नीसवीं शताब्दी म यूरोप के भीतर श्रेष्ठतर व्यक्तियो के अभिजन (वग) के शासन के सिद्धाता का उदय उस समाज म स हुआ था जिसम अनेक सामती अवशेष मौजूद थ', तथा य सिद्धात वास्तव म सामाजिक सोपान के प्राचीन विचारो को पुनर्जीवित करन और लोकतत्रीय धारणाओ के प्रसार म बाधाए डालने क

विभिन्न प्रयास मात्र थे।[22] इस प्रकार के सिद्धांतो के सामाजिक पर्यावरण का वर्णन जी० लुकास्म ने बहुत बारीकी के साथ किया है। उसका मत है कि राजनीतिक नेतृत्व की समस्या समाजशास्त्रियों ने ठीक उन्ही देशो मे उठाई जो यथार्थ बुर्जुआ लोकतंत्र की स्थापना करने मे विफल रह गए थे (अर्थात जिनमे सामती तत्व विशेष तौर पर सशक्त थे), और वह मेक्स वबर की 'करिश्मा' (चमत्कार) सबधी धारणा (जर्मनी मे) और परतो की अभिजन धारणा (इटली मे) को इस प्रकार के प्रयास की एक समान और विलक्षण अभिव्यक्ति मानता है।[23]

अभिजनो और लोकतंत्र के विचारो के विरोध को दो प्रकार से अभिव्यक्त किया जा सकता है 1 अभिजन सिद्धातो मे व्यक्तिगत क्षमताओं की विषमताओ पर जो बल दिया जाता है वह लोकतत्रीय राजनीतिक चिंतन की इस मूल धारणा के विपरीत है कि व्यक्तियो मे मौलिक समानता होती है, और 2 अल्पसख्यक शासक वर्ग की कल्पना बहुसख्या के शासन की लोकतत्रीय धारणा का खडन करती है। लेकिन यह अनिवार्य नही है कि यह विरोध हर स्थिति मे उतना ही कठोर और हद दर्जे का हो जितना कि वह ऊपर से दिखाई देता है। यदि लोकतत्र को बुनियादी तौर पर एक राजनीतिक व्यवस्था मान लिया जाए तो यह कहा जा सकता है कि 'जनता द्वारा शासन' (अर्थात बहुसख्या द्वारा प्रभावशाली रीति से शासन का सचालन) व्यवहार मे असभव है तथा राजनीतिक लोकतत्र का बुनियादी महत्व इस बात मे निहित है कि सैद्धातिक दृष्टि से सत्ता के पद सबके लिए खुले हैं, सत्ता के लिए होड होती है तथा सत्ताधारी एक निश्चित समय पर निर्वाचको के प्रति उत्तरदायी होते है। शुपीटर ने लोकतत्र की यही कल्पना प्रस्तुत की थी जिसे व्यापक तौर पर स्वीकार किया गया। उसने लोकतत्रीय पद्धति की परिभाषा करते हुए कहा था कि वह 'राजनीतिक निर्णयो पर पहुचने की ऐसी संस्थात्मक व्यवस्था है जिसमे जनता के वोट (मत) के लिए प्रतिस्पर्धात्मक सघर्ष के द्वारा व्यक्तियो को निर्णय करने की सत्ता प्राप्त हो जाती है।[24] इसी प्रकार कार्ल मानहाइम ने भी अभिजन धारणा को लोकतत्र के साथ सुसगत मान लिया हालाकि शुरू मे उसने उन्हे प्रत्यक्ष कार्यवाही तथा नेता के प्रति बिना शर्त आधीनता[25] के भाव को सही सिद्ध करने के अविवेकपूर्ण प्रयास बताया था। उसने कहा नीति का वास्तविक निर्धारण अभिजनो के हाथो मे है लेकिन इसका यह अर्थ नही है कि समाज लोकतत्रीय नही है। लोकतत्र के लिए इतना पर्याप्त होता है कि यद्यपि व्यक्तिगत तौर पर नागरिको को हर समय सरकार मे प्रत्यक्ष रूप से भाग लेने का अवसर नही मिलता तथापि कम से कम इस बात की सभावना बनी रहती है कि वे निश्चित अवधियो

वे बाद अपनी आकाक्षाओ पर बल दे सकें।'[26]

इसके अतिरिक्त यह बात भी समान रूप से बल देकर कही जा सकती है कि यदि लोकतत्र को महज राजनीतिक व्यवस्था से कुछ अधिक माना जाए तो भी अभिजन सिद्धातो की उसके साथ सगति बठती है क्योकि लोकतत्रीय समाज म हम जिस समानता की कल्पना करते हैं वह वस्तुत अवसरो की समानता ही होती है। उस स्थिति म लोकतत्र को एक ऐसी व्यवस्था माना जा सकता है जिसम राजनीतिक आर्थिक और सास्कृतिक अभिजन सिद्धातत खुले हो तथा उनम समाज के विभिन्न स्तरो से व्यक्तिगत योग्यता के आधार पर भरती की व्यवस्था हो। लोकतत्र म अभिजनो के अस्तित्व की यह धारणा वस्तुत अभिजनो के परिसचार के सिद्धान्त का परिणाम है जिसका मोस्का की रचनाओ म स्पष्ट तौर पर उल्लेख मिलता है।

यहा हमने राजनीतिक प्रतिस्पर्धा और अवसर की समानता की जिन दो धारणाओ का जिक्र किया है उन्ह उदारवादी अथवा 'अहस्तक्षेपवादी' अर्थशास्त्र का उपप्रमेय माना जा सकता है। शुपीटर को इस बात की पूर्ण चेतना थी। वह कहता है 'यह धारणा (राजनीतिक नेतृत्व के लिए प्रतिस्पर्धा की धारणा) वैसी ही कठिनाइया पेश करती है जसी कि आर्थिक क्षेत्र मे होड से उत्पन्न होती है अत उन दोनो की तुलना उपयोगी रहेगी।[27] एक और अधिक अर्वाचीन लेखक ने इस सबध को और भी अधिक शक्तिशाली भाषा म व्यक्त किया है अभिजनो का सिद्धात अनिवार्यत सामाजिक अहस्तक्षेपवाद का परिशुद्ध रूप मात्र है। शिक्षा के क्षेत्र म अवसरो की समानता का सिद्धात आर्थिक व्यक्तिवाद के सिद्धात की परछाई मात्र है, उसका बल होड और 'सफलता प्राप्त करने' पर है।'[28] अत एक दृष्टि से परेतो और मोस्का के अभिजन सिद्धात लोकतत्र की सामान्य धारणा के विपरीत नही थे न उनके बाद के विचारको के अभिजन सिद्धात ही उसके विरुद्ध है। उनका बुनियादी और प्रमुख विरोध वास्तव मे समाजवाद और विशेषत मार्क्सवादी समाजवाद के प्रति था। मोस्का ने लिखा जिस जगत म हम जी रहे है उसम समाजवाद की प्रगति को तभी रोका जा सकता है जब कि एक यथार्थवादी राजनीति विज्ञान सामाजिक अध्ययनो म इस समय प्रचलित तत्वज्ञानमूलक और आदर्शवादी पद्धतियो को मिटाने म सफलता प्राप्त करे। ' परेतो वेबर मिचेल्स और अन्य विचारको ने जिस यथार्थवादी राजनीति विज्ञान' के निर्माण मे योग दिया उसका सर्वोपरि प्रयोजन दो बुनियादी मुद्दो पर मार्क्स के सामाजिक वर्ग सिद्धात का खडन करना था पहला मुद्दा अभिजनो के निरतर परिसचार का प्रदर्शन करके यह सिद्ध करना था

कि मार्क्स की 'शासक वग' सबधी धारणा गलत है, क्योकि इस परिसचार के कारण अधिकाश समाजा म, और विशेषत आधुनिक औद्योगिक समाजा मे एक स्थाई और 'वद' शासक वग का निर्माण नही हो पाता, तथा दूसरा मुद्दा यह सिद्ध करने से सबधित था कि वगहीन समाज की स्थापना असभव है, क्योकि प्रत्येक समाज मे एक ऐसा अल्पसख्यक वग होता है तथा उसका अस्तित्व अनिवाय है, जो शासन करता है। मीजेल ने बहुत ही सटीक रीति से कहा है कि, 'अभिजन मूलत एक मध्यवर्गीय धारणा थी (मार्क्सवादी चिंतन म) सवहारा वग वह अतिम वग होगा जो वगहीन समाज का निर्माण करेगा। लेकिन ऐसा नही है। इसके विपरीत सभी समाजो का इतिहास, चाहे वे अतीत के हा या वतमान काल के, उनके शासक वर्गो का इतिहास है। शासक वग हमेशा रहेगा, अत शोषण भी हमेशा रहगा। यह अभिजनवादी सिद्धात का समाजवाद विरोधी, मार्क्सवाद विरोधी स्वरूप है जो उन्नीसवी शताब्दी के अतिम दशक मे उभरा।'[29] अभिजनवादी सिद्धात समाजवादी सिद्धातो का अत्यत सामान्य रीति से विरोध करते हैं वे आर्थिक अथवा सैनिक शक्ति के बल पर शासन करने वाले अभिजन के स्थान पर श्रेष्ठतर गुणा वाले शासक-अभिजन की स्थापना करते है। कोलाब्रिस्का ने लिखा है कि 'अभिजन शब्द से श्रेष्ठता की मूल ध्वनि निकलती है।'[30]

अभिजन सिद्धाता म निहित आदश मूलक तत्वो के बारे मे इस चिंतन के परिणामस्वरूप कुछ अन्य प्रश्न उभरकर आते हैं। मेरा मत है कि लोकतत्रीय सामाजिक सिद्धातो के साथ अभिजन धारणा की सगति स्थापित करना सभव है, फिर भी अभिजन सिद्धातो के आदि प्रतिपादक असदिग्ध रूप म लोकतत्र के विरुद्ध थे। यह विरोध कार्लाइल और नीत्शे सरीखे उन लोगो के चिंतन मे और भी अधिक प्रखर हो उठा जिन्होने राजनीति के वैज्ञानिक सिद्धाता के बजाय सामाजिक मिथको का निरूपण किया। मोस्का के विचार इटली मे फासीवादी शासन के अनुभव के बाद बदल गए थे तथा वह लोकतत्रीय शासनपद्धति के कुछ पक्षा का सजग समथक बन गया था। लोकतत्र के प्रति विरोध की इस भावना का स्पष्टीकरण कैसे दिया जा सकता है? पहली बात तो यह कि उन्नीसवी शताब्दी के इन विचारको ने लोकतत्र को अलग तरह से देखा था। वे उस 'जनसाधारण का विप्लव और समाजवाद की दिशा म पहला अनिवाय कदम मानते थे। अत लोकतत्र की आलोचना करते समय व परोक्षत समाजवाद से ही सघष कर रहे थे। इसके अतिरिक्त इस बात पर भी ध्यान देना चाहिए कि अभिजन धारणा के प्रतिपादको ने स्वय लोकतत्र की नई परिभाषाओ पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला है जिसके परिणामस्वरूप लोकतत्र का अभिजन धारणाओ के साथ सुसगत मान

लिया गया। शुपीटर की गणना एस ही विचारको म की जा सकती है। लोकतत्र और समाजवाद दोनो के बारे म हमारी आधुनिक धारणाओ को प्रभावित करने वाली सामाजिक चितन के क्षेत्र की इस गतिविधि का विस्तृत विश्लेपण आगे के अध्यायो म किया जाएगा।

अभिजनवादी सिद्धाता की एक अय विशेपता नियतिवाद को अर्वाचीन समाजवाद विरोधी सामाजिक सिद्धाता के भीतर शामिल कर लिया गया है। ये सिद्धात माक्सवाद के नियतिवाद का तो विरोध करत हैं लकिन स्वय एक समानरूप से कठोर नियतिवादी धारणा की स्थापना करना चाहत हैं। अभिजन शास्त्र के विद्वानो का बुनियादी तक महज यह नही है कि प्रत्येक ज्ञात समाज दो स्तरो म विभाजित है—अल्पसख्यक शासक और बहुसख्यक शासित—व उससे भी आगे जाकर यह कहते है कि प्रत्यक समाज म इस प्रकार का विभाजन अनिवाय है। यह धारणा माक्सवाद की अपेक्षा किस अथ म कम नियतिवादी है ? चाहे मनुष्य वगहीन समाज स्थापित करने के लिए विवश हो या उसकी स्थापना करना उनके लिए हमेशा असमव हो, क्या वे दोनो स्थितियो म समान रूप से पराधीन नही हैं ? यह आपत्ति उठाई जा सकती है कि ये दोनो स्थितिया समान नही है क्याकि अभिजनवादी विचारक एक प्रकार के समाज को ही असभव बता रहे हैं जबकि वे अय सभावनाओ से इकार नही करते (इस बारे म मोस्का कहता है कि सामाजिक विज्ञानो म असभव स्थिति का पूर्वचितन भविष्य म होन वाली घटनाओ के पूर्वचितन की अपेक्षा अधिक सरल है), दूसरी ओर माक्सवादी विचारक यह भविष्यवाणी कर रहे हैं कि अमुक प्रकार के समाज की स्थापना अनिवाय तौर पर होगी। लेकिन यह भी तो कहा जा सकता है कि अभिजनवादी विचारक और विशेपत परेतो, यह दावा करते हैं कि एक प्रकार का राजनीतिक समाज सावभौमिक और अनिवाय है, तथा माक्सवादी विचारक 'अभिजन और जनसाधारण के इस नियम की सावभौम वैधता को अस्वीकार कर रहे है और इस बात पर बल दे रहे हैं कि मनुष्य नए प्रकार के समाज की कल्पना और उसकी स्थापना के लिए स्वतन्त्र है। सक्षेप मे यह कहा जा सकता है कि दोनो सिद्धातो म सामाजिक नियतिवाद का तत्व मौजूद है जिसपर कमोबेश मात्रा मे भरपूर बल दिया गया है।

इस प्रश्न का उल्लेख मैं यहा अभिजनो की धारणा के विचारधारात्मक और सैद्धातिक पक्षो के बीच सबध की खोज की दृष्टि से ही कर रहा हू। यह धारणा एक ऐसे सामाजिक तथ्य के बारे मे है जो स्पष्ट दिखाई देता है, तथा वह उन सिद्धातो के बीच स्थान ग्रहण करती है जो घटनाओ—विशेपत राजनीतिक

परिवतनो के कारणो का विश्लेषण करने की चेष्टा करते हैं। इसके साथ ही सामाजिक चिंतन के अतगत इस धारणा का उदय एक ऐसे समय पर और ऐसी परिस्थितियो मे हुआ है जो उसे आर्थिक उदारवाद और समाजवाद के सघष म तत्काल विचारधारात्मक महत्व प्रदान कर देती हैं, तथा वह उन सिद्धाता म भी व्यापक रूप मे प्रवेश कर जाती है जिनके घोषित प्रयोजन विचारधारात्मक है। बाद मे अर्थात हमारे तथाकथित विचारधारोत्तर युग मे भी इस धारणा को शुद्धत वैज्ञानिक सरचना नही माना जा सकता, क्योकि प्रत्येक समाजशास्त्रीय धारणा और सिद्धात म एक विचारधारात्मक शक्ति होती है जो मनुष्यो के नित्य जीवन म उनके चिंतन और कम को प्रभावित करती है। उसम यह प्रभाव इस कारण हो सकता है कि उसके भीतर एक सामाजिक सिद्धात निहित होता है अथवा इस कारण कि वह तात्कालिक सैद्धातिक प्रभाव के निपेध के बावजूद सामाजिक जीवन के कुछ लक्षणो की ओर ध्यान आकर्षित करती है तथा उनपर बल देती है एव अन्य लक्षणो की उपेक्षा करती है जिससे लोग अपनी दशाओ और अपने सभावित भविष्य को एक दृष्टिकोण से देखने लगत हैं तथा दूसरे दृष्टिकोण के बारे मे सोच ही नही पात। किसी प्रत्ययमूलक योजना अथवा सिद्धात के विचारधारात्मक पक्ष की आलोचना का अथ महज यह नही है कि मनुष्य और समाज के एक व्यापकतर सिद्धात के साथ उसके सघष का वणन किया जाए और अन्य सामाजिक सिद्धाता के साथ उसका विरोध प्रदर्शित किया जाए वरन यह भी कि प्रत्ययो और सिद्धानो की वैज्ञानिक सीमाओ का उल्लेख किया जाए तथा यह बताया जाए कि वह प्रत्यय अथवा धारणा उन नई धारणाओ और नए सिद्धातो से किस प्रकार भिन्न है जो अधिक सही तथा समाज के क्षेत्र म होने वाली घटनाओ का वणन करने मे अधिक सक्षम हैं। आगे के अध्यायो मे मैं अधिकाशत अभिजनो सबधी विचार का ठीक ऐसा ही समीक्षात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करूगा और पुस्तक के अत म मैं उन प्रतिद्वद्वी सामाजिक सिद्धातो की चर्चा करूगा जिनकी वैज्ञानिक सिद्धाता के जरिए अपूण अभिव्यक्ति हुई है।

## पाद टिप्पणिया

1 देखिए डिक्शनेयर दे त्रवोम (1771) जिसका हवाला रजा मरेनो ने इथिक्स (4) जुलाई 1938 के अक मे पष्ठ 515 पर प्रकाशित अपने निबध दि एटी एरिस्टोटेलियनिज्म आफ गायतानो मोस्का एड इटस फट' में दिया है एडमड हुवेत के अनुसार सोलहवी शताब्दी की 'डिक्शनेयर दे लैंग्वे फ्राय टु सीजम मब्रल' म एलीट शब्द का अथ महज चायक्स (च्वायस यानी चयन) दिया गया है उसम 'फेयरे एलीट' का अथ 'चयन करना' बताया गया है एलीट शब्द के प्रारभिक इस्तमाल

तथा अभिजना की कल्पनाओ के बारे म हम पी० ड्रीरजन का पुस्तक 'एग्रीतबग्रीर एड सोशियल स्ट्रक्चर और एच०डी० लासवेल की ि कपेरेटिव स्टडी आफ एलाग्न देखें समाज पर श्रष्ठतर व्यक्तियो के समूह द्वारा शासन की कल्पना प्लेटा क चितन तथा ब्राह्मणी जातिव्यवस्था म प्रमुख रूप म उभरी है जिसके आधार पर प्राचीन भारतीय समाज का नियमन होता है अनेक धार्मिक परम्पराया न 'ईश्वर द्वारा नियुक्त (अथवा उसके सन्देशवाहक मसीहा या पगवर और अवतार) क रूप म अभिजन की कल्पना का प्रतिपादन किया है जिसन समाज सबधी विचारधाराओ पर गहरा प्रभाव छोडा है आधुनिक सामाजिक और राजनीतिक अभिजनधारणा का उदय सभवत सेंट साइमन द्वारा प्रतिपादित इस सिद्धांत म से हुआ है कि समाज पर विज्ञानियो और उद्योगपतियो का शासन होना चाहिए किंतु सेंट साइमन की रचनाओ म यह कल्पना अनेक प्रकार से परिसीमित कर दी गई है साइमन ने वगभेदा को मान्यता दी है तथा यह स्वीकार किया है कि अमीर और गरीब के बीच विरोध है उनकी इस धारणा क आधार पर ही उनक शिष्यो ने उनके चिंतन को समाजवाद की दिशा म विकसित किया सेंट साइमन क चितन के अभिजनवादी और अधिकारवादी तत्वो न बोनाल्ड के विचारो के साथ सयुक्त होकर आगस्त काम्त के प्रत्यक्षवादी दशन म पुन प्रमुखता प्राप्त की और इस प्रकार उसने आधुनिक अभिजनवादी विचारधाराओ के रचनाकारो—मोस्का और परेतो क चितन पर प्रत्यक्ष प्रभाव डाला (पाद टिप्पणियो म जिन ग्रथो का सदभ दिया गया है वे इस पुस्तक क अत म दी गई सदभ सूची में शामिल हैं)

2 वी० परेतो दि माइंड ऐंड सोसायटी III पृ० 1422 23

3 वही पृ० 1423 24

4 लुसान 1896-97

5 प्रथम सस्करण पेरिस 1902 और द्वितीय सस्करण 1926

6 वही पृ० 28

7 गायतानो मोस्का दि रूलिंग क्लास आथर लिविंगस्टन द्वारा सपादित यह अगरेजी सस्करण मोस्का के ग्रथ 'एलिमती दि साइजा पालितीका' क दो पथक सस्करणो (प्रथम सस्करण 1896 तथा द्वितीय और परिवर्धित सस्करण 1923) से किया गया सकलन है जिसम अध्यायो को नया क्रम दिया गया है मोस्का की कृतियो के बारे म एक श्रष्ठ आधुनिक अध्ययन दि मिथ आफ दी रूलिंग क्लास लेखक ज एच मीजल से यह बात स्पष्ट होती है कि मोस्का ने अपने चिंतन के प्रमुख तत्वा का निरूपण अपनी प्रथम पुस्तक सुल्ला ते आरिकाल दीर्ि गवर्नी ए सुन गवर्नो पार्लमितेयर स्तदी स्तोरिची ए सोसियाली (त्यूरिम 1884) मे किया था तथा उससे यह जाहिर होता है कि उसकी बाद की रचनाओ मे इस धारणा का किस प्रकार विस्तृत विवेचन और परिसीमन हुआ मीजेल न उपयुक्त पुस्तक के आठवे अध्याय म मोस्का और परेतो के सबध का बहुत निष्पक्षतापूर्वक विवेचन किया है तथा यह बताया है कि परेतो पर मोस्का द्वारा लगाया गया यह आरोप सिद्ध नहीं होता कि उसने मोस्का के विचारो की चोरी की है इसके बावजूद मीजल न माना है कि शासकीय अभिजन के बारे म परेतो न अपनी परवर्ती रचनाओ मे जो उल्लेख किया है उसपर मोस्का का प्रभाव है

8 गायतानो मास्का द रूलिंग क्लास पृ० 50
9 वही पृ० 53
10 वी० परेतो, दि माइंड सोसायटी, III पृ० 1429-30
11 मारी कोलाबिस्का ला मरकुलेशन देस एलीत्स एन फ्रास, प० 7
12 एन्टोनियो ग्राम्स्की नोत सुल मक्यिावेली
13 एन्टोनियो ग्राम्स्की की जेल डायरी स, जिसका प्रकाशन 1932 म 'ग्लाई इतेलेक्तुलाई ए ला आरगनिज्जजियन देला कुल्तूरा' म हुआ था
14 सिवाय इसक कि लोकतन्त्रीय सवर्गो के प्रभाव के कारण शासकीय अभिजन का शासन हिचकिचाहटपूर्ण (अनिश्चयग्रस्त) और अक्षम हो सकता है यहा परेतो के विज्ञान सबधी और राजनीतिक विचारा म सघर्ष है यह सघर्ष परेतो के चिंतन म बहुधा दृष्टिगोचर होता है लोकतन्त्रीय व्यवस्था म भी शासकीय अभिजन का अस्तित्व अपरिहार्य होता है इसके बावजूद परेतो लोकतन्त्र की इस तरह निंदा करता है मानो लोकतन्त्र शासकीय अभिजन क अस्तित्व क लिए सचमुच एक वास्तविक खतरा हो
15 मोजल पूर्व उल्लिखित प० 303 मार्क्स के वर्गों की तरह मोस्का क सामाजिक तत्वों म भी विकासशील सभ्यता के भीतर होने वाले सभी आर्थिक सामाजिक और सास्कृतिक परिवर्तन निकटता स प्रतिबिंबित होते हैं प्रत्येक नई आवश्यकता मे से नए सामाजिक तत्व उभरते हैं जो चुनौती का सामना करते हैं और पुराने स्थापित हितो की सत्ता म अपना हिस्सा मागते हैं
16 लासवेल एच० डी० लासवेल डी० लनर और सी० ई० रायवेल की पुस्तक दि कपरेटिव स्टडी आफ एलाटस म
17 रेमड एरन ब्रिटिश जनल आफ सोशियालाजी III 1950 म प्रकाशित सोशल स्ट्रक्चर ऐंड रूलिंग क्लास खड I वर्ग समाजशास्त्र और अभिजन समाजशास्त्र के बीच सामजस्य स्थापित करन की समस्या को एक प्रश्न म सीमित किया जा सकता है आधुनिक समाजा म सामाजिक विभेदीकरण और राजनीतिक सोपान म क्या सबध है ?
18 एरन की पुस्तक दि ओपियम आफ दि इटलेक्चअल्स (लदन 1957)
19 यह सुझाव भी रेमड एरन न यूरोपियन जनल आफ सोशियालाजी (2), 1960 म प्रकाशित अपने लेख 'क्लास सोशियाल, क्लास पालीतीक क्लास दिरिजियात' में पेश किया है और इस सुझाव को एक सीमा तक स्वीकार करता हू
20 दोनो लेखको न अपने अध्ययनो के विचारों और धनात्मिक चरित्र पर बल दिया है तथा इस विषय म उनके गुणो की सराहनापूर्ण विवेचना जम्स बर्नहम की पुस्तक दि मक्यिावेलियस म हुई है
21 राबर्ट मिचेल की पुस्तक पोलिटिकल पार्टीज म प्रमुख रूप से समाजवादी विचारधाराओ और आदोलनो की टीका की गई है इस बारे म आगे चर्चा की जाएगी
22 चार्ल्स जे० फ्रीडरिख दि न्यू इमेज आफ दि कामन मन
23 जी० लुकाक्स डाई जेरस्तारुग डेर वनुफ्त
24 जे ए० शुम्पीटर कपिटलिज्म सोशलिज्म ऐंड डिमाक्रेसी
25 कार्ल मानहाइम आइडियालाजी ऐंड यूटोपिया (1929 अग्रेजी अनुवाद1936) पृ० 119
26. कार्ल मानहाइम एस्सेज आन सोशियालाजी आफ कल्चर.

27 ज० ए० शुंपीटर पूव उ० पृ० 271
28 रेमड विलियम्स कल्चर ऐंड सामायटी (पेंगुइन बुक्स सस्करण), पृ० 236
29 ज० एच० मीजल पूव उ० पृ० 10
20 एम० कोलाविस्का पूव उ० पृ० 5 एम० एफ० नादेल न भी अपन निबध दि कासेप्ट आफ सोशल एलीटस (इटरनेशनल सोशल सायस बुलेटिन 8 3 1956 म प्रकाशित) म इस बात पर बल दिया है कि किसी भी अभिजन का पहचान कराने वाला प्रमुख लक्षण 'सामाजिक श्रेष्ठता' है वह इस धारणा म निहित सद्धान्तिक तत्व की ओर ध्यान नही देता

शासक वर्ग से सत्ता-अभिजन की ओर

□□

मास्का और परतो के मन म राजनीति के एक नए विनान की सृष्टि करन की चिंता समाजवाद के प्रति और विशेषत मार्क्स के उम समाजवादी चिंतन के प्रति विरोध की भावना के कारण उत्पन्न हुई थी जिसन विकासशील श्रम आदोलन को असाधारण बौद्धिक शक्ति और आत्मविश्वास की भावना प्रदान कर दी थी। जेम्स बनहम ने उन दोना को मैकियावेलियम (मैकियावलीवादी) कहा है।[1] यहा प्रश्न यह उठता ह कि क्या उनका नया विनान सामाजिक वर्गो और वर्गीय सघष के बारे म मार्क्सवादी दशन की अपेक्षा श्रेष्ठतर है ?

मार्क्सवादी चिंतन के मूलसूत्रा का उल्लेख इस प्रकार किया जा सकता है
1 आदिम समाजा को छोडकर अन्य समाजा म दो प्रकार के लोगो म भेद किया जा सकता है (क) शासक वग, तथा (ख) एक या अधिक शासित वग।

2 *शासक वग की प्रभुत्वपूण स्थिति की व्याख्या आर्थिक उत्पादन के प्रमुख* उपकरणो पर उसके स्वामित्व के आधार पर की जा सकती है लकिन उसका राजनीतिक प्रभुत्व सनिक शक्ति और विचारा के सृजन पर उसके नियत्रण के कारण घनीभूत होता है।

3 शासक वग तथा शासित वग अथवा वर्गो के बीच सतत सघप बना रहता है तथा इस सघप की प्रकृति और उसकी प्रक्रिया पर उत्पादक शक्तियो के विकास अर्थात प्रौद्योगिकी के क्षेत्र मे होने वाले परिवतना का गहरा प्रभाव पडता है।

4 आधुनिक पूजीवादी समाजो म इस सघष के लक्षण बहुत उग्र रूप ले लेते हैं क्योकि इस प्रकार के समाजा म आर्थिक हिता का विरोध बहुत साफ तौर पर उभर आता है, तथा वह सामती समाज की भाति व्यक्तिगत आस्थाआ के कारण धूमिल नही हो पाता और पूजीवाद के विकास के कारण वर्गों का ध्रुवीकरण अय प्रकार के समाजा की अपेक्षा अधिक उग्रतापूवक होने लगता है क्योकि उससे समाज के एक सिर पर सपदा का सग्रह हो जाता है और दूसर पर दरिद्रता का तथा मध्यवर्ती और सक्रमणकालीन सामाजिक स्तर अथवा वग का धीरे धीरे अत हो जाता है।

5 पूजीवादी समाज के भीतर वगसघष का समाहार श्रमिक वग की विजय के रूप मे होगा, तथा इस विजय के उपरात एक वर्गहीन समाज की सरचना होगी। वगहीन समाज के उदय की आशा के पक्ष म अनेक कारण दिए जाते हैं। पहला आधुनिक पूजीवाद मे एक समजित श्रमिक वग के निर्माण की प्रवति होती है, जिसम से भविष्य म नए सामाजिक वर्गों के उदय की सभावना नही होती। दूसरा, स्वय श्रमिका का क्रातिकारी सघष सहयोग और बधुत्व की भावना उत्पन्न करता है, और इस भावना का क्रातिकारी आदोलन मे से उत्पन्न होने वाले नतिक और सामाजिक सिद्धातो से बल मिलता है। मार्क्स के अपन चितन मे भी इन सिद्धातो का समावेश हुआ है। तीसरा, पूजीवाद वगहीन समाज के निर्माण के लिए भौतिक और सास्कृतिक पूवदशाओ का निर्माण कर देता है—भौतिक दशाए उसकी अत्यधिक उत्पादनक्षमता के कारण उत्पन्न होती है इस उत्पादनशीलता के कारण सभी मनुष्या की बुनियादी आवश्यकताओ की पूर्ति सभव हो जाती है, भौतिक अस्तित्व के सघष का तीखापन नष्ट हो जाता है तथा सास्कृतिक दशाए देहाती जिंदगी की जडता समाप्त होने साक्षरता के प्रचार वैज्ञानिक जानकारी के प्रसार और आम जनता द्वारा राजनीति मे भाग लेने के कारण निर्मित हो जाती है।

मार्क्स के जमाने तक सामाजिक विज्ञाना म जिन शास्त्रीय विचारा का प्रतिपादन किया गया था उनमे मार्क्स का शास्त्रीय चितन सबसे अधिक व्यापक और व्यवस्थित था और पीछे मुड कर देखे तो मार्क्स के चितन न पिछले सौ वर्षों म सामाजिक चितन पर जिस प्रकार प्रभुत्व जमाए रखा है और श्रम आदोलन की वद्धि पर जितना महान प्रभाव डाला है वह तनिक भी आश्चयजनक प्रतीत नही होता। दूसरी ओर यह देखकर भी अचरज नही होता कि उसके निष्कर्षों की स्पष्टता और उनके व्यापक क्षेत्र तथा उनपर आधारित होने का दावा करने वाले क्रातिकारी सिद्धात का इतनी अधिक मात्रा मे आलोचनात्मक खडन किया गया।

मार्क्सवाद की आलोचनाए विविध आधारो पर हुइ हैं। एक स्तर पर इतिहास की आर्थिक व्याख्या को एक-कारणीय धारणा बताकर उसपर बहुत सरसरे ढग से आक्रमण किया गया है, और यह कहा गया है कि ऐतिहासिक परिवतनो की बहुविधता के प्रति यह धारणा सभवत न्याय नही कर सकती। मोस्का और परतो, दोनो न इसी तरह के तक दिए है, लेकिन अपने तर्कों के दौरान उन्होंने माक्स के सिद्धात का क्षेत्र इतना अधिक व्यापक कर लिया है कि उसे उचित नही ठहराया जा सकता। माक्स न यह नही कहा कि सभी सामाजिक और सास्कृतिक परिवतना की व्याख्या आर्थिक कारणा के द्वारा की जा सकती है। उसन यह बात सिद्ध करने की चेष्टा की कि विशेषत यूरोप की सभ्यता के भीतर आने वाले समाजो म खास खास तरह के समाजा मे उनकी आर्थिक व्यवस्थाआ के आधार पर भेद किया जा सकता है तथा विभिन्न प्रकार के समाजा म होने वाले प्रमुख सामाजिक परिवतना की व्याख्या आर्थिक गतिविधि के क्षेत्र म होनेवाले उन परिवतना के आधार पर की जा सकती है, जिनके कारण नए हिता वाले नए सामाजिक समूहा का जन्म हुआ है। यदि यह सिद्ध किया जा सके कि माक्स ने समाज के जिन प्रमुख प्रकारो का उल्लेख किया है उनमे से एक अथवा अनेक का उदय अस्तित्व अथवा पराभव उन कारका पर निभर रहा है जिन्ह किसी भी तरह आर्थिक कारक नही माना जा सकता तो यह मार्क्सवादी चिंतन की एक गभीर आलाचना हागी। शुपीटर न यूरोपीय सामतवाद के उदय का व्याख्या आर्थिककारका क आधार पर करने की कठिनाइयो, तथा परिवर्तित आर्थिक परिस्थितियो म अपना स्वरूप यथावत बनाए रखने की सामाजिक सस्थाआ की प्रवृत्ति की ओर ध्यान दिलाकर इसी प्रकार की आलाचना करने का प्रयास किया है। वह कहता है 'सामाजिक सरचनाए, प्रकार और प्रवृत्तिया उन सिक्का की तरह हैं जो आसानी स नही पिघलते। एक बार बन जाने के बाद वे बने रहने की कोशिश करते हैं, और सभवत शताब्दिया तक बने रहते हैं, और क्याकि विभिन्न सरचनाआ और प्रकारा म अपना अस्तित्व बनाए रखने की यह सामथ्य विभिन्न मात्राआ म होती है अत वास्तविक सामूहिक अथवा राष्ट्रीय व्यवहार उत्पादन प्रक्रिया के प्रमुख तत्वा के आधार पर अपेक्षित रूप से निर्धारित होने की अपक्षा कमोवेश मात्रा म भिन्न अथवा अलग हाना है। हालाकि यह नियम बिल्कुल सामान्य तौर पर लागू हाता है तथापि वह उस समय बहुत साफ तौर पर दिखाई देन लगता है जब एक अत्यधिक स्थायित्व क्षमता वाली सरचना ज्या की त्या एक देश स दूसर देश म ले जाई जाती है। उससे सबधित एक प्रकरण काफी महत्वपूण है। छठी और सातवी शताब्दिया

म फ्रैंक राजाओ के शासनकाल म जमीदारी की सामती प्रथा के उदय को ही लें। वह निश्चय ही एक अत्यत महत्वपूर्ण घटना थी जिसन युगो तक सामाजिक सरचना को आकार प्रदान किया और उत्पादन की दशाओ को भी प्रभावित किया जिनम आवश्यकताए और प्रौद्यागिकी भी शामिल हैं। लेकिन उसकी सरलतम व्याख्या सैनिक नेतृत्व के कृत्यो म मिलती ह। यह नेतृत्व इससे पहले उन परिवारो और व्यक्तियो के हाथो म रहता था जो (उस कृत्य को बनाए रखकर) नए क्षेत्रो की निश्चित विजय के पश्चात सामती जमीदार बन गए थे।[2] यूरोप और अन्य प्रदेशो म सामती समाजो के उदय का स्पष्टीकरण सचमुच मार्क्सवादी चिंतन के लिए एक कठिन समस्या है। यद्यपि इन समाजो का उदय सैनिक-सरदार प्रथा तथा स्थिर कृषिप्रधान समाज के भीतर बड़े पैमाने पर भूमि के स्वामित्व के सयोग का तात्कालिक परिणाम था, जिसके कारण उन समाजो को इतिहास की आर्थिक व्याख्या के दायरे से एकद म बाहर नही रखा जा सकता तथापि व मूलत राजनीति की उपज प्रतीत होत हैं जो केंद्रीभूत साम्राज्यो के विघटन के प्रति होन वाली अनुक्रिया से सभव हुई थी।

*मार्क्स ने आधुनिक पूजीवाद के उदय की विस्तार के साथ आर्थिक व्याख्या की।* व समझते थे कि इससे समाज के एक प्रकार से दूसर प्रकार म रूपातरण की प्रक्रिया अथवा सामाजिक रूपातरण के सिद्धात की पुष्टि होती है। इस मार्क्स का इतिहास की आर्थिक व्याख्या का सिद्धात कहा जाता है। यदि इस सिद्धात के बारे म ही सदेह प्रकट किया जाने लगे तो यह मार्क्स के चिंतन के लिए घातक आलोचना होगी। इस प्रकार की आलोचना का सर्वोत्तम उदाहरण मैक्स वेबर की पुस्तक द प्रोटेस्टेंट इथिक ऐंड दि स्पिरिट आफ कैपीटलिज्म (प्रोटेस्टेंट नीतिशास्त्र और पूजीवाद की आत्मा) मे मिलता है। इसम वेबर न यह सिद्ध करन की कोशिश की है कि आधुनिक पूजीवाद के विकास के लिए मार्क्स द्वारा निरूपित आर्थिक परिवर्तनो और नए वर्ग के उदय के अतिरिक्त श्रम और सपदा के सग्रह के प्रति मनुष्य के दृष्टिकोण म प्रोटेस्टेंट ईसाई धर्म द्वारा किया गया बुनियादी परिवर्तन भी जिम्मेदार है। वेबर ने अपन तर्कों म अनक सीमाओ का समावेश किया है, जिनम यह तथ्य भी शामिल है कि प्रोटेस्टेंट मत की धारणाओ को प्रधानत उन सामाजिक समूहो ने स्वीकार किया जो पहले से ही पूजीवादी आर्थिक गतिविधि मे सलग्न थे तथापि वेबर यह मानने से इकार करता है कि सामती व्यवस्था से पूजीवाद तक होन वाला परिवर्तन एकमात्र अथवा मूलत आर्थिक कारको का परिणाम है। लेकिन क्या स्वय वेबर की मान्यता को प्रामाणिक माना जा सकता है? उनकी आलोचना अनेक आधारो

पर की गई है। उसके बारे म कहा गया है कि प्रोटस्टट नीतिशास्त्र के निरूपण तथा प्रोटैस्टेंटवाद और पूजीवादी उद्यम के पारस्परिक सबध के वृत्तात के मामले म उमम एतिहासिक विसगतिया हैं और सामा यत वह पूजीवाद के उदय की कोई स्वतत्र व्याख्या प्रस्तुत नही करती। वेबर को महज यह नही बताना था कि नए आर्थिक चिंतन के विकास म प्रोटस्टट नीतिशास्त्र एक महत्वपूण तत्व है वरन उस यह भी प्रशित करना चाहिए था कि बुजुआ (धनलिप्सु) वग के भीतर उत्पन्न होन वाला अन्य कोई भी विचार वह भूमिका अदा नही कर सकता था, और इसी कारण पूजीवाद के विकास के लिए सुधारवाद का ऐतिहासिक सयोग अपरिहाय हो गया था। हाल के वर्षो म वेबर के सिद्धाता का अधिक सयत मूल्याकन किया जान लगा है वह माक्स की अपेक्षा इस बात पर अधिक बल देता है कि सामाजिक परिवतन की गति तीव्र करने अथवा मद करने म विचारधाराओ का बहुत बडा योगदान होता है (हालाकि माक्स ने उपयोगितावाद का विश्लेषण करते हुए उस बुजुआ वग की विचारधारा बताया था)। वतमान समय मे सामाजिक परिवतन म विचारधाराओ की महत्वपूण भूमिका को समझना हमारे लिए इस कारण बहुत सुगम हो गया है क्याकि हमारे सामने एक विचारधारा के रूप म स्वय माक्सवाद का अनुभव मौजूद है जो औद्योगीकरण म भारी वेग उत्पन्न कर देता है जबकि दूसरी ओर भारत सरीख अल्पविकसित देशा म पारपरिक मा यताए उसकी गति को मद कर देती है।

माक्स की शासक वग सबधी धारणा उसके सामा य सामाजिक सिद्धात की मतयना पर आधारित है। यदि वह सिद्धात सावभौमिक दृष्टि से वैध न हो तो सनिक शक्ति अथवा आधुनिक-कालीन राजनीतिक दल की शक्ति को भी शासक वग का वसा ही स्रोत माना जा सकता है जैसा कि माक्स ने उत्पादन के साधना के स्वामित्व को माना है। तथापि यह स्वीकार करना होगा कि शासक वग के सुदृढीकरण के लिए विभिन्न प्रकार की—अर्थात आर्थिक सैनिक और राजनीतिक—शक्तियो के सकद्रण की आवश्यकता होती है तथा वस्तुत अधिकाश समाजा म इस वग का निर्माण आर्थिक शक्ति की प्राप्ति स शुरू हुआ है। लेकिन इसस शासक वग की धारणा के बारे म एक बुनियादी प्रश्न पैदा होता है। क्या अत्यत सरल और आदिम समाजा को छोडकर अन्य समाजा म शासक वग का निर्माण शक्ति के इस सकद्रण का परिणाम होता है? यहा यह बात तत्काल स्वीकार करनी होगी कि स्पष्टत शासक और शासित वर्गों म बटे हुए माक्स की कल्पना के आदश सामाजिक प्रतिरूप तथा विभिन्न प्रकार के वास्तविक समाजा म विभिन्न मात्राओ म समरूपता पाई जाती है। इसका श्रेष्ठतम उदाहरण सभवत यूरोपीय सामतवाद है जिसका मूल लक्षण योद्धा

वर्ग' (क्षत्रिय वर्ग) का शासन रहा है। उसका यह योद्धा वर्ग भूमि, सैनिक शक्ति और राजनीतिक सत्ता का स्वामी होता था तथा उसे एक सशक्त चर्च (धर्म संगठन) का वैचारिक (नैतिक) समर्थन मिलता था। लेकिन इस मामले में भी अनेक मर्यादाएं अनिवार्यतः लागू होती हैं। सामंती समाजों में राजनीतिक सत्ता का विकेंद्रीकरण था। यह विकेंद्रीकरण शासक वर्ग की सुबद्धता की धारणा के प्रतिकूल है।[3] जब यूरोप में निरंकुश राजतंत्रों की स्थापना हुई और विकेंद्रीकरण का पराभव हो गया, तब यूरोप के समाजों का शासन योद्धा सामंती वर्ग के हाथों से निकल गया। इसके बावजूद प्राचीन शासनपद्धति का सामंती वर्ग शासक वर्ग के आदर्श प्रतिरूप के काफी समीप आता है।

मार्क्स के आदर्श प्रतिरूप की कसौटी पर अनेक दृष्टियों से खरा उतरने वाला एक अन्य वर्ग प्रारंभिक पूंजीवाद का बुर्जुआ वर्ग है। एक महत्वपूर्ण सामाजिक वर्ग के रूप में बुर्जुआ वर्ग के विकास की व्याख्या आर्थिक परिवर्तनों के आधार पर की जा सकती है। आर्थिक क्षेत्र में अभ्युदय के साथ साथ उसने समाज के अन्य क्षेत्रों, जैसे राजनीति, प्रशासन, सशस्त्र सेनाओं और शिक्षा-व्यवस्था के भीतर भी शक्ति और प्रतिष्ठा की स्थिति प्राप्त कर ली। समाज के विभिन्न क्षेत्रों में सत्ता पर उसकी यह विजय एक दीर्घ और अस्पष्ट प्रक्रिया का परिणाम थी। यूरोप के विभिन्न देशों में यह प्रक्रिया अलग अलग ढंग की रही। मार्क्स का आदर्श प्रतिरूप जटिल ऐतिहासिक वास्तविकता के आधार पर तैयार किया गया था। मार्क्स ने नए वर्ग के उदय की अधिकतम हिंसक (उग्रतम) सैद्धांतिक और राजनीतिक अभिव्यक्ति अर्थात फ्रांस की राज्यक्रांति और इंग्लैंड में होने वाली औद्योगिक क्रांति के अनुभवों को अपने चिंतन का आधार बनाया। इसके बावजूद घटनाक्रम मोटे तौर पर मार्क्स की योजना को सही सिद्ध करता है। इंग्लैंड में 1832 के सुधार अधिनियम ने बुर्जुआ वर्ग को राजनीतिक सत्ता प्रदान की, और यद्यपि वह काफी लंबे समय तक संसद और मंत्रिमंडलों की सामाजिक संरचना में कोई परिवर्तन नहीं कर सका[4] तथापि उसने कानूनों का चरित्र बदल डाला। 1855 के बाद लोकसेवाओं में किए गए सुधारों ने उच्चतम प्रशासकीय पदों का मार्ग उच्चतर मध्यवर्ग के लिए प्रशस्त कर दिया।[5] इसके अतिरिक्त पब्लिक स्कूल प्रणाली के विकास ने औद्योगिक और व्यावसायिक क्षेत्रों में नए मालदार परिवारों के बच्चों को अभिजन स्तर प्राप्त करने के लिए आवश्यक प्रशिक्षण के अवसर प्रदान कर दिए। मार्क्स द्वारा दिए गए विवरण के अनुसार, इस बुर्जुआ वर्ग को राजनीतिक अर्थशास्त्रियों और उपयोगितावादी दार्शनिकों ने शक्तिशाली वैचारिक समर्थन प्रदान किया।

इस सबके बावजूद शासक वग के रूप म बुजुआ वग अनेक दृष्टिया स सामती कुलीनवग की अपेक्षा कम सुवद्ध प्रतीत होता है। उसन सैनिक राजनीतिक और आर्थिक सत्ता का एक ही समूह म केंद्रित नहीं किया तथा उसक अतगत आने वाले, अथवा माक्स के शब्दा म बुजुआवग का प्रतिनिधित्व करन वाल विभिन्न समूहा म हिता के सघप की सभावना वनी रहती है। इसक अतिरिक्त पूजीवादी समाज सामती समाज की अपेक्षा अधिक खुला और सचारशील है तथा उसके अतगत विशेषत लौकिक (धमनिरपक्ष) वौद्धिक व्यवसाया क पनपन के कारण वचारिक क्षेत्र म परस्पर विरोधी विचारधाराआ के सघप की सभावना वनी रहती है। माक्स को यह आशा थी कि दो प्रमुख वर्गो—बुजुआ वग आर औद्योगिक श्रमिक वग—का ध्रुवीकरण पूजीवाद क विकास के साथ साथ जोर पकडता जाएगा, तथा बुजुआ वग का शासन अधिक उग्र तथा दमनकारी वनता जाएगा। लेकिन विकसित पूजीवादी देशा म एसा नही हुआ। वहा सत्ता के विभिन्न क्षेत्र अधिक स्पष्टता स सामने आ गए है तथा सत्ता के अनेक और वहुविध स्रोता का निर्माण हो गया है। इस प्रकार नए मध्यवग की वद्धि तथा व्यवसाय और स्तर म पहले की अपेक्षा कहीं अधिक जटिल विभिन्नीकरण हो जान के कारण माक्सवाद के 'दो महान वर्गो के विरोध का रूप ही वदल गया है तथा राजनीतिक शासन पहले की अपेक्षा अधिक सौम्य और कम दमनकारी वन गया है। इस विकास का एक महत्वपूण कारक व्यापक वयस्क मताधिकार का लागू होना है जा सिद्धातत आर्थिक और राजनीतिक सत्ताआ के बीच पृथक्करण कर देता है। माक्स स्वय ऐसा साचत थ कि व्यापक मताधिकार की प्राप्ति एक क्रातिकारी कदम सिद्ध हागी, तथा उसस राजनीतिक सत्ता श्रमिक वग के हाथा म चली जाएगी।[6] इस प्रकार जहा सामती समाज म अथवा सपत्ति के स्वामिया तक राजनीतिक अधिकारा के सीमित होने के कारण प्रारभिक पूजीवाद क मामल म आर्थिक और राजनीतिक सत्ता के बीच पारस्परिक सवध आसानी स स्थापित किया जा सकता है वहा आधुनिक पूजीवादी लोकतत्रीय व्यवस्थाआ म इस सवध की स्थापना इतनी सरल नही होती, और एक पृथक एव स्थापित शासक वग की धारणा सदहास्पद तथा अस्पष्ट वन जाती है। माक्सवादी सिद्धातवादिया को माक्स के सामाजिक सिद्धात अक्षुण्णता बनाए रखन क लिए यह तक देना पडा है कि राजनीतिक लोकतत्रीय व्यवस्थाआ म भी वुजुआ वग सपत्ति के पराक्र प्रभाव के माध्यम से प्रभावशाली रीति स शासन करता है लेकिन यह वात कहने म जितनी आसान है इसका सिद्ध करना उतना ही कठिन है।

शासक वग के वार म माक्स की धारणा म सक्षेपत य प्रमुख कठिनाइया है।

इस धारणा का महत्व इस बात म निहित है कि इसम राजनीतिक सत्ता के स्रोतो क विश्लेषण, तथा राजनीतिक शासन म होन वाले महत्वपूर्ण परिवतनो की व्याख्या का एक कठोर प्रयास किया गया है। इस धारणा की सहायता स मार्क्स एव एस विचार का सही रूप म अभिव्यक्त करन म सफल हु गए जो लोकतत्रीय चिंतन तथा सामाजिक सिद्धातो म बार बार आता है। इस विचार का निरूपण इस प्रकार किया जा सकता है कि मानव समाजो का एक प्रमुख सरचानात्मक लक्षण यह है कि वे एक ओर शासक तथा शोषक और दूसरी ओर शासित तथा शोषित समूहो म विभक्त होत हैं।[7] इसी धारणा के आधार पर मार्क्स ने आर्थिक राजनीतिक और सास्कृतिक तथ्यो के उस ढेर का प्रभावशाली रीति स सश्लेषण करके उनक बीच के सबध सूत्रो की खोज की जो उनके जमाने तक असबद्ध पडे हुए थे तथा इस सबध के आधार पर समाज के इस विभाजन का स्पष्टीकरण सफलतापूर्वक प्रस्तुत किया, और सामाजिक सरचना म होने वाले परिवतनो के लिए वर्गों के उत्थान और पतन को जिम्मेदार ठहराया। हम पीछे यह अध्ययन कर चुके हैं कि शासक अभिजन अथवा राजनीतिक वर्ग' की धारणा का प्रतिपादन अशत यह सिद्ध करने क लिए किया गया था कि वगहीन समाज की स्थापना असभव है किंतु उसका प्रयोजन उन सैद्धातिक कठिनाइयो का निवारण भी था जिनका अध्ययन हमने यहा किया है। शासक अभिजन की धारणा विशेषत यह प्रदर्शित करने की कठिनाई को टाल देती है कि एक विशिष्ट वग अपनी आर्थिक स्थिति के कारण वस्तुत सामाजिक जीवन क प्रत्येक क्षेत्र पर प्रभुत्व स्थापित कर लेता है। परिणामत , वह जिस तथ्य का हवाला देती है उसकी व्याख्या का कोई प्रयास ही नही करती। मोस्का और परेतो के मतानुसार शासक-अभिजन म उन लोगो का समावेश होता है जो समाज के भीतर राजनीतिक सत्ता के मान्यता प्राप्त पदो पर होते है। इस प्रकार जब हम यह पूछते है कि अमुक समाज म सत्ता किसके पास है तो उसका एक ही उत्तर होता है कि सत्ता उन लोगो के पास ही है जिनके पास वह है यानी जो कतिपय निश्चित पदो पर है। इस उत्तर स प्रश्न का समाधान नही होता इससे हम यह ज्ञात नही हो पाता कि इन विशिष्ट व्यक्तियो ने सत्ता के पद किस प्रकार प्राप्त किए है। अथवा यो भी कहा जा सकता है कि यह उत्तर भ्रामक है क्योंकि यह भी सभव है कि शासन की औपचारिक व्यवस्था के अतगत जो लोग सत्ताधारी दिखाई देत है वे वस्तुत उस व्यवस्था के बाहर अन्य व्यक्तियो अथवा समूहो की सत्ता के अधीन हो। राजनीतिक परिवतनो की व्याख्या करने म भी शासक अभिजन धारणा बहुत सहायक सिद्ध नही होती। अगले अध्याय म हम परेतो के अभिजन परिसचार सिद्धात का अध्ययन करगे। यह सिद्धात जनसख्या के भीतर मनोविज्ञानिक

विशेषताओ व वितरण के बारे मे एसी धारणाओ पर आधारित है जो असख्य कठिनाइया पैदा करती हैं तथा स्वय परतो की कृतिया म जिनका परीक्षण नहा किया गया है। दूसरी ओर मोस्का ने राजनीतिक परिवतना की समस्याआ क बारे म चिंतन करते समय इस धारणा का प्रतिपादन कर डाला है कि नए अभिजना का स्रोत 'सामाजिक शक्तिया (समाज क महत्वपूण हित) हानी है तथा जैसा कि मीजेल ने कहा है इस धारणा के कारण मोस्का मावस क इतन समीप पहुच गया है जहा वह स्वय बेचनी महसूस करगा।[8]

शासक-अभिजन धारणा के सिलसिले म उठने वाली कठिनाइया का निरूपण एव हाल की कृति म बहुत स्पष्टतापूवक किया गया है। इस कृति म एक आर मावस क प्रभाव का दिग्दशन कराया गया है और दूसरी आर मास्का तथा परता क प्रभावो का। यह कृति है स्व० सी० राइट मिल्स की पुस्तक दि पावर एलीट। मिल्स न इस पुस्तक म यह बताया है कि उस शासक वग की अपक्षा शक्ति अभिजन' (पावर एलीट) शब्द क्या पसद है। वह कहता है कि शासक वग बुरी तरह बोझिल शब्द है। वग एक आर्थिक पारिभाषिक शब्द है शासन राजनीतिक शब्द। इस प्रकार 'शासक वग' शब्द म यह सिद्धात निहित है कि एक आर्थिक वग राजनीतिक दृष्टि से शासन कर रहा है। वह सिद्धात कभी सही सिद्ध हो सकता है और कभी गलत लकिन हम अपनी समस्याआ की परिभाषा क लिए जिन पारिभाषिक शब्दा का प्रयोग करत ह उनम हम उस अपक्षाकृत सरल सिद्धात को अतर्निहित नही कर सकत हम सिद्धाता का वणन विशद रूप स करना चाहते हैं तथा इसके लिए अधिक सही और एक अथ वाल पारिभाषिक शब्दा का इस्तेमाल करेंगे। शासक वग शब्द-समूह अपन सामान्य राजनीतिक अर्थों म राजनीतिक व्यवस्था और उसक अभिकताआ का पर्याप्त स्वायत्तता प्रदान नही करता तथा यह सना क बारे म मौन है। हम ऐसा मानत है कि आर्थिक नियतिवाद क इस साधारण दृष्टिकाण की विशद व्याख्या राजनीतिक नियतिवाद और सनिक नियतिवाद क आधार पर की जानी चाहिए इन तीना क्षत्रा क उच्चतर अभिकर्ता (अधिकारी) अब प्राय पर्याप्त मात्रा म स्वायत्तता का उपभाग करत हैं तथा वे बहुत कठिनाई स मतमन हो पात और अन्यन महत्वपूण निणया का कार्यान्वयन कर पात है।[9]

मिल्स न शक्ति अभिजन की परिभाषा लगभग उसी प्रकार स की है जिस प्रकार परता न शासक-अभिजन' का परिभाषित किया है। वह कहता है हम शक्ति अभिजन की परिभाषा शक्ति क साधना क सदभ म कर सकत हैं यानी

शक्ति अभिजन व लोग हैं जो आदेश देने के पदो पर आसीन है।'[10] किंतु इस परिभाषा के आधार पर किए जाने वाले विश्लेषण म अनेक असतोपजनक तत्व पाए जाते है। मिल्स सवप्रथम सयुक्त राज्य अमरीका म तीन प्रकार के अभिजनो की गणना करता है—निगमो के अध्यक्ष राजनीतिक नेता और सेनापति। वह यह जाच करने के लिए विवश है कि ये तीनो समूह एक साथ मिलकर एक शक्ति अभिजन का निर्माण करते है या नही और यदि करते हैं तो कौन सा सूत्र उन्हें एक साथ बाधे रखता है। इन प्रश्नो का एक उत्तर यह हो सकता है कि ये तीनो समूह समाज म उस उच्चतर वग का प्रतिनिधि है जिसको अतत शासक वग मानना होगा, अत ये एक अभिजन का निर्माण करते हैं। मिल्स एक ओर तो इस बात पर बल देता है कि इन अभिजनो के अधिकाश सदस्य उस वग स आते है जिन्हें समाज म उच्चतर वग के रूप म मान्यता प्राप्त हो जाती है दूसरी ओर वह शुरू म ही यह कह देता है कि वह अभिजनो के माध्यम स शासन करने वाले उच्चतर वग के अस्तित्व अथवा अनस्तित्व के बारे म कुछ नही कहेगा और जब वह इस समस्या पर वापस आता है तो वह शासक वग सबधी माक्सवादी विचार का खडन करने के लिए (जसा कि उसने पीछे दिए गए सक्षिप्त अवतरण म किया है।) सक्षेप म कहा जा सकता है कि मिल्स ने इस प्रश्न के बारे म कही भी गभीरता से चिंतन नही किया है। यह मिल्स द्वारा प्रस्तुत समीक्षा और उसके विचारो के सदभ म एक विचित्र भूल मानी जा सकती है। पीछे उसने मतदान अथवा किसी अन्य रीति से सत्ता पर लोक नियत्रण स्थापित करने के विचार का खडन किया है और अभिजन की एकता तथा उसके सामाजिक स्रोतो की समरूपता पर बल दिया है। यह सब शासक वग के सुदृढीकरण की ओर सकेत करता है। मिल्स की वास्तविक प्रस्थापना अस्पष्ट और असमाधानकारक है वह आर्थिक सैनिक और राजनीतिक शक्ति के अनुविधाजनक सयोग की व्याख्या मोटे तौर पर उन अतर्राष्ट्रीय दबावो के आधार पर करता है जो अमरीका पर पडते रहे हैं यानी मिल्स कहता है कि अतर्राष्ट्रीय चुनौतियो का सामना करने के लिए ही आर्थिक राजनीतिक और सनिक शक्तिया एकत्रित होती हैं अन्यथा उनम परस्पर होड है।

मोस्का और परेतो की आलोचनाओ म इन समस्याओ को बार बार उठाया गया है। कार्ल जे० फ्रीडरिख न कहा है कि अभिजन धारणाओ का सबसे अधिक समस्यापरक भाग यह मान्यता है कि शक्ति का प्रयोग करने वाले लोग एक सुबद्ध समूह का अग होते हैं एक कायशील लोकतत्र म विद्यमान दशाओ के अतगत बहुसख्या की सरचना म होने वाले सतत परिवतन के कारण

यह कहना सुगम नही होता कि सरकार म महत्वपूर्ण भूमिका अदा करने वाले लोग एक सुवद्ध समूह क सदस्य होते है।[11] आधुनिक लोकतत्रीय देशा म अभिजन सबधी यह धारणा व्यापक तौर पर प्रचलित है। ब्रिटिश समाज के भीतर उच्चतर स्तर के एक ताजा अध्ययन के निष्कर्षो म इसका उल्लेख प्रमुख रूप स किया गया है। उसम कहा गया है शासक तनिक भी सुसबद्ध अथवा सगठित नही है। वे सौरमडल क केंद्रवर्ती सूर्य की तरह नही हैं, वस्तुत व परस्पर गुथ हुए वृत्ता म जी रहे है उनम स प्रत्यक मुख्यत अपने व्यवसायवाद और निपुणता के क्षेत्र म व्यस्त है तथा दूसरा का केवल एक सिर पर ही छूता है। व कुल मिलाकर एक सस्थान का नही वरन् सस्थाओ की एक शृखला का निर्माण करत है तथा उनके बीच बहुत मामूली से सबध हैं। विभिन्न वत्ता के बीच होने वाले सघर्ष और एक दूसरे को सतुलित करने की उनकी वत्ति लोकतत्र की सर्वोच्च सुरक्षा व्यवस्था है। उनम से कोई भी एक व्यक्ति केंद्र म खडा नही हो सकता क्योकि वहा केंद्र है ही नही।'[12]

मिल्स इस प्रचलित उदारवादी सिद्धात को अस्वीकार करता है। उसको वह इस प्रकार परिभाषित करता है सवशक्तिमान होने के बजाय अभिजनो को इतना बिखरा हुआ मान लिया गया है कि एक ऐतिहासिक शक्ति के रूप म उनम किसी प्रकार की सुवद्धता ही नही रह गई है। औपचारिक पदो पर आसीन व्यक्तिया पर अन्य दबावकारी अभिजना निवाचका के रूप म नागरिको, अथवा सावैधानिक सहिताओ न ऐसे नियत्रण लगा दिए है जिनके कारण उच्चतर वग के अस्तित्व के बावजूद शासक वग बन ही नही पाता तथा सत्ताधारियो क स्तरीकरण की व्यवस्था के बावजूद कोई प्रभावशाली शीप पद है ही नही'।[13] वह इस बात पर बल देता है कि आर्थिक राजनीतिक और सैनिक अभिजन समाज के तीन प्रमुख शक्ति अभिजन है तथा य वस्तुत एक सुवद्ध समूह के अग है। वह अपने दृष्टिकोण के समथन म यह तक देता है कि इन तीना अभिजना का सामाजिक स्रोत एक ही है और इन विभिन्न अभिजना के सदस्या के बीच निकट व्यक्तिगत और पारिवारिक सबध होते है। इतना ही नही वह यह भी कहता है कि इन तीनो अभिजनो के बीच व्यक्तिया का आदान प्रदान निरतर और नियमित रूप से होता रहता है। लेकिन क्योकि मिल्स इस निष्कर्ष का प्रतिवाद करता है कि यह समूह शासक वग है अत वह शक्ति अभिजन के बारे म उसकी सुवद्धता के विवरण स पृथक कोई समाधानकारक स्पष्टीकरण नही दे पाता। इसके अतिरिक्त, शासक वग की धारणा को अस्वीकार कर देने के बाद वह विरोध करने वाल वर्गो के अस्तित्व से भी आख मूद लेता है, और इस तरह वह अमरीकी समाज की एक

अत्यत निराशापूर्ण तस्वीर पेश करता है। मिल्स की पुस्तक की वास्तविक विषयवस्तु म निम्नलिखित विषयो का समावेश होता है पहला, जिस समाज मे राजनीतिक निणयो के निर्धारण म अनक छोट और स्वायत्त समूहो का प्रभावशाली रीति स भाग लेन का अधिकार हो, उस समाज का एक एस जन-समाज म रूपातरित करना जिसम समस्त महत्वपूर्ण मुद्दो पर निणय की अतिम शक्ति एक शक्ति अभिजन के हाथो म हो तथा यह अभिजन आम जनता को खुशामद धोखाधडी और मनोरजन के द्वारा खामोश रखता हो, और दूसरा स्वय 'शक्ति-अभिजन' की भ्रष्टता। मिल्स कहता है कि 'शक्ति-अभिजन' अपन निणयो के लिए सगठित जनता के समक्ष उत्तरदायी न होने, और सपत्ति के सग्रह को प्रमुख मूल्य मान लेन के कारण भ्रष्ट हो जाता है। एतिहासिक परिवतनो के बार म मिल्स का स्पष्टीकरण सेनापतियो के बढते हुए राजनीतिक प्रभाव सरीखे अनक आधुनिक राजनीतिक तत्वो पर प्रकाश डालने के बावजूद इस मायन म निराशाजनक है कि वह जिस स्थिति का वणन करता है और जिसकी भत्सना भी करता है उसम स निकलन का कोई माग नही सुझाता। ऐसा प्रतीत होता है कि परतो और मास्का की तरह मिल्स भी यह कहना चाहता है कि आधुनिक समाजो पर निर्भ्रात दृष्टि डालन पर यह बात समझ म आ जाती है कि उनके सविधान चाहे जितन भी लोकतत्रीय हो वस्तुत उनका शासन एक अभिजन के हाथो मे होता है। वह लोकतत्र की इमारत पर एक घातक प्रहार करता है और कहता है कि सयुक्तराज्य अमरीका एक ऐसा समाज रहा है जिसका उदय सामती अतीत म से नही हुआ, जिसमे सामती सोपानक्रम भी नही था, और जिसके नागरिको के बीच आर्थिक और सामाजिक दशाओ के मामले म काफी मात्रा मे समानता मौजूद थी, किंतु घटनाचक्र ने उसमे भी एक ऐसा शासक अभिजन पैदा कर दिया जिसकी शक्ति इतिहास मे अनुपम है और जो किसी के प्रति जिम्मेदार नही है। मिल्स इस मामले मे अन्य मकियावेलीवादियो से भिन्न है उन्होने जिस स्थिति को सराहा, अथवा निराशा के क्षणो म स्वीकार कर लिया था मिल्स उसकी भत्सना करता है।

'शासक वग' और शासक अभिजन की धारणाओ का उपयोग राजनीतिक घटनाओ के विवरण और उनकी व्याख्याओ म किया जाता है तथा उनके मूल्य का आकलन इस आधार पर किया जाना चाहिए कि वे राजनीतिक व्यवस्थाओ के बार म उठने वाले महत्वपूर्ण प्रश्नो के तकसगत उत्तर जुटाने म किस सीमा तक सहायक सिद्ध होती है। इन प्रश्नो मे स कुछ इस प्रकार हैं क्या समाज के शासक एक सामाजिक समूह का निर्माण करत है ? वह समूह सुबद्ध अथवा विभक्त, मुक्त अथवा बद, कैसा है ? उसके सदस्यो का चयन किस

प्रकार होता है ? उनकी सत्ता का आधार क्या है ? यह सत्ता अमर्यादित है या समाज के अन्य समूहा द्वारा मर्यादित ? क्या इन मामलो म समाजा के बीच महत्वपूण और नियमित भेद पाए जाते ह और यदि हा तो उनकी व्याख्या किस प्रकार की जा सकती है ?

शासको और शासितो के बीच भेद को सामाजिक सरचना का सबसे अधिक महत्वपूण तत्व मानने के मामले म दोनो धारणाए एक सरीखी है।[14] लेकिन वे इस विभाजन की व्याख्या विभिन्न रीतिया स करती है शासक अभिजन धारणा सगठित शासक अल्पसख्या तथा असगठित बहुसख्या अथवा आम जनता के बीच भेद करती है किंतु शासक वग' की धारणा प्रभुत्वशाली वग और शासित वर्गो के बीच भेद करते समय यह मानती है कि वे दोना ही सगठित हो सकते है अथवा यह सभव है कि उनके सगठन निर्माण की अवस्था म हो। ये विभिन्न धारणाए शासका और शासिता के बीच सबधा की अलग अलग धारणाओ को जन्म देती है। मार्क्सवादी चिंतन शासक वग की धारणा का इस्तेमाल करता है अत उसम वर्गो का पारस्परिक सघष सामाजिक सरचना मे परिवतन उत्पन्न करनेवाले प्रमुख तत्व का रूप ले लेता है। यह सही है कि मार्क्स की वगसघष सबधी धारणा की परेतो ने मुक्त कठ से प्रशसा की तथा उसे पूणत सत्य[15] कहा तथापि अभिजन सिद्धाता म सगठित अल्पसख्या और असगठित बहुसख्या के पारस्परिक सबधा को अनिवायत अधिक निष्क्रिय रूप म प्रस्तुत किया गया है तथा जहा कही इस निष्क्रिय सबध के कारण उठनेवाली इस समस्या का सामना किया गया कि शासक अभिजना के उदय और पराभव की व्याख्या किस आधार पर की जाए वहा परेतो ने अभिजन म गुणात्मक ह्रास की कल्पना का आश्रय लिया और मोस्का ने जनता के भीतर नई सामाजिक शक्तिया के उदय का जिसके कारण अभिजन सिद्धात मार्क्सवाद के बहुत समीप जा पहुचता है।

इन दोना धारणाओ मे शासक अल्पसख्या की सुबद्धता की सभव व्याख्याओ की सीमा के मामले म भी अतर है। 'शासक अभिजन की परिभाषा म कहा गया है कि वह उन लोगो का समूह है जिन्ह समाज के भीतर आदेश देने (नियत्रण करने) की शक्ति प्राप्त है। इस अभिजन को आम तौर पर किसी तक के बिना ही सुबद्ध मान लिया गया है हालाकि मोस्का न लगातार, और परेतो न कभी कभी ये हवाले दिए है कि ये अभिजन धनी वग के सदस्य होते हैं अथवा वे कुलीन परिवारो स आते हैं। किंतु शासक वग को समाज म आर्थिक उत्पादन के बडे साधनो का स्वामी होने के नाते दो कारणो स एक सुबद्ध

सामाजिक समूह माना गया है—पहला तो यह कि उसके सदस्यों के कुछ समान और निश्चित हित होते हैं, तथा इससे भी अधिक महत्वपूर्ण दूसरा कारण यह कि यह वर्ग समाज के अन्य वर्गों के साथ स्थायी तौर पर संघर्ष करता रहता है जिसके कारण इसकी आत्मचेतना और घनिष्ठता में निरंतर वृद्धि होती रहती है। इसके अतिरिक्त यह धारणा इस बात का निश्चित रूप से उल्लेख करती है कि अल्पसंख्या की शासकीय स्थिति का आधार उसकी प्रभुता है। इसके विपरीत शासक अभिजन की धारणा में जिस सीमा तक मार्क्सवादी वर्ग सिद्धांत का समावेश हुआ है उसके अतिरिक्त यह अभिजन की सत्ता के आधारों की स्पष्ट व्याख्या नहीं करती। मिल्स ने 'शक्ति अभिजन' संबंधी अपने अध्ययन में तीन प्रमुख अभिजनों—व्यावसायिक निगमों के आकार और उनकी जटिलता में वृद्धि के आधार पर व्यापारिक अधिशासी अधिकारियों (एक्जीक्यूटिव्ज), प्रौद्योगिक और अंतर्राष्ट्रीय संघर्ष की अवस्था पर निर्भर युद्धसामग्री की मात्रा और खर्च की राशि में होनेवाली वृद्धि के आधार पर सेनापतियों तथा विधायिकाओं स्थानीय राजनीति और स्वच्छिक संगठनों के ह्रास के आधार पर कम सतोषजनक ढंग से राष्ट्रीय राजनीतिक नेताओं की शक्ति स्थिति की अलग अलग व्याख्या करने की चेष्टा की है, लेकिन एक समूह के रूप में शक्ति अभिजन की एकता, तथा उसकी शक्ति के आधार की व्याख्या नहीं की गई है। यह नहीं बताया गया है कि शक्ति अभिजन एक क्यों है, तीन क्यों नहीं है।

शासक वर्गों की धारणा की श्रेष्ठता उसकी महत्तर संभावनाएं तथा उसकी संकेतात्मकता और उसका मूल्य सिद्धांतों के निर्माण में निहित है। लेकिन, मैंने पीछे उसके कुछ दोषों की ओर इशारा किया है और अब यह विचार करना लाजमी है कि क्या इन दोषों को दूर किया जा सकता है ? इस दिशा में सबसे अधिक महत्वपूर्ण कदम यह होगा कि समस्त समाजों में समान तौर पर सामान्य रूप में मौजूद वास्तविक तथ्य अथवा अस्तित्व के विवरण के रूप में इस धारणा के प्रति मार्क्सवादी दृष्टिकोण का परित्याग किया जाए तथा उसे उस अर्थ में एक 'आदर्श प्रतिरूप' माना जाए जो अर्थ इस शब्द को मैक्स वेबर ने प्रदान किया है।[16] यदि हम इस धारणा को इस रूप में ग्रहण करें तब हमें यह पता चल सकता है कि किसी विशिष्ट समाज में विभिन्न वर्गों के पारस्परिक संबंध किस सीमा तक शासक वर्ग तथा शासित वर्गों के 'आदर्श प्रतिरूप' के कितना समीप आते हैं और इस तरह यह धारणा समुचित रूप से चिंतन और शोध का उपकरण बन सकती है। तब यह बात स्पष्ट रूप से समझ में आ जाएगी कि 'शासक वर्ग' की कल्पना एक विशिष्ट

ऐतिहासिक स्थिति में उत्पन्न हुई है। वह स्थिति है—सामंतवाद का अंत आधुनिक पूंजीवाद का उदय।[17] इसके साथ ही यह पता लगाना भी संभव हो जाएगा कि वर्गनिर्माण के अभाव अथवा उसकी कमजोरी, वर्गों के निर्माण में संपत्ति के स्वामित्व के अतिरिक्त अन्य कारकों के प्रभाव, तथा शक्ति के विभिन्न रूपों के बीच संघर्ष के परिणामस्वरूप इस आदर्श प्रतिरूप तथा अन्य स्थितियों में क्या भिन्नताएं उत्पन्न हो जाती हैं। विशेषतया दो प्रकार की स्थितियों में शासक वर्ग के 'आदर्श प्रतिरूप' से भिन्नता स्पष्टत दृष्टिगोचर होती है। एक स्थिति तो वह है जिसमें यद्यपि एक उच्चतर वर्ग अर्थात एक ऐसा स्पष्ट तौर पर अलग अलग सामाजिक समूह विद्यमान होता है जिसके पास समाज की संपत्ति के एक बड़े अंश का स्वामित्व होता है और जो राष्ट्रीय आय में से असमानुपातिक रूप में एक बड़ा अंश प्राप्त करता है तथा जो इन आर्थिक लाभों के आधार पर एक पृथक संस्कृति और जीवनपद्धति का निर्माण कर लेता है तथापि इस वर्ग को निर्विवाद रूप से अबाध राजनीतिक शक्ति प्राप्त नहीं होती जिसके द्वारा यह अपने संपत्ति संबंधी अधिकारों को आसानी से बनाए रख सके अथवा उन्हें पीढ़ी दर-पीढ़ी ज्यों का त्यों हस्तांतरित कर सके। अनेक पर्यवेक्षकों ने विशेषत आधुनिक लोकतंत्रीय समाजों में इस प्रकार की स्थिति का दर्शन किया है जिसमें संपत्ति और उत्पादन के साधनों पर एक छोटे से उच्चतर वर्ग के स्वामित्व तथा आम जनता द्वारा मताधिकार के प्रयोग के माध्यम से राजनीतिक सत्ता की प्राप्ति के मध्य विरोध की संभावना बनी रहती है। इस बारे में पीछे भी उल्लेख किया जा चुका है। द ताकवील ने भी एक स्थल पर ऐसा ही विचार व्यक्त किया है 'जनता का एक साथ ही पीडित तथा संप्रभु (सावरेन) होना एक परम्परविरोधी स्थिति है।

ऐसी स्थिति में एक शासक वर्ग के अस्तित्व की संभावना का पता लगाने के लिए पहले यह पता लगाना आवश्यक है कि उच्चतर वर्ग संपत्ति पर अपने स्वामित्व को बनाए रखने में कहां तक सफल रहा है। एक ओर हम इस बात पर ध्यान देना होगा कि वर्तमान शताब्दी के अंतर्गत लोकतंत्रीय देशों में व्यक्तिगत संपत्ति के उपयोग पर काफी मात्रा में नियंत्रण लगाए गए हैं तथा आरोही कराधान और सार्वजनिक स्वामित्व के अंतर्गत आनेवाली संपत्ति तथा सार्वजनिक रूप से प्रशासित सामाजिक सेवाओं के फलस्वरूप संपत्ति और आय की विषमताओं में कुछ सीमा तक कमी हुई है। दूसरी ओर हम यह बात ध्यान में रखनी होगी कि उच्चतर वर्ग के स्वामित्व के अंतर्गत आनेवाली संपत्ति सामान्य एवं बहुत धीमी घटोतरी हुई है, तथा कराधान के माध्यम से आय का

पुनर्वितरण बहुत दूरगामी सिद्ध नही हुआ है। इस मामले म जान स्ट्रैची ने ब्रिटेन की स्थिति का बहुत सावधानीपूण विश्लेपण किया है।[18] वह इस निष्कप पर पहुचा कि 1939 तक आम जनता के हक म राष्ट्रीय आय का पुनर्वितरण बहुत कम हुआ, अथवा हुआ ही नही। यद्यपि श्रमसघो के दबाव अथवा बजट द्वारा किए गए परिवतनो के फलस्वरूप मजदूरो के रहन-सहन के स्तर म सपूण राष्ट्रीय आय के अनुपात मे वद्धि हुई है तथापि राष्ट्रीय आय म उनक प्रतिशत अश म कोई वद्धि नही हुई। मोटे तौर पर राष्ट्रीय आय के वितरण का ढाचा इस प्रकार है कि 1911 की तरह ही 1939 म भी आधी राष्ट्रीय आय पर देश के कोई 10 प्रतिशत लोगो का अधिकार है और शेप 90 प्रतिशत लोगो को बाकी राष्ट्रीय आय मे हिस्सा मिलता है।'[19] उसके बाद 1951 तक वहा आय का कुछ पुनर्वितरण हुआ जिसके परिणामस्वरूप कुल राष्ट्रीय आय का लगभग दस प्रतिशत अश सपत्तिवानो के हाथो स छूटकर मजदूरो की ओर चला गया। लेकिन यह प्रवत्ति 1951 के पश्चात शायद पुन उलट गई।[20] स्ट्रैची इस निष्कप पर पहुचता है कि 'यह सब इस बात का प्रमाण है कि पूजीवाद म वस्तुत छोरगामी और नित्य वद्धिशील विपमता उत्पन्न करने की सहज प्रवत्ति होती है। अन्यथा यह कैसे सभव था कि लोकतत्रीय शक्तिया ने पिछले सौ वर्षों म समानता स्थापित करने क लिए जो भी कदम उठाए वे सब सचयी रूप म स्थिति को यथावत बनाए रखने से अधिक कुछ नही कर पाए? क्या यह बात स्पष्ट नही है कि यदि पूजीवादी व्यवस्था की कायप्रणालियो को निरन्तर सशोधित न किया जाता तो वह वर्गों के बीच उस ध्रुवीकरण की अपेक्षा कही अधिक घना ध्रुवीकरण उत्पन्न कर देती जिसका निदान माक्स ने इस व्यवस्था की अनिवाय प्रवत्ति के रूप म किया था?'[22] दूसरे प्रकार स यो कहा जा सकता है कि यह इस बात का प्रमाण है कि ब्रिटेन म उच्चतर वग अपने आर्थिक हितो पर होनेवाले आक्रमणो का प्रतिरोध करने म काफी सीमा तक सफल रहा है, तथा अपने हितो की रक्षा की शक्ति के अधिकार के अथ म उसने वतमान शताब्दी के अतगत एक शासक वग के रूप म अपना अस्तित्व बनाए रखा है। स्कडिनवियाई देशो को छोडकर अन्य लोकतत्रीय देशो की स्थिति इस मामले म ब्रिटेन की अपेक्षा बहुत भिन्न नही है उन सभी म वतमान शताब्दी के अधिकाश काल म दक्षिणपथी सरकारें सत्तारूढ रही है और यदि वहा सपत्ति का कोई पुनर्वितरण हुआ हो तो उसकी गति बहुत धीमी रही है। अत इस विचार के बारे म शका होती है कि आम जनता को मताधिकार दे देने स तत्काल लोकहितकारी शासन की स्थापना हो जाती है अथवा आधुनिक लोकतत्रीय व्यवस्थाओ के सक्षिप्त जीवनकाल म वस्तुत उसकी स्थापना हुई है, तथा शासक वग की सत्ता का निरसन (अत) हो जाता है। ऐसा प्रतीत

होता है कि अब तक लोकतत्रीय देशो म उच्चतर वग की शक्ति की अपेक्षा श्रमिक वर्गों के उग्रवाद म अधिक ह्रास हुआ है।

शासक वग—शासित वग प्रतिरूप स भिन्न स्थिति का एक दूसरा प्रकार वह है जिसम शासक समूह मार्क्स द्वारा परिभाषित वग की कोटि म नही आता। इसका एक उदाहरण वे समाज है जिसम बुद्धिजीविया अथवा नौकरशाहो का एक सस्तर सर्वोच्च शक्ति का प्रयोग करता है—साहित्यिका (लितरानी) के आधीन चीन और ब्राह्मणा के आधीन भारत ऐस ही समाज थ। एक अन्य उदाहरण आधुनिक साम्यवादी देशो म मिलता है जहा शक्ति एक राजनीतिक दल के नेताओ के हाथा म सकेद्रित है। तथापि इन प्रकरणा म हम यह बात सावधानीपूवक देखनी होगी कि शासक सस्तर किस सीमा तक शासकवग स भिन्न है। भारत म ब्राह्मण अपने चरमोत्कर्ष काल म बडे भूस्वामी भी थे तथा व भारतीय इतिहास क साम्राज्य का एव सामती युग म भूस्वामी क्षत्रियवग क साथ घनिष्ठतापूवक जुडे हुए थे। एक अवसर पर उन्होने स्वय शासक अथवा अभिजात कुला की स्थापना की तथा एसा प्रतीत होता है कि समय समय पर ब्राह्मण और क्षत्रिय वर्गों के बीच किसी सीमा तक व्यक्तिया और परिवारा का आदान प्रदान होता रहा है जिसका उल्लेख शास्त्रा म वणव्यवस्था क विवरण के अतगत नही मिलता।

चीन म साहित्यिका की भरती सामती काल म प्रमुख जमीदार परिवारा म स होती थी तथा अन्य काला म वे मुख्यत समृद्ध परिवारा स आते थे।[22] इस प्रकार व हमेशा उच्चतर वग के साथ समीप से जुड रहे। इसके अतिरिक्त बुद्धिजीविया और प्रशासका के इन समूहो के शासन का एक अन्य महत्वपूण आर्थिक पक्ष भी था जिसकी ओर काल विट्टफोगल न ध्यान दिलाया है।[23] चीन और भारत (तथा अन्य अनक प्राचीन समाजा)[24] म उत्पादन का एक प्रमुख उपकरण सिंचाई की व्यवस्था थी, तथा साहित्यिक वग और ब्राह्मण कृषि उत्पादन के लिए अनिवाय इस जलसपदा पर स्वामित्व स्थापित किए बिना ही उसके उपयोग का लगभग पूणतया अपने नियत्रण म रखते थे। परिणामत भूमि के स्वामित्व के अतिरिक्त एक अन्य महत्वपूण आर्थिक शक्ति उनके हाथो म आ गई थी। विट्टफोगल कहता है कि यह शक्ति उनक राजनीतिक प्रभुत्व का प्रमुख आधार थी।

इस श्रेणी के सामाजिक सस्तर और सपत्ति के प्रत्यक्ष वधानिक स्वामित्व क आधार पर शक्ति निर्माण करनेवाले शासक वर्गों क बीच इन सब मर्यादाओ के

बावजूद अतर बना रहता है। मक्स वेबर का मत है कि राजनीतिक मत्ता के आधार के रूप म प्रशासन के उपकरणा पर प्रभुत्व की स्थापना आर्थिक उत्पादन क साधना क स्वामित्व का विकल्प हो सकता है।[25] यह भेद वतमानकालीन साम्यवादी दशा म सभवत अधिक स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। वहा उत्पादन के साधना पर व्यक्तिगत स्वामित्व नही है किंतु अथव्यवस्था का सपूण नियत्रण सत्तारूढ दल और राज्यसरकार क अधिकारिया के हाथा म है। विट्टफोगल ने राजनीतिक शक्ति क इस रूप को बहुत ही मौलिक रीति से प्राच्य स्वेच्छाचारतत्र क सामान्य वग के भीतर शामिल करने की कोशिश की है।[26] लेकिन मरा विचार है कि यह प्रयास सफल नही हो सकता क्योकि प्राच्य स्वच्छाचारतत्र के अतगत भूमि तथा अन्य ससाधना पर व्यक्तिगत स्वामित्व और अधिकारिया तथा सपत्तिशाली वर्गो के बीच घनिष्ठ सबधो के अस्तित्व एव साम्यवादी देशा म एक राजनीतिक दल क शासन क निश्चित लक्षणो के बीच भारी अतर है।[27] मेरी दृष्टि म साम्यवादी देशा की राजनीतिक व्यवस्था शक्ति-अभिजन' के मुख्य स्वरूप अर्थात एक ऐम समूह के समीप ठहरती है जिसने जनसख्या के एक विशिष्ट वग के सक्रिय समथन अथवा उसकी मूक सहमति क द्वारा मत्ता प्राप्त की हो और वह एक असगठित बहुसख्या के मुकाबले म सगठित अल्पसख्यक होने के कारण अपने आपको सत्ता म बनाए रखता है जबकि प्राचीन भारत अथवा चीन म एक ऐसी व्यवस्था थी जिसम शासकवग और शक्ति-अभिजन दोना का सम्मिश्रण था।

शासक वग की स्थिति म एक और तत्व है जिसका उल्लेख पीछे किया जा चुका है तथा जिसके बार म यह विस्तृत जाच की जानी आवश्यक है कि जिन परिस्थितिया म ऐस वग का अस्तित्व सदहास्पद हो उन परिस्थितियो पर उसका क्या प्रभाव पडता है? शासक वग की शक्ति का उदय सपत्ति पर उसके स्वामित्व म से होता है तथा इस सपत्ति का हस्तातरण पीढी दर पीढी सुगमता स सभव है अत जाहिर है कि इस वग का अस्तित्व स्थायी किस्म का है। उसका गठन ऐस परिवारा का समूह करता है जो पारिवारिक सपत्ति के हस्तातरण द्वारा दीघकाल तक उसके अग बने रहते है। इसकी सरचना पूणतया अपरिवतनीय नही है क्योकि उसम नए परिवारा का प्रवश तथा पुरान परिवारा का ह्रास हो सकता है, किंतु उसके सदस्या का बडा भाग पीढी-दर पीढी अपरिवतनीय रहता है। जब उत्पादन और सपत्ति के स्वामित्व की समग्र व्यवस्था म तीव्र परिवतन होते हैं तभी शासक वग की सरचना म महत्वपूण परिवतन होते है और उस स्थिति म यह कहा जा सकता है कि एक शासक वग का स्थान दूसरे शासक वग न ले लिया है। किंतु यदि हम अमुक समय

तथा अमुक पकार के समाज के बारे मे यह ज्ञात हो जाए कि विभिन्न सामाजिक स्तरो के बीच व्यक्तियो और परिवारो का आवागमन इतना सतत और विस्तृत रहा है कि कोई भी परिवार-समूह आर्थिक और राजनीतिक प्रमुखता की स्थिति को लबे समय तक नही बनाए रख पाया तब हम यह कहना होगा कि इस समाज मे शासक वग है ही नही। अभिजन शास्त्रिया की भाषा मे अभिजनो क इस परिसचार (अथवा आवागमन) अथवा अर्वाचीन समाजशास्त्रीय अध्ययना की शब्दावली के अनुसार सामाजिक सचरण (सोशल मोबिलिटी) को अनेक लेखका न आधुनिक औद्योगिक समाजा का द्वितीय महत्वपूण लक्षण माना है—पहला लक्षण व्यापक मताधिकार है। अभिजन परिसचार के आधार पर भल ही यह दावा पूणतया मिथ्या सिद्ध न हो पाए कि इन समाजा मे शासक वग का अस्तित्व है तथापि वह इस दावे को बहुत सीमा तक मर्यादित कर देता है। इस प्रकार हम कुछ अन्य लेखका, विशेषत काल मानहाइम, द्वारा निकाले गए इस निष्कष पर पहुचते हैं कि औद्योगिक समाजा के विकास को एक वर्गीय व्यवस्था से अभिजन व्यवस्था की ओर अथवा सपत्ति के उत्तराधिकार पर आधारित सामाजिक पदानुक्रम से योग्यता और उपलब्धियो पर आधारित पदानुक्रम की दिशा मे अग्रसर होने की प्रक्रिया के रूप मे निरूपित किया जा सकता है।[28]

'शासक वग' और 'राजनीतिक अभिजन' धारणाआ के बीच इस मुठभेड से, मेरे विचार म, यह जाहिर होता है कि भले ही एक स्तर पर राजनीतिक जीवन तथा विशेषत राजनीतिक सगठन की भावी सभावनाआ की अत्यत भिन्न रीति स व्याख्या करनेवाले व्यापक सिद्धातो के तत्वो के रूप म उनम परस्पर विरोध हो, तथापि दूसरे स्तर पर उन्ह ऐसी परस्परा पूरक धारणाए माना जा सकता है जो भिन्न प्रकार की राजनीतिक व्यवस्थाआ अथवा एक ही राजनीतिक व्यवस्था के विविध पक्षो की ओर सकेत करती है। उनकी सहायता मे शासक वग और उसके हितो के विशिष्ट पक्षा का प्रतिनिधित्व करनेवाले अभिजना मे युक्त समाजो, शासक वग से मुक्त किंतु सपत्ति के स्वामित्व और उत्तराधिकारी के बजाय प्रशासन अथवा सनिक शक्ति पर अपन नियत्रण के कारण शक्तिसपन्न राजनीतिक अभिजन से युक्त समाजा, एव उन समाजा के बीच भेद कर सकते है जिनम अनेक प्रकार के अभिजन-समूह का अस्तित्व हा और उन समूहा म स कोई भी समूह एसा न हो जिसके बार म यह कहा जा सके कि वह व्यक्तिया अथवा परिवारा का एक सुबद्ध और स्थायी समूह है। इस प्रकार के वर्गीकरण की स्थापना के लिए हम अभिजना के परिसचार अभिजना और वर्गों क पारस्परिक सबधा और नए अभिजना तथा नए वर्गों के निर्माण की रीतिया

का गहराई से अध्ययन करना होगा। यह काय हम आग के अध्यायो म करेंगे।

## पाद टिप्पणिया

1 जम्स बनहम दी मकियावेलियस
2 जे० ए० शपीटर कपीटलिज्म सोशलिज्म एड डिमाक्रसी प० 12 13
3 माक लोच पूव उल्लिखित
4 डब्लू० एल० गटसमन दि ब्रिटिश पोलिटिकल एलीट अध्याय 3 दि चजिग सामल स्ट्रक्चर आफ दि ब्रिटिश पोलिटिकल एलीट 1868 1955 देखिए
5 ज डोनाल्ड किंग्सल रिप्रजटटिव ब्यूरोक्रसी विशपत अध्याय 3 मिडिल क्लास रीफाम द ट्रायक आफ प्लुटोक्रसी देखिए। किंग्सल इस निष्कप पर पहुचता है कि मध्य वर्गों ने 1870 तक प्राय प्रत्येक मोर्चे पर प्राचीन व्यवस्था को नष्ट कर डाला था (किंतु) उसका लाभ मख्यत उन वर्गों की उच्चतर श्रणिया को ही मिला लोकसभा (हाउस आफ कामस) म धनी व्यापारी साहूकार और उद्योगपति जमादारो को प्रतिस्थापित कर रहे थे तथा बहुत समय नही बीता कि उन्होने उनको मत्रिमडल से हटाकर उसम भी उनका स्थान स्वय ले लिया लोकसवा म भी लगभग एसा ही परिवतन हुआ उच्चतर पदो के प्रवेश द्वार पर अब कुलीनवर्गीय प्रभुत्व नही रह गया था अब महगी शिक्षा। उस द्वार को खोलनेवाली कजी बन गई थी जिसके कारण नई व्यवस्था को धनिकतत्रीय चरित्र प्राप्त हो गया (प० 76)
6 कार्ल माक्स दि चार्टिस्टस न्यूयार्क डली ट्रिब्यून 25 अगस्त 1852 ' अब घोषणापत्रवादियो (चार्टिस्टम) का उल्लेख करें ये ब्रिटिश श्रमिक वग का वह अग है जो राजनीतिक दृष्टि से सक्रिय है उन्होने जो घोषणापत्र पेश किया है उसमे छह मददे हैं जिसम केवल व्यापक मताधिकार की तथा उन दशाओ क निर्माण की माग की गई है जिनक बिना श्रमिक वग का मताधिकार निरथक सिद्ध होगा जसे मतपत्र सदस्यो के लिए वेतन तथा वार्षिक आम चुनाव किंतु इग्लड के श्रमिक वग के लिए व्यापक मताधिकार राजनीतिक सत्ता का पर्याय बन गया है वहा जनसख्या का एक विशाल भाग सवहारा बन चुका है तथा एक दीघ और भूमिगत गृहसघष के परिणामस्वरूप उसम एक पथक वग की चेतना स्पष्ट रूप से घर कर चकी है और वहा देहाती क्षत्रा म भी किसानो का लोप हो गया है उनके स्थान पर जमीदार औद्योगिक पजीपति (फामस) तथा भाड के मजदूर ही मिलते है अत इग्लड मे व्यापक मताधिकार की स्थापना यूरोप महाद्वीप क देशा म समाजवाद के नाम पर प्रतिष्ठित किसी भी कदम की अपक्षा कहा अधिक समाजवादी कदम सिद्ध होगा यहा इसका अनिवाय परिणाम वग की राजनीतिक प्रभता की स्थापना क रूप मे सामने आएगा।
7 स्तानिस्लाव ओसोव्स्की क्लास स्ट्रक्चर इन दि सोशल कान्शसनस अध्याय 2 देखिए
8 जे० एच० मीजल पूर्व उल्लिखित

9 पूव उल्लिखित पृ० 277
10 पूव उल्लिखित पृ० 23
11 काल ज० फ्रीडरिख दि न्यू इमेज आफ दि कामन मन पृ० 259-60
12 एथनी सपसन अनाटामी आफ ब्रिटन पृ० 624
13 पूव उल्लिखित पृ० 16-17
14 वज्ञानिक शोध की दष्टि से शासक अथवा राजनीतिक वग (हमारी शब्दावली म राजनीतिक अभिजन—लेखक) की वास्तविक श्रष्ठता इस तथ्य म निहित है कि शासक वर्गों की बहुरूपी सरचना विभिन देशो के लोगो की सभ्यता के स्तरा तथा राजनीतिक प्रतिरूप के निर्धारण म अत्यधिक महत्वपूण होती है मोस्का पूव उल्लिखत पृ० 51
15 परतो लेस सिस्तम्स सोशियालिस्तेस II प 405
16 आन्श प्रतिरूपी धारणा एतिहासिक जीवन के कतिपय सबधो और उनकी घटनाओ को एक एसी सरचना म समाविष्ट कर देती है जिसकी कल्पना आतरिक दष्टि से सुसगत व्यवस्था के रूप म की जाती है यह सरचना स्वय एक कल्पित आदश होती है जिसका निर्माण यथाथ क कतिपय तत्वो की विश्लेषणात्मक अतिरजना के माध्यम से किया जाता है वह स्वय प्राक्कल्पना नही होती वरन उसक निर्माण म मागदशक सिद्ध होती है यह यथाथ का विवरण नही होती किंतु इसका प्रयोजन उस प्रकार क विवरण को अभिव्यक्ति के स्पष्ट साधन प्रदान करना है आदश प्रतिरूप का निर्माण एक अथवा अनेक दष्टियो की एकपक्षीय अतिरजना तथा अनेक बिखरे हुए अस्पष्ट सामायत विद्यमान तथा समय समय पर अनुपस्थित यथाथ वयक्तिक तथ्यो के सश्लेषण द्वारा होती है जिन्हें एकपक्षीय रीति से प्रस्तुत किए गए उन दृष्टिकोणो के अनुसार एक सयक्त विश्लेषणात्मक सरचना के रूप मे तरतीब दे दी जाती है मक्स वबर दि मथडालाजी आफ द साशल साइसज प० 90
17 एतिहासिक भौतिकवाद क समूचे सिद्धात क बारे मे क्रोस ने कहा है इतिहास की पदाथवादी व्याख्या एक निश्चित सामाजिक तथ्य का स्पष्टीकरण देने की आवश्यकता म स उत्पन्न हुई है न कि एतिहासिक जीवन के कारको के बारे म अमूत जाच के परिणामस्वरूप बी० क्रोस हिस्टारिकल मटीरियलिज्म एड द इकानामिक्स आफ काल माक्स प० 17
18 जान स्ट्रची कान्टेंप्ररी क पिटलिज्म अध्याय 8 दि रियल डवलपमट स्ट्रची न अनेक अन्य ग्रथो का हवाला दिया है जसे—डगलस ज का दि सोशलिस्ट केस और डडल सायस का दि लेवेलिग आफ इनकम्स सिंस 1938 ऐंड हैज द डिस्ट्रीब्यूशन आफ इनकम बिकम मोर अनईक्वल ?
19 पूव उल्लिखित प० 137 138
20 वही प० 146 हाल मे ही रिचड एम० टिटमस का ग्रथ इनकम डिस्ट्रीब्यूशन एड सोशल चेंज ब्रिटन मे आय क वितरण से सबधित जानकारी क सूत्रो के बारे म अब तक सबसे अधिक विस्तत अध्ययन है अध्ययन का मूल प्रयोजन उस सामग्री की पर्याप्तता क बारे म जाच करना है जिसका उपयोग राष्ट्रीय आय सबधी अध्ययन के विद्यार्थी करत रहे हैं और जिनका मख्य स्रोत बोड आफ इनलड रेवेन्यू (अतर्देशीय राजस्व मडल) क प्रतिवेदन और उसक द्वारा

किए गए अध्ययन हैं और उनमें यह बात विस्तारपूर्वक बताई गई है कि वह सामग्री किसी निश्चित समय पर आय के वितरण अथवा निश्चित काल के भीतर उसमें होनेवाले परिवर्तनों के बारे में सही निष्कर्ष निकालने की दृष्टि से कितनी अपर्याप्त है इसके बावजूद वह कहता है कि विशेषकर उच्चतर वर्गों की संपत्ति और आय का प्राक्कलन तैयार करते समय कुछ अन्य तत्वों की भी गणना की जानी चाहिए जैसे—जीवनबीमा पेंशन निवृत्ति होने पर एकमुश्त एकमुश्त भुगतान शिक्षासंबंधी सुविधाएं स्वैच्छिक ट्रस्ट खर्च के हिसाब और औसत लाभ इनके कारण असमानता में वृद्धि होती है और उनकी मात्रा के अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि 1938 के बाद से आय और संपत्ति की समानता की दिशा में होनेवाली प्रगति बहुत ही साधारण रही है टिटमस स्वयं इस निष्कर्ष पर पहुंचता है कि हमें यह कहने में बहुत हिचकिचाहट होती है कि 1938 से ब्रिटेन में काम कर रही समानताकारी शक्तियों में से किसी को भी प्राकृतिक विधि का स्तर प्रदान किया जाने अथवा उसे भविष्य की ओर उन्मुख किए जाने की संभावना है जैसाकि पीछे कहा जा चुका है प्रायः सामाजिक संरचना के भीतर गहरी जड़ें जमाए हुए और बड़े पैमाने की अर्थव्यवस्थाओं में निहित अनेक जटिल संस्थात्मक कारकों द्वारा पोषित अनेक प्रतिगामी तत्व असमानता की दिशा में काम कर रहे हैं इनमें से कुछ अधिक महत्वपूर्ण तत्व शक्ति वितरण के साथ जुड़े हुए हैं और उनमें दूरगामी प्रभावों के बीज निहित हैं उदाहरण के तौर पर बन्दोबस्त और ट्रस्ट को ही लें ये असमानता में गुप्तरूप से वृद्धि करते हैं वर्तमान काल में आय के आंकड़ों के अंतर्गत इनकी ओर ध्यान दिया ही नहीं दिया जाता, तथा संपत्ति के आंकड़ों में इनका नाममात्र के लिए उल्लेख कर दिया जाता है इसके अतिरिक्त अनेक अध्ययनों से यह स्पष्ट संकेत मिल रहा है कि 1949 के बाद से आय की विषमता बढ़ रही है संपत्ति का स्वामित्व जो संयुक्तराज्य अमरीका की अपेक्षा ब्रिटेन में कहीं अधिक संकेंद्रित है संभवतः और भी अधिक विषम बन गया है तथा पारिवारिक स्वामित्व की दृष्टि से हाल के वर्षों में उसमें बहुत भारी असमानता आ गई है (पृ० 198)

21 स्ट्रैची पूर्व उल्लिखित पृ० 150-51

22 आगे चौथे अध्याय के आरंभिक पृष्ठ देखें

23 कार्ल विट्फोगेल ओरियन्टल डिस्पॉटिज्म

24 जूलियन एच० स्टीवर्ड आदि लेखकों की रचनाओं का इरिगेशन सिविलिजेशंस ए कंपैरेटिव स्टडी नामक संकलन देखिए

25 नौकरशाहीमूलक समाजों के लक्षणों के व्यापक अध्ययन के लिए एस० एन० आइजनस्टाट की हाल की कृति दि पोलिटिकल सिस्टम आफ एम्पायर्स देखिए

26 विट्फोगेल पृ० 30

27 इस बारे में चौथे अध्याय के मध्य में विस्तृत चर्चा की गई है

28 विशेषतः मैन एंड सोसायटी भाग 2 अध्याय 2 देखिए

राजनीति और अभिजनो का परिसचार

□□

'इतिहास कुलीन तत्रो का कब्रिस्तान है।' इस चित्रात्मक वाक्य म परेता न अपने राजनीतिक चितन के एक मौलिक विचार— अभिजन परिसचार (एलीट सर्कुलेशन) का निरूपण किया है। किंतु परेता की प्रमुख कृतिया मे इस तथ्य का विश्लेपण उसकी शैली की चमक दमक की अपेक्षा कम प्रभावकारी बन पाया है। इस प्रसग म दो कठिनाइया उठती ह। पहली तो इस बारे मे कि क्या 'अभिजनो का परिसचार' उस प्रक्रिया की ओर इगित करता है जिसमे अभिजन और अभिजनेतर के बीच व्यक्तिया का सचार होता है ? अथवा, उस प्रक्रिया की ओर जिसम एक अभिजन दूसरे का स्थान ले लेता है ? परेतो की कृतिया म प्रमुख स्थान दूसरी धारणा को मिला है, तथापि उनमे इन दोना ही धारणाआ का समावेश है। उदाहरण के लिए, जब परेतो कुलीन तत्रो के ह्रास और फिर से उदय की चर्चा करता है तब वह कहता है 'निम्नतर वर्गों से आनेवाले परिवार सख्यात्मक दृष्टि से ही नही, गुणात्मक दृष्टि से भी शासक वग की पुन स्थापना कर देते हैं तथा यह गुणात्मक उत्कप अधिक महत्वपूण बात है।

परेतो इस तथ्य का बार-बार उल्लेख करता है, तथा इसके लिए वह एक ही भाषा का प्रयोग करता है 'दोनो स्तरा—अभिजन और अभिजनेतर—के बीच व्यक्तिया का सचार (आवागमन)'—(पीछे उल्लिखित पुस्तक III, (पृ० 1427) 'समाज के उच्चतर सस्तर म द्वितीय वग के अवशेषा की शक्ति धीर धीर क्षीण हो जाती है, किंतु समय समय पर निम्नतर सस्तर स उठनेवाला ज्वार उनको पुन शक्ति प्रदान कर देता है।' (वही)। साथ ही परता एक अन्य प्रकार के सामाजिक आदोलन का भी उल्लेख करता है जो समाज के सतुलन के लिए बहुत महत्वपूण होता है। यह नए अभिजनो के उदय और उनके द्वारा शक्ति

प्राप्त करने का आदोलन है। पहले ऐसा प्रतीत होता है कि वह इस आदोलन का परिसचार की विफलता के साथ सवद्ध कर रहा है लेकिन यह बात जाहिर है कि वह इस सामान्य अभिजनो के परिसचार का एक पक्ष भी मानता है। 'लेस सिस्तम्स सोसियालिस्तेस म वह कहता है कि व्यक्तियो के इस परिसचार की मदता के परिणामस्वरूप सत्ताधारी वर्गों के विकृत तत्वो म भारी वद्धि हो सकती है, तथा दूसरी ओर शासित वर्गों म श्रेष्ठतर तत्वो की भी वद्धि हो सकती है। उस स्थिति म सामाजिक सतुलन अस्थिर हो जाता है तथा मामूली-सा भी आघात उस नष्ट कर देगा। एक देश पर दूसरे देश के प्रभुत्व अथवा आतरिक क्राति स एक हलचल उत्पन्न हो जाती है जिसके फलस्वरूप एक नया अभिजन शक्ति प्राप्त कर लेता है तथा एक नया सतुलन स्थापित हो जाता है ।' (पृ० 30)

अभिजनो के परिसचार के विविध प्रकारो के सूक्ष्म भेदो का निरूपण परेतो की शिष्या मारी कोलाबिस्का ने अपनी पुस्तक ला सर्कुलेशन डेस ऐलीटस एन फ्रास' म किया है जिस स्वय गुरु (परेतो) ने प्रशसापूर्वक उदधृत किया है। कोलाबिस्का ने तीन प्रकार के परिसचारो म भेद किया है। प्रथम स्वय शासक अभिजन की विविध श्रेणियो के बीच होनेवाला परिसचार। दूसरा अभिजन और शेष जनसमुदाय के बीच होनेवाला परिसचार, जो दो म से एक रूप ग्रहण कर सकता है । निम्नतर स्तर के व्यक्ति विद्यमान अभिजन म प्रवेश पाने म सफल हो सकते है अथवा आपस मे मिलकर नए अभिजन समूहो का निर्माण कर सकते है जो शक्ति प्राप्त करने के लिए विद्यमान अभिजन के साथ लोहा ल। कोलाबिस्का की पुस्तक के एक बडे भाग मे ग्यारहवी और अठारहवी शताब्दियो क बीच फ्रासीसी समाज की इन आखिरी दो प्रक्रियाओ का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है उसके निष्कर्षों की समीक्षा मैं बाद मे करूगा।

परेतो के चितन के सदभ म दूसरी कठिनाई उसके द्वारा प्रस्तुत की गई अभिजनो के परिसचार की व्याख्या के सिलसिले म उठती है। कुछ स्थलो पर ऐसा प्रतीत होता है कि वह अभिजनो को विशिष्ट सामाजिक हितो का प्रतिनिधि तथा अभिजनो के परिसचार को स्थापित हितो के ह्रास और नए हितो के उदय का परिणाम मानता है। इस प्रकार वह कहता है कि 'आरभ म सनिक धार्मिक तथा वाणिज्यिक कुलीन तत्र और धनिक तत्र—कुछ महत्वहीन अपवादो को छोडकर—शासक अभिजन के अग रहे होगे तथा समय समय पर वे ही शायद शासक अभिजन बन गए होगे।' (दि माइड एड सोसायटी, III, पृ० 1430)। एक अन्य स्थल पर नए अभिजनो के उदय की चर्चा करते हुए वह कहता है कि इग्लड म औद्योगिक श्रमिको ने एक श्रमसघ अभिजन को जन्म दिया है

प्लेम सिस्तेम्स सोसियालिस्तेस, पृ० 32 33)। इस प्रकार का स्पष्टीकरण कोलाबिस्का ने अधिक विस्तारपूवक प्रस्तुत किया है। उसन फ्रासीसी इतिहास के विभिन्न कालो मे उदीयमान अभिजन समूहो के उदाहरण के रूप म वाणिज्यिक वर्गो, औद्योगिक वर्गो, बुर्जुआ (धनलिप्सु) वर्गो, वकीला और साहूकारो का उल्लेख किया है।

स्पष्ट है कि परेतो का प्रयाजन एक ओर तो मुख्यत अभिजन के सदस्यो तथा दूसरी ओर निम्नस्तरो क लोगो के मानसिक लक्षणा मे हानवाले परिवतनो, अथवा जसाकि वह कहता है दोना स्तरो के अवशिष्ट अशो म होनेवाले परिवतना के माध्यम से अभिजनो के परिसचार की व्याख्या करना है। वह कहता है कि कुलीनतत्रीय व्यवस्थाओ का ह्रास सख्या की दृष्टि से ही नही हाता 'उनम इस अथ मे गुण की दृष्टि से भी ह्रास हो जाता है कि उनकी शक्ति घट जाती है अर्थात व जिन अवशिष्ट तत्वो (मानसिकताओ) के कारण शक्ति प्राप्त करते और उसे अपन हाथा म बनाए रखते हैं उनके अनुपात मे ह्रास आ जाता है। निम्नतर वर्गो से उठनवाले परिवार शासक वग का पुन सशक्त बना दत है। (माइड ऐंड सासायटी, III, पृ० 1430)। इसके अतिरिक्त समूहा के परिसचार की चर्चा करते हुए परेतो सुझाव देता है कि जातिया समाज के उच्चतर स्तरा म ह्रासमान तत्वो के सचय के कारण होती हैं। (वही, पृ० 1431)। इस व्याख्या के मूल्याकन की दृष्टि से परेतो को 'अवशिष्ट' (रेजीडयूज) धारणा का सक्षिप्त अध्ययन आवश्यक है। 'माइड ऐंड सासायटी' मे वह शुरू मे सामाजिक जीवन के अतगत तकसगत और अतकसगत (विवेकसगत और अविवकपूण) कार्यो म अतर करता है। प्राप्य साध्या और उन साध्यो की सिद्धि के लिए उपयुक्त साधनो के उपयोग की दिशा मे किए जानेवाले काय तकसगत हैं, तथा निष्प्रयोजन काय, अथवा अप्राप्य साध्या की दिशा मे किए जानेवाले प्रयास अथवा एसे साधनो का प्रयोग जिनसे साध्यो की सिद्धि सभव ही नही है अतकसगत कार्यो की कोटि म आते है। परेतो का मत है कि अधिकाश मानवीय काय तकसगत हाते है।[2] वह अतकसगत कार्यो के पीछे निहित तत्वा की खाज करता है तथा यह पता लगाता है कि अतकसगत काय आम तौर पर तकसगत कस दिखाई पडने लग जाते है। इन तत्वो को वह छह अवशिष्टो मे खोजता है जिन्ह वह 1 सयोगी, 2 समग्रो के आग्रह 3 सामाजिकता, 4 सक्रियता 5 व्यक्ति की प्रामाणिकता तथा 6 लिंग के अवशिष्ट कहता है। इन अवशिष्टा द्वारा निर्धारित काय जिन रीतियो से तकसगत कार्यो का स्वरूप प्राप्त कर लेत हैं उनकी चर्चा परेतो ने 'व्युत्पत्तिया' नामक शीपक के अतगत की है। परतो

की ये उपपत्तिया मार्क्स के अर्थ मे 'विचारधाराओं' से मिलती जुलती हैं। परेतो अवशिष्टो की बहुत सूक्ष्म परिभाषा नही करता, और वह सामाजिक घटनाओ के वर्णन मे उनका उपयोग मनमानी रीति से करता है।[3] अपनी पुस्तक 'दि माइंड एंड सोसायटी' के अंतिम खंड मे अभिजनो के परिसचार की समस्या का विस्तारपूर्वक वर्णन करते समय वह अवशिष्टो के प्रथम दो वर्गों का ही उपयोग करता है। वह कहता है कि शासक अभिजन का शासन दो प्रकार का हो सकता है—उसको या तो मक्कारी (संयोगो के अवशिष्ट की प्रमुखता) के द्वारा बनाए रखा जा सकता है अथवा शक्ति (समग्रो के आग्रह नामक अवशिष्ट की प्रमुखता) द्वारा। इस प्रकार परेतो प्रथम और द्वितीय अवशिष्टो का प्रयोग ऐसी कोटियो के रूप मे करता है जिनके अंतर्गत सभी राजनीतिक दृष्टिकोणो का वर्गीकरण संभव है तथा राजनीतिक जीवन के बारे मे परेतो के चितन का अधिकाश भाग पश्चिमी समाजो के इतिहास के चुने हुए तथ्यो को इस योजना के अंतर्गत वर्गबद्ध करने का प्रयास भर रह जाता है। यह असाधारण रूप से सरल वर्गीकरण है। यह सरलीकरण विशेषत उस समय और भी प्रमुख रूप से दिखाई पड़ने लगता है जब उस धारणाओं की उस विराट संरचना के संदर्भ मे देखा जाए जिसका निर्माण परेतो ने अपने ग्रंथ के पूर्ववर्ती भागो मे किया है तथा इस सरलीकरण मे कोई महत्वपूर्ण मौलिकता दृष्टिगोचर नही होती। प्रथम तथा द्वितीय कोटि के अवशिष्टो द्वारा अभिप्रेरित दो प्रकार के अभिजन, जिन्हे वह सट्टाखोर और भाडाखोर (स्पेकुलेटर्स ऐंड रेंटियर्स) भी कहता है, मैकियावेली के 'लोमड़ी और सिंह' वर्गों से बहुत कुछ मिलते जुलते है किंतु यहा उनको अधिक वैज्ञानिक छद्म मे प्रस्तुत किया गया है। वैसे यह बात भी संदिग्ध है कि ये पारिभाषिक शब्द वास्तव मे अधिक वैज्ञानिक हैं, क्योकि यद्यपि परेतो के ग्रंथ मे आदि से अंत तक वैज्ञानिक रीतियो का बड़े पैमाने पर प्रदर्शन किया गया है तथापि शोध की सही रीतियो द्वारा यह सिद्ध करने की कोशिश की ही नही गई अथवा बहुत कम कोशिश की गई है कि उन दोनो प्रकार के व्यक्तियो का यथार्थ मे अस्तित्व होता है जिनके बारे मे यह दावा किया गया है कि वे इन दो प्रकार के अभिजनो के चरित्र का निर्धारण करते हैं न उनको सूक्ष्मत मनोविज्ञानिक शब्दावली मे परिभाषित करने अथवा यह बताने की कोशिश ही की गई है कि राजनीतिक व्यक्तित्व की अन्य कोई किस्म नही होती यदि यह मान भी लिया जाए कि ऐसे व्यक्तित्व प्रतिरूपो का अस्तित्व होता है और राजनीतिक जीवन मे उनका महत्व होता है तब भी यह बताना आवश्यक होगा कि अभिजन के सदस्यो मे मन और भावना विचारो तथा आवेगो मे होने वाले परिवर्तन सामाजिक परिवर्तनो से स्वतंत्र होते हैं, तथा वे अभिजनो के

परिसचार को ज म देते है। परेतो ने यह बताने की कोशिश नही की हैं, इसके बजाय यह इतिहास म से ह्रासमान अभिजना के उदाहरण चुन लेता है, और महज यह दावा करने लगता है कि उनके 'अवशिष्टो' मे परिवतन हुआ है।

अभिजनो के उत्थान और पतन के बारे मे परतो का अध्ययन भी समान रूप से असतोषजनक है। वह समस्त उपलब्ध उदाहरणा को (सीमित अवधिया के भीतर भी) इकट्ठा करने तथा यह बताने की कोशिश नही करता कि अभिजन परिसचार मे कुछ ऐसी अनियमितताए है जिनका सबध यह मानकर आवेगो के साथ जोडा जा सकता है कि आवेगो की स्थापना स्वतत्र रीति से की जा सकती है। वह अपने सामा य तत्वो के समथन म महज ऐतिहासिक उदाहरण पेश करता है, वे भी मुख्यत समकालीन इतालवी राजनीति और प्राचीन रोम के इतिहास से।

अतत , परेतो इस प्रश्न का हल नही खोजता कि दोनो प्रकार के अभिजन परिसचार, अर्थात व्यक्तिया का आरोहण और अवरोहण, तथा सामाजिक समूहा का उत्थान और पतन परस्पर सबधित है। वह सक्षेप मे सकेत करता है कि यदि शासक अभिजन मे निम्नतर स्तर के श्रेष्ठतर व्यक्तिया के प्रवेश का द्वार अपक्षाकृत उ मुक्त हो तो उसका अस्तित्व बन रहने की अधिक सभावना रहती है।[4] इसके प्रतिकूल व्यक्तियो के इस परिसचार की विफलता के परिणामस्वरूप यह सभावना बनी रहती है कि एक अभिजन दूसरे की प्रतिस्थापना कर देगा। इस प्रकार परेतो दावा करता है कि, 'समाज के उच्चतर सस्तर मे इस वग परिसचार की मदता के कारण अथवा अ य कारणो से शक्तिशाली बने रहने के लिए उपयुक्त अवशिष्टा से वचित ह्रासमान तत्वो के सचय, अथवा शक्ति के प्रयोग से बचने के कारण क्रांतिया होती है, क्याकि कालातर म समाज के निम्नतर स्तरा म श्रेष्ठतर तत्व आगे आ जाते हैं जिनके भीतर सरकार के कृत्या का निवहन करने के लिए उपयुक्त अवशिष्ट विद्यमान हाते है, तथा जो बल प्रयाग के लिए पर्याप्त रूप स इच्छुक होते है' (दि माइड ऍड सोसायटी, III पृ० 1431)। इस ग्रथ म इन प्रस्थापनाआ के समथन मे क्रातियो के तुलनात्मक अध्ययन अथवा अभिजन और अनभिजन के बीच व्यक्तिया के परिसचार की मात्रा म महत्वपूण अतर प्रदर्शित करने वाले विभि न समाजा के व्यवस्थित तुलनात्मक अध्ययन के द्वारा जुटाए गए ठास साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किए गए हैं, जिसके कारण पाठका का गहरी निराशा होती है।

यह सही है कि इस प्रकार के तुलनात्मक अध्ययना के लिए तथ्या का सकलन कठिन होता है, तथापि ऐसे प्रमाण आसानी से उपलब्ध हैं जो परेतो के सामायीकरण को सवथा अप्रामाणिक ठहराते है। एसा एक उदाहरण भारत का है। भारत एक ऐसा समाज है जिसम एक दीघकाल तक सस्तरीकरण का एक अत्यत कठोर स्वरूप प्रचलित रहा है तथा जहा तक पता लगाया जा सका है उसम समाज के निम्न स्तरा के व्यक्तिया का अभिजन की ओर अपेक्षाकृत अत्यल्प परिसचार रहा है किंतु उसम आधुनिक काल तक क्रातिकारी आदोलन प्राय नगण्य रहे है तथा ऐसी कोई भी क्राति नही हुई है जिसके परिणामस्वरूप एक अभिजन ने दूसरे को प्रतिस्थापित कर दिया हो। यदि हम यह बात मान भी ले कि आधुनिक पाश्चात्य समाजा म सामाजिक सचरणशीलता की मात्रा और क्रातिकारी आवेगा तथा गतिविधि के बीच सबध की खोज उपयुक्त रहेगी तब भी अभिजन म नए व्यक्तिया क प्रवेश पर लगी पाबदी के आधार पर ही अभिजना के उत्थान और पतन की व्याख्या सभव नही है अर्थात यह कहना सभव नही होगा कि यह उत्थान और पतन क्रातिकारी परिवतना के माध्यम से होता है किंवा क्रमिक परिवतनो के माध्यम स। 'अय कारणा म से कुछ की समीक्षा अनिवाय है जिनका परेतो उल्लेख मात्र करता है, विश्लेपण नही करता।

फ्रास के अभिजना के बारे म मारी कोलाविस्का की कृति का प्रयोजन एक समाज के भीतर परिसचार की प्रक्रिया के गहनतर अध्ययन द्वारा परेतो के सिद्धात मे निहित सत्य का प्रदशन करना था। फिर भी वह वस्तुत इतिहास म स परेतो द्वारा दिए गए उदाहरणा की अपेक्षा अधिक समाधानकारक अनुभवजन्य साक्ष्य प्रस्तुत नही कर सकी। इसका कारण यह है कि वह परेतो की भाति ऐतिहासिक उदाहरणो की अपूव पद्धति का ही अनुसरण करती है। कोलाविस्का ने फ्रास के इतिसास के जितने काला का अध्ययन किया है उनम से प्रत्येक के लिए उसने विशिष्ट व्यक्तिया अथवा परिवारो क उत्थान और पतन के कारण दिए हैं किंतु जहा इससे यह बोध होता है कि फ्रास के समाज म 'कुछ' व्यक्ति अमुक कालो म अपनी सामाजिक श्रेणी म परिवतन करने म समथ रहे (और इसम सदेह ही कहा था) वही उससे इस प्रकार के वग परिसचार की मात्रा के बारे म कुछ ज्ञात नही होता। अत उसके आधार पर आर्थिक अथवा राजनीतिक प्रणाली मे होने वाले महत्वपूण परिवतनो तथा सचार की मात्रा के बीच कोई सबध निर्धारित कर पाना सभव नही है। अपने अध्ययन म समाविष्ट अतिम काल (1715 89) के विवरण म ही वह अभिजना म विभिन्न सामाजिक सस्तरो के प्रतिनिधित्व के बारे

में कुछ भावात्मक संकेत देती है, और उसमें भी उसने जिस सामग्री का सकलन किया है वह बहुत कम है तथा उसकी व्याख्या ऐसे ढंग से की गई है जिससे उसके महत्व के बारे में शंकाएं उत्पन्न होने लगती हैं। इस प्रकार, वह इस बात के परिणामस्वरूप कि सामान्य कोटि के लोग सैनिक अभिजन में प्रवेश पा रहे थे, एक स्थल पर एक टिप्पणी उदधृत करती है जिसमें कहा गया है कि 1787 में घुडसवार सेना के उच्चतर अधिकारियों में से बीस प्रतिशत पदधारी कुलीनवर्ग के सदस्य नहीं थे, तथा उनमें से कुछ के नामों में कुलीन वर्गीय प्रतीक 'द' भी नहीं था, तथापि अगले ही अध्याय में वह कहती है कि सैनिक अभिजन सहित फ्रांसीसी अभिजन राज्यक्रांति से पूर्व के कुछ वर्षों में अधिकाधिक एकांतिक होते जा रहे थे, और वह एक अन्य लेखक की रचना में से एक उद्धरण देती है जिसका अभिप्राय यह है कि कुलीनवर्गीय प्रतीक का अभाव इस बात का प्रमाण नहीं है कि व्यक्ति अकुलीनवर्ग में जन्मा है (पृ० 104)। इसके अतिरिक्त यह भी कहा जा सकता है कि कोलाविस्का ने अपनी खोज 'दि माइंड ऐंड सोसायटी' के प्रकाशन से पहले ही पूरी कर ली थी, अतः वह जिन लोगों के जीवन की छानबीन करती है उनकी संपत्ति और उनके अवशिष्टों के बीच संबंधों की तलाश की जिम्मेदारी से बच गई। उसने इन परिसंचारों की व्याख्या मुख्यतः नए आर्थिक हितों के विकास के आधार पर की है।

अभिजन परिसचार के इसी तथ्य का अध्ययन उन अनेक लेखकों ने भी किया है जिनकी कृतियों का अवलोकन हम उस परिसचार प्रक्रिया और उसके कारणों के बारे में वैकल्पिक जानकारी प्राप्त करने के लिए करेंगे। मोस्का ने अपनी सर्वप्रथम पुस्तक में उसका विवरण इस प्रकार दिया है 'जब आदेश देने तथा राजनीतिक नियंत्रण के प्रयोग की प्रवृत्ति महज वैधानिक शासकों की बपौती न रह जाए तथा अन्य लोगों में भी काफी सामान्य बन जाए, और जब शासक वर्ग के बाहर एक ऐसा अन्य वर्ग संगठित हो जाए जो शासन के दायित्वों में भाग लेने की सामर्थ्य के बोध के बावजूद स्वयं को वैधानिक दृष्टि से शक्ति से वंचित पाता है तो वह कानून एक नैसर्गिक शक्ति के मार्ग की बाधा बन जाता है तथा किसी न किसी रीति से उसे मिटना पड़ता है।' (तेओरिका दीई गवर्नी ई गवर्नो पार्लेमेनेयर)। उसने यही विचार बाद में 'एलीमेंती दि सायंजा पालीतीका' में इस तरह प्रतिपादित किया है ' निम्नतर वर्ग के अंतर्गत एक अन्य शासक वर्ग अथवा निर्देशक अल्पसंख्या का निर्माण अनिवार्य हो जाता है तथा प्रायः यह नया वर्ग वैध शासन की सत्ता संभालने वाले वर्ग का शत्रु बन जाता है।' मोस्का अभिजनों के बीच संघर्ष तथा एक नए अभिजन द्वारा पुराने अभिजन

की प्रतिस्थापना के माध्यम से परिसचार के अतिरिक्त अभिजन परिसचार की एक अन्य रीति का भी मान्यता देता है जिसके अतगत विद्यमान अभिजन अपने भीतर समाज के निरतर वर्गों से आने वाले व्यक्तियो के प्रवेश द्वारा परिवर्धित होता रहता है। वह अनेक विभिन्न सदर्भो मे अभिजन के भीतर प्रवेश की अपेक्षाकृत सुगमता अथवा कठिनाइ का भी अध्ययन करता है। इसके पश्चात वह अभिजन म प्रवेश की उन्मुक्तता की मात्रा के आधार पर सचरणशील और असचरणशील समाजा म भेद करता है तथा परेतो के विपरीत वह आधुनिक लोकतत्रीय समाजा म विभिन्न सामाजिक स्तरो के बीच बडी मात्रा म सरचरण क महत्वपूण लक्षण का दशन करता है, अथवा यो कह कि उसक बार म अतिशयोक्तिपूर्ण दावा करता है। वह कहता है कि आधुनिक यूरोपीय समाजा म ' शासक वग की प्रक्रिया खुली रखी गई हैं। अभी तक जा अवरोध निम्नतर वर्गों के व्यक्तियो को उच्चतर वर्गों म घुसने से रोकते रहे हैं उन्हे नष्ट अथवा कम कर दिया गया है, तथा पुराने स्वेच्छाचारी राज्य के आधुनिक प्रतिनिधि राज्य म विकसित हो जाने के फलस्वरूप प्राय समस्त राजनीतिक शक्तियो के लिए समाज के प्रवध म भाग लेने का माग खोल दिया गया है।' (दि रूलिंग क्लास, पृ० 474)।

अभिजनो के परिसचार के बारे मे मोस्का के विवेचन का सबसे प्रमुख लक्षण उसके द्वारा प्रस्तुत स्पष्टीकरण म निहित है। वह यदाकदा अभिजन के सदस्या के बौद्धिक और नतिक गुणा का उल्लेख करता है, किंतु परेता के विपरीत वह इन मनोविज्ञानिक लक्षणा को सर्वोच्च महत्व नही प्रदान करता। प्रथम तो वह कहता है कि इस प्रकार के वैयक्तिक चारित्रिक लक्षण सामाजिक परिस्थितियो की उपज होते हैं 'युद्ध म साहस आक्रमण म सन्नद्धता, प्रतिरोध म टिकाऊपन य वे गुण है जिन्ह दीघकाल से और आम तौर पर उच्चतर वर्गों की बपौती माना जाता रहा है। निश्चय ही इन मामलो म व्यक्तियो के मध्य व्यापक प्राकृतिक अथवा यो कहें कि सहज भेद हो सकते है, किंतु सबसे बडा तत्व परपराओ और परिस्थितिजन्य प्रभावो का होता है जो मनुष्यो के किसी भी बडे समूह क भीतर उन्हे उच्च निम्न अथवा महज औसत स्तर पर बनाए रखता है। (वही, पृ० 64)। दूसर, वह अभिजनो के उत्थान और पतन सबधी अपन स्पष्टीकरणो मे अतगत इस प्रकार के वैयक्तिक चारित्रिक लक्षणो का उल्लेख विरल ही करता है। वह समाज के भीतर नए हितो और आदर्शों तथा नई समस्याओ क अभ्युदय के आधार पर इन घटनाओ (अभिजन के उत्थान और पतन) का स्पष्टीकरण देता है 'हम देखते है कि ज्योही राजनीतिक शक्तियो के सतुलन म कोई परिवतन होता है, अर्थात जब यह आवश्यकता

महसूस की जाने लगती है कि राज्य के सबध म पुरानी क्षमताओ के स्थान पर नई क्षमताआ का प्रयोग होना चाहिए, अथवा या वह कि जब पुरानी क्षमताआ यानी विद्यमान अभिजन की क्षमताओ और उसके गुणो की मात्रा म कुछ सीमा तक कमी आ जाती है, अथवा उनके वितरण म परिवतन हो जाते है त्याही शासकवग के गठन की पद्धति म भी अतर आ जाता है। यदि समाज म सपत्ति का कोई नया स्रोत उभर आता है अथवा नान का व्यावहारिक महत्व बढ जाता है अथवा किसी पुराने धम का ह्रास और नए धम का उदय हो जाता है, अथवा यदि समाज म कोई नई विचारधारा फल जाती है तब उसके साथ ही शासक वग म दूरगामी असामजस्य पदा हो जाता है। (वही, पृ० 65)। जसाकि मीजेल कहता है तक की यह पद्धति मोस्का को माक्सवादी चितन के समीप ले जाती है और इस खतर के प्रति जागरूक होने के कारण वह इतिहास की आर्थिक व्याख्या की सीमाआ तथा सामाजिक परिवतन म नतिक और धार्मिक विचारा के प्रभाव पर जोर देकर अपने और माक्स के सिद्धातो के बीच भेद बनाए रखने का कठोर प्रयास करता है।[5] इस प्रश्न पर मोस्का का चितन मक्स वेबर क चितन स बहुत भिन्न रही है। य दोनो इतिहास की एकातिक तथा एकपक्षीय आर्थिक व्याख्या का खडन करते है परतु मोस्का माक्स के चितन के प्रभाव को स्वीकार करने के लिए वेबर की अपेक्षा कम तैयार है। इसका कारण यह है कि वह श्रमिक आदोलन और समाजवाद का घोषित शत्रु है।

दो अन्य लखका ने अभिजना के परिसचार की समीक्षा का पूणत स्वतत्र रीति से विवेचन किया है। यहा हम उनके विचारा का सक्षिप्त अध्ययन करगे। बेल्जियमवासी इतिहासकार हेनरी पिरन्ने ने अपने निबध 'लेस परियेडस दे ल 'हिस्तायर सोसियाले दु कपितालिस्मे'[6] म यह कल्पना पेश की है कि पूजीवाद[7] के विकास के दौरान प्रत्यक भिन्न काल म पूजीपतिया के एक भिन्न वग का प्रभुत्व रहा है। आर्थिक विकास म होने वाले प्रत्यक परिवतन स सातत्य भग हो जाता है। एक कालबिंदु तक क्रियाशील पूजीपति एकदम नई आवश्यकताआ द्वारा उत्पन्न नई परिस्थितिया क साथ अनुकूलन करने म अपनी असमथता स्वीकार कर लते हैं जिनकी पूर्ति के लिए नए साधनो की आवश्यकता होती है। व सघष से पीछे हट जाते है तथा एक ऐस कुलीनवग का स्वरूप ग्रहण कर लेत है जो यदि प्रबध व्यवस्था म भाग लती भी है ता नितात निष्क्रिय रूप से, यानी महज पूजी जुटाता है। उनके स्थान पर नए मनुष्य उठ खड़े होते हैं जो साहसी और उद्यमी होते हैं तथा परिवतन की चुनौतिया का सामना साहस के साथ करते है। 'पिरन्ने न इतिहास के एस चार कालो

का उल्लेख किया है जिनमे इस प्रकार का रूपातरण घटित हुआ है—ग्यारहवी शताब्दी के बाद से कस्बा के व्यापारिया का उदय, तेरहवी शताब्दी म अतर्राष्टीय व्यापार का विकास, सोलहवी शताब्दी मे नए उद्योगो तथा औद्योगिक नगरा का उदय, और अठारहवी शताब्दी की औद्योगिक क्राति, तथा वह यह सिद्ध करने की कोशिश करता है कि इनमे से प्रत्येक मोड पर आर्थिक गतिविधि के नेतृत्व के लिए समाज के निम्नतर सस्तरो से नए मनुष्य उभरकर ऊपर आए।

शुपीटर ने अपने निबध सोशल क्लासेज इन एन एथनिकल होमोजेनस मिल्यू [8] (प्रजातीय दष्टि से समरस परिवेश मे सामाजिक वग) मे कुछ इसी प्रकार के विचार प्रकट किए हैं। उसने अपने निबध मे 'वग के भीतर परिवारो का उत्थान और पतन, 'वगसीमा के परे परिसचरण' तथा 'सपूण वर्गों का उत्थान और पतन' के विश्लेपण से सबधित खडो के अतगत परिसचार के विविध प्रकारो मे बहुत स्पष्ट भेद किया है। शुपीटर के अध्ययन का सबसे अधिक मूल्यवान लक्षण यह है कि वह अभिजनो के परिसचार म व्यक्तिगत और सामाजिक कारको का एकसाथ विवेचन करता है। वह कहता है कि वर्गों के बीच परिवारा के परिसचार म सामाजिक सहमति पर व्यक्तिगत गुणो और प्रतिभा का (सयोगा के अलावा) ही नही वरन उच्चतर वर्गो की उन्मुक्तता तथा नए कायक्षेत्रा म उद्यम के अवसरो सरीखी सामाजिक परिस्थितिया का भी प्रभाव पडता है। इसी प्रकार सपूण वर्गो के उत्थान और पतन म व्यक्तियो (सदस्या) के गुणा का कुछ महत्व स्वीकार किया जा सकता है, तथापि उससे भी बडा प्रभाव अभिजन समूहा के कृत्या को प्रभावित करने वाले सरचनात्मक परिवतन डालते है। ' समग्र राष्ट्रीय सरचना म प्रत्येक वग की स्थिति एक ओर तो उसके कृत्या का प्रदान की जाने वाली महत्ता पर तथा दूसरी ओर वग द्वारा अपन कृत्य की पूर्ति म प्राप्त सफलता की मात्रा पर निभर करती है।' शुपीटर इस प्रक्रिया के उदाहरणस्वरूप जमनी म क्षत्रिय कुलीनवग के उदय, तथा राष्ट्रीय प्रशासनिक व्यवस्था और भूमि सपदा के वशगत उत्तराधिकार के विकास के परिणामस्वरूप चौदहवी शताब्दी के अत से उसके पतन का विवेचन पश करता है। इस पतन के मूल कारण व्यक्तिगत युद्ध से कृत्य के सामाजिक महत्व मे कमी यानी समाज के विसैन्यीकरण और विशाल भूमि जागीरा के हितो के अनुकूल होने वाले आर्थिक परिवतना मे निहित हैं।

अब तक जिन अध्ययनो का उल्लेख किया गया है उनका प्रयोजन सरकार की

औपचारिक सस्थाओ के कमचारी वग (कार्मिक) म होने वाले परिवतना के कारणो अथवा अधिक व्यापक तौर पर समाज म विशिष्ट समूहो के उतार चढाव की व्याख्या द्वारा राजनीतिक परिवतन को समझने म मदद पहुचाना था। व मूल समस्या के निरूपण तथा अपने निष्कर्षों के समथन म साक्ष्य जुटाने म कहा तक सफल रहे इस बारे म परेतो और मोस्का, पिरन्ने अथवा शुपीटर के दष्टिकोण म दूरगामी भिन्नताए है। परतो सबसे अधिक ध्यान अभिजन और अभिजनतर के बीच व्यक्तियो के परिसचार पर देता है, तथा उसका यह चितन उसके द्वारा शोध के मुख्य विषय के रूप म 'सामाजिक सतुलन' के चयन का प्रत्यक्ष फल है। आधुनिक कृत्यवादियो की तरह—विचारधारात्मक और वज्ञानिक दष्टि म परतो कृत्यवादियो का पूवज है—वह उन कारको के अध्ययन म जुट जाता है जो एक विशिष्ट समाज अथवा समाज के विशिष्ट स्वरूप का अस्तित्व बनाए रखते है तथा उन्ही की तरह वह अपने अध्ययनक्षेत्र म समाज के विभिन्न प्रकारो के प्रमुख भेदो अथवा एक प्रकार के समाज का दूसरे प्रकार म रूपातरण होने के कारणो की जाच को वस्तुत शामिल ही नही करता। परेतो के ऐतिहासिक चित्रण म सामाजिक सरचना के यथाथ रूपातरो का कोई स्थान ही नही है। इसके विपरीत उसमे एक अनत चक्राकार परिसचार है जिसम ह्रासमान अभिजन म समाज के निम्नतर स्तर से नए तत्वो की भरती द्वारा शक्ति का नवसचार होता रहता है, अथवा उसे नए अभिजन द्वारा अपदस्थ यानी प्रतिस्थापित कर दिया जाता है जिसका निर्माण व ही उन दशाओ म कर लेते है जिनमे उन्हे पृथक पृथक व्यक्तियो के रूप म स्थापित अभिजन के भीतर दाखिल करने से इनकार कर दिया जाता है। इन सब परिसचारो के माध्यम से समाज अपरिवतनीय बना रहता है, क्योकि अमूत रूप म उसको समाज की बहुसख्या पर एक अभिजन के शासन के रूप मे परिभाषित किया जाता है। परेतो के दष्टिकोण के अनुसार यह पूछने का कोई प्रयोजन ही नही रह जाता कि अभिजन की रचना और उसकी सास्कृतिक दृष्टि मे ऐतिहासिक परिवतन हुए है या नही। परेतो जब कभी इस प्रकार की समस्या का स्पश करता है तभी वह तुरत पीछे हट जाता है और यह दावा करने लगता है कि उसके अध्ययन का मुख्य विषय सामाजिक सतुलन की दशाओ का सामान्य, अमूत और इतिहास निरपेक्ष प्रश्न है।

इसके विपरीत मोस्का, पिरन्ने और शुपीटर अनेक मुद्दो पर मतभेदो के बावजूद इस धारणा पर सहमत हैं कि आर्थिक और सास्कृतिक परिवतनो के फलस्वरूप समाज म नए सामाजिक समूहो का निर्माण हो जाता है, जब इन समूहो की गतिविधि आम समाज के लिए बुनियादी तौर पर महत्वपूण बन जाती है तब

उनके सामाजिक प्रभाव मे वृद्धि हो जाती है, तथा कालातर में ये गतिविधिया राजनीतिक व्यवस्था और समूची सामाजिक सरचना मे परिवतन कर दती हैं। सामाजिक समूहो और विशेषत आर्थिक कृत्यो की दष्टि से विशिष्ट समूहो के उत्थान और पतन के विषय मे उनकी चिंता इस बात का प्रमाण है कि उन पर मार्क्स के वग सिद्धात का प्रभाव है और यही प्रभाव इस तथ्य से भी जाहिर होता है कि वे इन समूहो के लिए 'अभिजन' के बजाय 'वग' सज्ञा का प्रयोग करते है, तथा इस प्रकार वे समाज का एसा प्रतिरूप प्रस्तुत करते हैं जिसमें शासक अभिजन तथा जनसाधारण के बीच के सवव्यापक और अपरिवतनशील विभेद की अपेक्षा वग सरचना की जटिलता और ऐतिहासिक विविधता अधिक प्रमुख तौर पर उभर कर आती है। केवल मोस्का की कृतियो मे इस विभेद का विवेचन हुआ है, और जैसाकि पीछे कहा जा चुका है उसने भी इस विषय को आधुनिक राजनीतिक समाजो की विवेचना पर पहुचकर प्राय छोड ही दिया है। कहने का तात्पय यह नही है कि इनमे से कोई भी लेखक सामाजिक समूहो के परिसचार की विवेचना करते समय अभिजन समूहो अथवा उच्चतर वर्गों, तथा समाज के निम्नतर अथवा अभिजनतर सस्तर के मध्य व्यक्तियो के परिसचरण की पूणतया उपेक्षा कर देता है। जैसाकि पीछे उल्लेख किया गया है शुपीटर ने इन विभिन्न प्रकार के परिसचारो के बीच बहुत सावधानीपूवक भेद किया है। मोस्का की भी यही स्थिति है हालाकि उसके विवेचन मे भेद बहुत स्पष्ट तौर पर नही उभरा है। इस विशिष्ट क्षेत्र मे केवल पिरेन अपना ध्यान नए वर्गों के निर्माण तक सीमित रखता है। किंतु इस मुद्दे पर भी उनके और परेतो के बीच महत्वपूण मतभेद है। यह मतभेद शुपीटर की रचना मे विशेषतया स्पष्ट तौर पर उभरा है। व वग व्यवस्था के भीतर व्यक्तियो और परिवारो के परिसचार की व्याख्या स्वय वग सरचना के चारित्रिक लक्षणो के आधार पर करते हैं परेतो की तरह व्यक्तियो के मध्य योग्यता और चरित्र की विभिन्नताओ के आधार पर नही।

अभिजनो के परिसचार की इस धारणा की सबसे अधिक चारित्रिक विशेषता यह है कि यह अभिजनो की प्रकृति तथा शेष समाज के साथ उनके सबधो के विवेचन म वास्तविक ऐतिहासिक विकास को दष्टिगत रखती है—कम से कम पाश्चात्य सभ्यता के क्षेत्र मे—और यह स्वीकार करती है कि प्रौद्योगिक तथा सामान्य सस्कृति म होने वाले परिवतनो ने वग-सरचना और राजनीतिक शक्ति के विभिन्न प्रकारो को जन्म दिया है।

परतु यद्यपि मोस्का, पिरेन्ने और शुपीटर की रचनाओं म अभिजनो के

यदि बहुत से समाजा के भीतर अभिजन के परिसचार के बारे मे सामान्यतया सही जानकारी जुटा दी जाए तो भी इस परिसचार और अन्य सामाजिक वास्तविकताओ के बीच सबध दर्शाने के लिए एक ऐसा कदम उठाना अनिवार्य होगा जिसका प्रयास पूर्ववर्ती लेखका म से किसी ने भी नही किया है। यह कदम है विभिन्न समाजो के बीच व्यापक और व्यवस्थित तुलनात्मक अध्ययन। परेतो कहता है कि अभिजन और अभिजनतर के बीच परिसचार एक सतत और नियमित वास्तविकता है। लेकिन क्या सचमुच एसा है ? क्या परिसचार की दर के मामले म विभिन्न समाजा के बीच ठास भिन्नताए नही हैं ? और यदि ऐसा है तब इन भिन्नताओ के क्या कारण हैं, तथा राजनीतिक क्षेत्र मे उनके क्या प्रभाव होते हैं ? मोस्का तथा अन्य लोग सुझाव देते है कि आधुनिक समाजा मे परिसचार की दर बहुत ऊची है तथा मोस्का के शब्दा म 'आधुनिक प्रतिनिधिमूलक राज्य के अतगत प्राय सभी राजनीतिक शक्तिया तथा प्राय सभी सामाजिक मूल्या के लिए समाज के प्रबध मे भाग लेना सभव हो गया है।' यहा जिन शोध प्रकरणा का उल्लेख किया गया है उनसे यह दृष्टिकोण पुष्ट नही होता किंतु आधुनिक औद्योगिक समाजा के बारे म यह कहना सही होगा कि वे अन्य प्रकार के समाजो की अपेक्षा अधिक सचारशील होते है। इस सबध म एक अन्य प्रश्न वैयक्तिक सचरणशीलता (मोबिलिटी) तथा अभिजना अथवा वर्गो के उत्थान और पतन के बीच सबध का है। क्या परेतो का यह कहना सही है कि क्रातिया तभी हाती है जब व्यक्तिया के परिसचरण की दर बहुत नीची हो जाती है ? इन प्रश्नो से ऐसी समस्याओ की एक शृखला उभर आती है जिनका समाधान वर्तमान जानकारी के आधार पर नही हो सकता, तथा जिनका पूर्ववर्ती लेखका न उल्लेख भर किया है हालाकि उन्होने अपने विचारा की अभिव्यक्ति व्याख्यापरक लगने वाले वक्तव्या के द्वारा की है।

जैसाकि पीछे कहा जा चुका है, परेतो ने अपना ध्यान अभिजनो के परिसचार म व्यक्तिया के इस सचार पर केंद्रित किया है। समूहा के सचार—अभिजनो के उत्थान और पतन—के बारे मे विस्तृत टीका करने वाले अन्य लेखक, मेरी दृष्टि म सामाजिक वर्गो के स्रोतो और विकास की मार्क्सवादी व्याख्या से बहुत आगे नही जा पाए हैं। वस्तुत वे सब समाज मे नए हिता के उदय को चरम महत्व प्रदान करते है। मोस्का की 'सामाजिक शक्तिया' बहुत कुछ मार्क्स के 'वर्गीय हितो' के सदृश हैं, पिरेन्ने सर्वत्र पूजीपतियो के नए समूहा के उदय का ही अध्ययन करता है, तथा शुपीटर सशस्त्र कुलीन वर्ग (क्षत्रिय वर्ग) के पतन की व्याख्या प्रधानत आर्थिक दृष्टि से करता है। वे महज

प्रमुख सामाजिक वर्गों के भीतर व्यावसायिक समूहों सरीखे उपसमूहों के विकास के अधिक विस्तृत और व्यापक विवेचन के मामले में ही मार्क्स से भिन्न मार्ग अपनाते हैं तथा मार्क्स ने आधुनिक पूंजीवाद के अंतर्गत जिस वर्गहीन समाज की संभावना देखी थी उसके बारे में वे मौन हैं। नई 'सामाजिक शक्तियों' के निर्माण में सांस्कृतिक और धार्मिक कारकों के प्रभाव पर बहुत बल देने के बावजूद मास्का न तो ऐसा कोई ऐतिहासिक उदाहरण प्रस्तुत करता है न उसकी सूक्ष्म समीक्षा ही करता है जिससे उसका यह दावा सिद्ध हो सके कि इस प्रकार के कारक बहुत बार सामाजिक संरचना में परिवर्तन लाने के मामले में गंभीर रूप से महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। अपनी एक परवर्ती कृति—कैपिटलिज्म, सोशलिज्म ऐंड डिमाक्रेसी—में शुंपीटर संस्कृति के भीतर उन परिवर्तनों की विवेचना करता है जो पूंजीवाद के पतन में सहायक सिद्ध होते हैं, किंतु वह इन परिवर्तनों को गौण तथा प्रधानतः अर्थव्यवस्था के परिवर्तन पर निर्भर मानता है।

यहां विशेष प्रश्न यह उठता है कि समाज में क्रांतिकारी परिवर्तनों की प्रकृति और उनके कारण क्या हैं ? इसकी विवेचना मार्क्स जैसे जागरूक व्यक्ति ने भी नहीं की। इस समस्या की परिभाषा मार्क्स द्वारा उन्नीसवीं शती की क्रांतियों की विवेचना में अपनाए गए परिप्रेक्ष्य की अपेक्षा अधिक व्यापक रूप में करनी होगी। सामाजिक समूहों के उत्थान और पतन में दो प्रक्रियाओं का पर्यवेक्षण करना होगा एक तो वह प्रक्रिया जिसमें नए सामाजिक स्तर के व्यक्ति कभी कभी *स्थापित राजनीतिक अभिजन के सदस्यों के साथ मेलमिलाप द्वारा क्रमिक रीति* से सत्ता के पद प्राप्त करते हैं, तथा दूसरी वह प्रक्रिया जिसमें एक उदीयमान सामाजिक समूह तथा समाज के स्थापित शासकों के बीच हिंसक मुठभेड़ होती है। राजनीतिक अध्ययनों का एक लक्ष्य जहां तक संभव हो वहां तक सामाजिक समूहों के इन विभिन्न प्रकारों के परिसंचार की दशाओं तथा कारणों की खोज करना है। परेतो ने इस समस्या को मुश्किल से छुआ भर है तथा क्रांतियों के बारे में उसने छुटपुट और असंबद्ध रूप में उल्लेख किया है। दूसरी ओर मोस्का अपनी पुस्तक 'दि रूलिंग क्लास' के एक पूरे अध्याय में क्रांति के विषय की विवेचना करता है किंतु उसकी कृति का यह सबसे अधिक निराशाजनक खंड है तथा उसमें चंद क्रांतिकारी कालों के विवरणात्मक ब्यौरे से अधिक कुछ नहीं है। यह नहीं कहा जा सकता कि मार्क्स के पश्चात अन्य समाजशास्त्रियों की कृतियों ने *हमारी क्रांतिकारी शताब्दी द्वारा जुटाई गई सामग्री की प्रचुरता के बावजूद* क्रांतिकारी परिवर्तनों की व्याख्या में कोई बड़ा योगदान किया है। हाल के वर्षों में इन समस्याओं की सबसे अधिक व्यापक और व्यवस्थित विवेचना निस्संदेह

सी० ब्रिटन ने अपनी पुस्तक 'दि अनाटामी आफ रेवोल्यूशन' (क्राति की सरचना)[14] मे की है। ब्रिटन ने क्रातिकारी परिवतन के लिए अनुकूल दशाआ म समाज की आर्थिक प्रगति, कटु वगविरोध, बुद्धिवादियो द्वारा शासक वग के समथन की नीति के परित्याग, अक्षम शासकीय यत्र, तथा राजनीतिक दृष्टि मे अकुशल शासक वग की गणना की है। ये दशाए उन दशाआ से बहुत अधिक भिन्न नही हैं जिनका उल्लेख माक्स ने विशेषत अपनी प्रारभिक रचनाआ म अनेक स्थलो पर किया है। दानो मे इतना ही अतर है कि ब्रिटन ने स्वय क्रातिकारी वग की रचना पर बहुत कम ध्यान दिया है, किंतु इन दशाओ का निरूपण कही अधिक कठोर अध्ययन के ढाचे के तौर पर किया गया है। इस प्रत्ययमूलक ढाचे की उपयोगिता का सही महत्व उसे बीसवी शताब्दी की क्रातिया पर लागू करके ही समझा जा सकता है। इनम से अधिकाश क्रानिया औद्योगिक दृष्टि से पिछडे हुए देशो म हुई है, जिनमे ब्रिटन द्वारा उल्लिखित दशाए (अथवा लक्षण) बहुत अधिक मात्रा मे विद्यमान है अमीर और गरीब के बीच की गहरी खाई द्वारा समुत्पन्न घोर वगविरोध, पाश्चात्य सभ्यता म रगे हुए बुद्धिवादियो द्वारा पक्ष परिवतन, बहुधा माक्स के प्रभाव की स्वीकृति, तथा आर्थिक और अधिक प्रगतिशील समाजा के प्रभाव की समस्याओ का सामना करने के मामले मे परपरागत शासक वग की अक्षमता।

इन परवर्ती रचनाआ से यह बात स्पष्ट रूप से उभर आती है, तथा माक्स के दशन की पुष्टि करती है कि आधुनिक क्रातियो की व्याख्या छाटे अभिजन समूहो की गतिविधियो के आधार पर नही की जा सकती, वे सपूण वर्गो के कार्यो का परिणाम होती है। इन वर्गो के लिए नेतृत्व आवश्यक होता है, किंतु नेताआ के अभिजन-समूह का उदय वग के भीतर से तथा कुछ सीमा तक उसकी रचना और उसके विकास के साथ-साथ होता है। नेता अभिजन बहत्तर वग की रचना नही करता न वह स्वत क्रातिकारी आदोलन को ही जन्म दे सकता है। मेरी राय म यही बात शक्ति (सत्ता) के सोपानक्रम म समूहो की स्थिति म होने वाले अधिक क्रमिक परिवतना के मामले म भी सही है। इसका कारण यह है कि जनसख्या के भीतर अपेक्षाकृत विशाल समूहा की स्थिति इस प्रकार बदलती है जिससे नए अभिजना का निर्माण सभव हा जाता है तथा वे कालातर म समाज के स्थापित शासका से राजनीतिक सत्ता का कुछ भाग छीन सकते हैं।

व्यक्तियो के परिसचरण के अध्ययन की भाति समूहा के परिसचार के अध्ययन म भी हम सामग्री के सग्रह म अनक कठिनाइया का सामना करना पडेगा। दोना अध्ययन कुछ सीमा तक समवर्ती है, तथा दोनो म एकसी समस्याए उत्पन्न हाती हैं,

क्योंकि नए सामाजिक समूहों की रचना, अथवा पुराने समूहों के पतन पर रोशनी डालने के लिए व्यक्तियों के संचार का पता लगाना आवश्यक हो सकता है। तथापि, अधिकांश मामलों में सामाजिक समूहों के उत्थान और पतन का पता लगाना कुछ सीमा तक आसान होता है। इसका कारण यह है कि इस बात की काफी संभावना बनी रहती है कि उनके अस्तित्व और उनकी गतिविधि के ब्यौरे का वधानिक ग्रंथों अथवा उनकी समकालीन पत्र पत्रिकाओं में उल्लेख मिल जाए अथवा अन्य सामाजिक संस्थाओं के बारे में उपलब्ध ज्ञान जैसे भूमिस्वामित्व की व्यवस्थाओं और धार्मिक अथवा सैनिक संगठन के आधार पर उनके बारे में निष्कर्ष निकाल लिए जाएं। किंतु हम अभिजन परिसंचार के मूल ही किसी भी पक्ष का अध्ययन करें उससे संबंधित ऐतिहासिक ज्ञान की पूर्ति बीसवीं शताब्दी के सामाजिक संचारों के अध्ययनों द्वारा ही सकती है। यहां दो बातें ध्यान देने योग्य हैं—पहली तो यह कि पीछे जिस ऐतिहासिक ज्ञान का उल्लेख किया गया है उसे काफी मात्रा में विस्तृत किया जा सकता है तथा दूसरी यह कि बीसवीं शताब्दी के सामाजिक संचारों के अध्ययन उन लेखकों की पहुंच से परे थे जिन्होंने अभिजनों के बारे में अभी तक लिखा है। गत दो दशकों के दौरान औद्योगिक समाजों में अभिजनों का परिसंचार असंख्य शोधों का विषय रहा है तथा अल्पविकसित देशों में भी अब उसे समान महत्व दिया जा रहा है। अगले दो अध्यायों में विविध प्रकार के समाजों से संग्रहीत साक्ष्य का पुनरीक्षण करूंगा। इससे हम कुछ ऐसे निष्कर्षों (सामान्यीकरणों) का निरूपण कर सकेंगे जिनके पीछे यहां समालोचित निष्कर्षों की अपेक्षा अधिक पर्याप्त प्रमाण हों।

## पाद टिप्पणियां

1 दि माइंड ऐंड सोसायटी II )पृ० 1430 यही विचार उसने अपनी पूर्ववर्ती पुस्तक 'लेस सिस्तम्स सोशियालिस्तेस' में पृ० 28 30 पर ठीक इसी रूप में व्यक्त किया है
2 परेतो के अनुसार तत्सम्बन्धित कार्यवाही के प्रमुख क्षेत्र आर्थिक (अथवा व्यापारिक) और वैज्ञानिक हैं वह इन क्षेत्रों में, विशेषकर प्रथम क्षेत्रों में व्यवहार (आचरण) की विवेकसम्मतता के बारे में अतिशयोक्ति करता है तथा सामाजिक कार्य के अन्य रूपों जैसे राजनीति में विवेकसम्मतता की मात्रा की अवमानना करता है
3 अवशिष्टों की धारणा की आलोचना मारिस जिंसबर्ग ने अपने निबंध 'दि सोशियालाजी आफ परेतो' में विस्तार से की है उसमें उसने इस विषय पर परेतो के विचारों की अस्पष्टता और अपर्याप्तता को खोलकर रख दिया है उनकी पुस्तक 'रीजन ऐंड अनरीजन इन सोसायटी' देखिए
4 कोलाबिंस्का पूर्व उल्लिखित पृ० 9 'सामान्य तौर पर जो अभिजन अपने बाहर

के तत्वो को ग्रहण करते हैं वे उन अभिजनो की अपेक्षा अधिक टिकाऊ रहते हैं जो इस प्रकार के तत्वो को ग्रहण नही कर पाते

5 देखें पृ० 29

6 बुलेटिन ड ला एकेडमी रायेल ड बेल्जीक मई 1914 इसका एक अगरेजी सस्करण अमरीकन हिस्टारिकल रिव्यू के अप्रल 1914 अक मे प्रकाशित हुआ था जिसमे अनेक पाद टिप्पणिया छोड दी गई थी

7 हमारे इस विवेचन पर इस बात का कोई असर नही पडता कि पिरेने ने इस विकास का उद्गम बहुत प्रारभिक काल अर्थात ग्यारहवा शताब्दी म खोजा

8 मूलत आर्किव फूर साजियेलविशनशाफ्ट ऐंड सोज्यिेलपालीटीक अक 57 1957 म प्रकाशित अगरेजी अनुवाद जोसफ ए० शुपीटर के ग्रथ 'इपीरियलिज्म ऐंड सोशल क्लासेज' म दिया गया है

9 विलियम मिलर द्वारा सपादित मन इन बिजनेस म विलियम मिलर अमेरिकन *हिस्टारियस ऐंड दि बिजनेस एलीट यह दृष्टिकोण अभिजना की भरती के* तुलनात्मक अध्ययन से पुष्ट होता है उस अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि जिन चौदह देशा के बारे म सामग्री उपलब्ध थी उनमे से किसी मे भी जनसख्या के शारीरिक श्रमिक स्तर से उच्चतर स्तरो की दिशा म कोई महत्वपूर्ण सचार नही है एस० एम० मिलर 'कपेरेटिव साशल मोबिलिटी' करेंट सोसियालाजी 9 (I) 1960 भी देखिए

10 एस० एम० मिलर पूर्व उल्लिखित

11 वही पृ० 309

12 राबट एम० माश, दि मडरिन दि सकुलेशन आफ एलीटस इन चाइना 1600-1900

13 विशषतया डब्लू० एल गटसमन दि ब्रिटिश पालिटिकल एलीट और ड्वेन मारविक द्वारा सपादित पालिटिकल डिसीजन मेकर्स म प्रकाशित मात्तई दागन का निबध दि स्टडी आफ फ्रच डेपुटीज देखिए

14 अमेरिकन जनरल आफ सोशियालाजी 50 (I) 1944 मे प्रकाशित एल० गौटसाचक का निबध नाजेज आफ रेवोल्यूशन तथा समस्याओ और साहित्य की सक्षिप्त समीक्षा के लिए यूरोपियन जनरल आफ सोसियालाजी II (I) 1961 म *प्रकाशित राल्फ डहरेनडोर्फ का निबध यूबार ईनिग प्राब्लेम डर सोजियोलाजिस्चन* थियोरी डर रेवोल्यूशन भी देखिए

क्या सशोधन किए हैं दूसर इस बात पर भी ध्यान देना होगा कि सोवियत ढग के समूहवादी (समष्टिवादी) समाजो म उनके प्रभाव की प्रकृति क्या है।

इन तीन समूहो मे से बुद्धिवादी समूह की परिभाषा तथा उसके सामाजिक प्रभाव का निर्धारण कर पाना सबसे कठिन काम है। पहले हम 'बुद्धिवादियो' तथा बुद्धिजीविया के बीच भेद करे। बुद्धिजीवी (इटेलीजेंशिया) शब्द का प्रयोग पहले पहल रूस मे उन लोगा के लिए हुआ जो विश्वविद्यालयीन शिक्षा प्राप्त करके व्यावसायिक योग्यता उपार्जित करते थे। कालातर मे अनक लेखका ने इस वग के अतगत उन लोगा को शामिल कर डाला जो शारीरिक श्रम से इतर व्यवसाया म काम करत है। इस अथ म यह शब्द 'नव मध्यवग' का समानाथक ठहरता है जिसके अतगत उच्चतर और निम्नतर सस्तरा के बीच भेद किया जा सकता ह—उच्चतर सस्तर म उन लोगा की गणना की जा सकती है जो व्यावसायिक धधा म लगे ह तथा निम्नतर म उनकी जो प्राय एक-सरीय कृत्यो म लगे है, जसे लिपिक (क्लक) तथा प्रशासनिक कमचारी। दूसरी ओर बुद्धिवादी सामा यत एक छोटा सा समूह है जो प्रत्यक्षत विचारा के सृजन सचार तथा समालोचना की दिशा मे योगदान करता है। बुद्धिवादियो म लेखको कलाकारो विज्ञानिया, दाशनिका, धार्मिक चितका, समाजशास्त्रियो राजनीतिक टीकाकारा आदि का समावश होता है। इस समूह की सीमाओ का निर्धारण बारीकी के साथ करना बहुत कठिन काय है त गा उसके निम्नतर स्तर मध्यवर्गीय धधा —जैसे अध्यापन और पत्रकारिता—के साथ समाहित हो जात हैं किंतु उसका प्रमुख चारित्रिक लक्षण—समाज की सस्कृति के साथ पत्यक्ष सपक—पर्याप्त रूप से स्पष्ट है।

बुद्धिवादी प्राय सभी समाजा मे मौजूद होते है। अशिक्षित समाजा म वे जादूगरो पुराहिता कवियो चारणा भाटो और वशावलीविदा आदि के रूप मे रहते हैं, तथा शिक्षित समाजा म दाशनिका कविया नाटककारा, अधिकारिया अथवा वकीला के रूप म। किंतु उनके कृत्या और सामाजिक महत्व मे बहुत विविधता बनी रहती है। कुछ समाजो म बुद्धिवादी शासक अभिजन के बहुत समीप पहुच जात है। चीन म लितराती यानी साहित्यिका ने लबी अवधियो के भीतर इसी प्रकार के एक शासक सस्तर का निर्माण कर लिया था जो मैक्स वेबर के मतानुसार कुलीन जन माधारण को दी जाने वाली शिक्षा का प्रतिफल था।[1] वह वशगत अथवा असमावशकारी (एक्सक्लूसिव) समूह नही था क्योकि उसम प्रवेश सावजनिक प्रतियोगिता परीक्षा द्वारा होना था। किंतु व्यवहार म सामती काल के दौरान उसके भीतर

उसने 'राज्य पूंजीवाद' कहा, नए मध्यवग के साथ जुडा होगा। मधायस्की स्वय समाजवाद के भविष्य के बार म पूणतया निराशावादी नहीं है, तथा उसका मत था कि शिक्षा म व्यापक सुधार के द्वारा बुद्धिवादियो के प्रभुत्व म कमी हो सकती है, और क्रमश एक वगहीन समाज की रचना की जा सकती है। परतु उसकी कृतियो पर समग्रत विशेष ध्यान नहीं दिया गया तथा मुख्यत समाजवाद के विरोधिया न 'क्रातिकारी बुद्धिवादियो' की धारणा को उठा लिया। मूलत इस विचार का प्रतिपादन मैक्स नोमेड ने तथा बाद म एच० डी० लासवल ने किया। लासवल ने वतमान काल म बहुप्रचलित इस मत का प्रतिपादन किया कि बीसवी शताब्दी की अधिकाश क्रातिया उन बुद्धिवादियों के मागदशन म हुइ जो समाजवाद के झडे के नीचे स्वय को प्रस्थापित करने मे सफल रहे।

कुछ अन्य लेखको ने बुद्धिवादियो की भूमिका की कल्पना नितात भिन्न रूप में की है। हम यह अध्ययन कर चुके हैं कि मोस्का बुद्धिवादियो का एक न्यूनाधिक स्वतत्र समूह के रूप मे पूजीपति (बुर्जुआ) और सवहारा (प्रालितारियत) के बीच अवस्थित मानता था तथा उसे यह आशा थी कि यह समूह एक नए और अधिक सुयोग्य अभिजन का सृजनबिंदु बन सकता है। ते ओरिका डी ई गवर्नो ए गवर्नो पार्लामितेयर के अतिम पृष्ठो म उसने अपनी आशाओ की अभिव्यक्ति इस प्रकार की है यदि थोडे समय के लिए भी अपने निजी हितो की उपक्षा करनवाला तथा अपेक्षित तटस्थतापूवक सामान्य हित को पहचानने-वाला काई वग है तो वह निश्चित रूप से वही वग है जो अपने बौद्धिक प्रशिक्षण के वरदानस्वरूप उन गुणो से विभूषित होता है जो चरित्र की श्रेष्ठता, चिंतन की विस्तत क्षितिज तथा मेधाओ को विराटता प्रदान करते हैं वह वग, और वही वग भविष्य के सकट को टालने के लिए स्वत वतमानकालीन हितो का बलिदान करेगा।'

कई दशाब्दियो के बाद ठीक ऐसी ही कल्पना का निरूपण काल मानहाइम ने किया। उसने एक ऐसे 'सामाजिक दृष्टि से असलग्न बुद्धिवादी वग' के भीतर अपेक्षाकृत वगहीन सस्तर का दशन किया, जिसके सदस्यो की भरती सामाजिक जीवन के नित्य वद्धिशील सवसमावेशकारी क्षेत्र से हो और वे शिक्षा के सूत्रो मे परस्पर आबद्ध हो तथा जिसमे व समस्त हित समाहित हो जाए जो सामाजिक जीवन म परिव्याप्त हैं।[5] मानहाइम को इन लक्षणो के कारण बुद्धिवादियो म समाज के अपेक्षाकृत समग्र तथा तटस्थ बोध, विशेषत उसके भीतर विद्यमान विभिन्न हितो के बोध, तथा अधिक व्यापक सामाजिक

हिता की वृद्धि के लिए स्वतत्र काय करने की क्षमता का दशन होता है।

हमने पीछे जिन दो भिन्न विवरणा का उल्लेख किया है उन दोनो म कुछ न कुछ सचाई अवश्य है। बुद्धिवादियो ने उग्रवादी तथा क्रातिकारी आदोलनो मे भाग लिया है और वे अब भी उनमे भाग लेते हैं। 1956 मे पोलड और हगरी की घटनाए, क्यूबा की क्राति, तथा अनेक देशो के साम्राज्यवाद विरोधी आदोलन इस सत्य के साक्षी है। किंतु समाजवादी आदोलन के प्रति बुद्धिवादिया के आकपण की व्याख्या इस धारणा के अतिरिक्त अय रीतिया से भी की जा सकती है कि बुद्धिवादी वग समाजवाद तथा वगहीन समाज के भ्रामक नारा के नीचे सत्ता के लिए सघप करनेवाला एक नया अभिजन है। पाश्चात्य समाजो मे श्रम आदोलन महज प्रतिरोध आदोलन न था। वह पहले से तैयार धार्मिक विंबो म अपनी आकाक्षाओ की अभिव्यक्ति करनेवाले दासो अथवा किसानो के तात्कालिक विद्रोहो से भिन्न था। उसमे प्राय आरभ से ही समाज के बारे मे एक सिद्धात निहित था, जिसके विस्तत निरूपण मे बुद्धिवादियो ने अवश्य ही महत्वपूण भूमिका अदा की। वे समाजवादी आदोलन की ओर इसलिए आकर्षित हुए क्योकि उसम उन्ह सम्मानपूण स्थान, तथा कुछ माला म सामाजिक सगठन का एक आदश मिल गया जिसम विवेकसगतता, निष्पक्षता तथा परलोकवादिता तक के तत्व विद्यमान थे जो स्वय बौद्धिक जीवन के लिए महत्वपूण माने जाते ह। इतना ही, या यो कह कि इससे भी अधिक महत्वपूण एक अन्य कारक था बुद्धिवादियो का सामाजिक उदगम। अनेक आधुनिक समाजो मे विश्वविद्यालय, तथा सामान्यतया सभी बौद्धिक व्यवसाय, समाज के निम्नतर सस्तर के मेधावी व्यक्तिया के महत्वपूण पदा पर पहुचने के प्रमुख साधन रहे हैं। परिणामत, बुद्धिवादी अभिजन की सामाजिक सरचना अन्य अभिजनो की सामाजिक सरचना स आमतौर पर काफी भिन्न रही है, तथा यह सभावना हमेशा बनी रही है कि अनक बुद्धिवादी श्रमिकवर्गीय आदोलन का साथ देंगे।

इस दष्टिकोण से यह निष्कप निकलता है कि बुद्धिवादी अभिजन अपने निजी व्यावसायिक हितो म व्यस्त होने के बजाय अपने आपको प्रमुख सामाजिक वर्गों के साथ जोड लेगा अथवा उसकी निष्ठा उनके बीच विभाजित हो जायेगी। दूसर दष्टिकोण के अनुसार बुद्धिवादी एक ऐसे समूह का निर्माण कर लेत हैं जो समाज के बारे मे तटस्थ दृष्टि अपनाने तथा निरतर समग्र समाज के कतिपय समान हिता की रक्षा करने म समथ होता है। यह दष्टिकोण इस बात से इनकार करता जाता है कि बुद्धिवादियो का अपना निश्चित समूह हित विकसित होने

की सभावना है, तथा साथ ही वह बुद्धिवादी अभिजन को वगमाल के ऊपर प्रतिठिप्त कर देता है।

इनमे से काई भी विवरण आधुनिक समाज मे बुद्धिवादिया की स्थिति की विविधता और उसकी परिवतनशील प्रकृति के माथ न्याय नही करता। पहली बात तो यह है कि यूरोप और उत्तरी अमरीका के औद्योगिक देशो के बीच महत्वपूण राष्ट्रीय भेद है। रेमड ऐरन ने 'दि ओपियम आफ इटेलेक्चुअल्स' (बुद्धिवादियो की अफीम) म बताया है कि फासीसी बुद्धिवादिया को उच्च कोटि की सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त है। वे राजनीतिक जीवन के प्रशासनिक तथा व्यावहारिक पक्षो के साथ उतना निकट से सबधित नही हैं, तथा ब्रिटेन, जरमनी और सयुक्तराज्य अमरीका के बुद्धिवादिया की अपक्षा अपन समाज के अधिक उग्र आलोचक है। 1871 से 1958 तक फ्रास के प्रतिनिधि सदन (चेंबर आफ डेपुटीज) के सदस्या के बारे मे अध्ययन से जाहिर हुआ है कि इस सपूण काल म निर्वाचित कुल 6,000 प्रतिनिधिया म से आधे से अधिक प्रतिनिधि व्यापक अथ म बुद्धिवादी—लेखक, विश्वविद्यालयो के प्राध्यापक, वकील, विज्ञानी इजीनियर विद्यालया के अध्यापक आदि—थे। उस अध्ययन म अत मे कहा गया है कि 'कम से कम फ्रास मे तो तीसर गणतत्र की भाति चौथे गणतत्र म भी विधान सभा के भीतर राजनीतिक वाद विवाद मे सबसे अधिक गर्मी बुद्धिवादी ही पैदा करते थे। व बहुधा आदर्शों के बार म उग्रतम चर्चाए करते थे। उनके 'मस्तिष्क' इसी प्रकार से तैयार हुए थे।' इसका अथ यह है कि वे समस्याओ का व्यक्तिगत के बजाय वस्तुगत स्वरूप म तथा प्राय ईमानदारी-पूवक प्रस्तुत करन म पटु थे, और उनका प्रतिपादन याग्यतापूवक करते थे। किंतु इस पटुता का अथ यह था कि वे प्राय अयथाथमूलक हल पेश करत और ब्यौरे की बाता पर तो ध्यान दते किंतु अनिवाय तत्वा की उपेक्षा कर दत थे। इस तरह वे अयथाथ समस्याओ की कल्पना करके तथा उनके बार म आपसी मतभेद के द्वारा ससदीय विवादा को व्यथ ही उलझा देते तथा तूल देत थे।[6] पटिट लारोसे म अभिलिखित फ्रास के महापुरुपा के बारे मे अध्ययन करन से ज्ञात होता है कि उस सूची म एकातिक अथ मे बुद्धिवादियो—लेखका, कलाकारा और विद्वाना—का कितना प्रमुख स्थान है और इस प्रकार उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा कितनी अधिक मानी गई है। अनक शताब्दिया की दीघ अवधि के दौरान फास के महापुरुपा म बुद्धिवादिया का सख्या अन्य अभिजना की अपेक्षा सबसे अधिक है, यानी कुल सख्या के आधे के बराबर। उनकी यह प्रधानता उन्नीसवी शताब्दी के अत तक बढ़ती चली गई। उपयुक्त अध्ययन मे उस समय तक के तथ्यो का ही समावश किया गया है।[7] ब्रिटेन के

बुद्धिवादियो को फ्रास के बुद्धिवादियो की भाति सामाजिक प्रतिष्ठा नही मिल पाई। वे समद की सदस्यता के माध्यम से अथवा सामाजिक चिंतन तथा आलोचना की किसी सामूहिक गतिविधि द्वारा राजनीतिक जीवन मे प्रमुख स्थान प्राप्त नही कर पाये। बुद्धिवादियो के समूह विरले अवसरो पर ही जनता का ध्यान बडी मात्रा मे आकर्षित कर पाये अथवा प्रत्यक्ष राजनीतिक प्रभाव डालते हुए प्रतीत हुए। गत डेढ शताब्दी के दौरान इसके अधिक स्पष्ट उदाहरण उपयोगितावादी दार्शनिको, ईसाई समाजवादियो आदि फेबियन विचारको तथा वामपक्षीय बुक क्लब और इस शताब्दी के चौथे दशक मे फासिज्म विरोधी सगठनो के साथ जुडे हुए बुद्धिवादियो ने प्रस्तुत किए है।

बौद्धिक अभिजन का एक अन्य महत्वपूर्ण चारित्रिक लक्षण यह है कि अधिकाश देशो और अधिकाश कालो म वह सबसे कम समरस अथवा सुबद्ध अभिजन रहा है तथा उसने सास्कृतिक और राजनीतिक प्रश्नो पर बहुत मत वैविध्य का प्रदर्शन किया है। सभी बुद्धिवादी राजनीतिक दृष्टि से वामपथी कदापि नही रहे हैं न इस समय ही वैसा है। पश्चिमी यूरोपीय देशो और सयुक्त राज्य अमरीका के अधिकाश बुद्धिवादी दक्षिणपथी हैं। इस बात के काफी प्रमाण उपलब्ध है कि बुद्धिवादियो के राजनीतिक दृष्टिकोणो पर उनके सामाजिक उदगमो का बहुत भारी प्रभाव पडता है। उदाहरण के लिए, फ्रास म पूर्ववर्ती इकोल लिब्रे डेस मायसज पालीतीक्स' के विद्यार्थियो की भर्ती प्राय समग्रत उच्चतर वर्ग म से होती थी तथा वे अपने दृष्टिकोण के मामले म घोर दक्षिणपथी होते थे और 'इकोल नारमेल के विद्यार्थी अधिक व्यापक मध्यवर्ग, श्रमिक वर्ग और कृपक वर्ग से आते तथा दृष्टिकोण के मामले म मुख्यतया वामपथी होते थे। इन दोनो स्कूलो के बीच स्पष्ट रूप से अतर दिखाई पडता था। एक बात स्पष्ट नही है कि क्या बुद्धिवादियो पर उनके सामाजिक वर्गस्रोतो का उनकी गतिविधि तथा जीवनप्रणाली के कारण अन्य अभिजनो की अपेक्षा कम प्रभाव पडता है? इसके अतिरिक्त बुद्धिवादियो के सामाजिक दृष्टकोणो मे महत्वपूर्ण ऐतिहासिक उतार चढाव मिलते हैं जो समाज मे होनेवाले अधिक व्यापक परिवर्तनो का परिणाम होते हैं। इस शताब्दी के चौथे दशक म यूरोपीय बुद्धिवादियो म से अधिकाश तथा सयुक्त राज्य अमरीका के कतिपय बुद्धिवादी राजनीतिक वामपक्ष के हिमायती थे किंतु छठे दशक के प्रारभिक वर्षो स दक्षिण पक्ष की ओर स्पष्ट झुकाव नजर आता है जिसके पीछे लोककल्याणकारी विधिनिर्माण के प्रभाव के अतर्गत सामाजिक दशाओ मे होनेवाले परिवर्तन अथवा स्वय बुद्धिवादी अभिजन के चरित्रपरिवर्तन का हाथ रहा है।

इस सदभ मे औद्योगिक समाजो के अतगत बुद्धिवादियो के अर्वाचीन इतिहास के दो प्रमुख लक्षणो के बारे म विचार करने की आवश्यकता है। विश्वविद्यालयीन शिक्षा के विस्तार तथा वजानिक प्रौद्योगिक एव व्यावसायिक धधो म वद्धि के साथ विशेषत निम्नतर स्तरो पर बुद्धिवादी अभिजन के आकार तथा आतरिक विभदीकरण दानो म वद्धि हो गई है। इसके साथ ही बुद्धिवादी अभिजन के भीतर विभिन समूहो के आपक्षिक महत्व मे परिवतन हो गए हैं, उसम सामान्य सस्कृति और सामाजिक चिंतन के अधिक साहित्यिक तथा दाशनिक व्याख्याकारो की अपक्षा विविध प्रकार के विशेषनो का वचस्व स्थापित हो गया है। प्राकृतिक विज्ञानो के विज्ञानियो की गतिविधि और आवश्यकताओ के प्रति जनता के आकषण की प्रवलता तथा परामशदायी निकायो की सदस्यता, और शासन तथा प्रशासन म अधिकाधिक प्रतिनिधित्व (यथा, विनान मत्रालय की स्थापना) द्वारा सावजनिक नीतियो के निर्माण म विज्ञानियो को अधिकाधिक भाग देन के लिए डाला जानेवाला दवाव स्पष्टत उनके वढते हुए सामाजिक महत्व का द्योतक है। सभवत इन स्थितियो के निर्माण के कारण ही बुद्धिवादी समग्रत समाज की आलोचना के मामले म पहले की अपेक्षा सौम्य हो गए हैं तथा व जिन औद्योगिक समाजो म जीत है उनकी जटिल गतिविधियो म से उत्पन होनेवाली अल्पकालिक तथा सुनिश्चित समस्याओ के हल खोजन म दिलचस्पी लेते लगे हैं। इस अथ म बुद्धिवादियो का प्रभाव मोस्का द्वारा अपक्षित दिशाओ म से एक दिशा म बढा है, किंतु परिसीमित और विशेषज्ञतापूण कार्यों मे अपनी वढती हुई व्यस्तता के कारण उनमे पृथक समूह सगठन अथवा विचारधारा का विकास नही हो पाता और वे शासक अभिजन की स्थिति प्राप्त करने के लिए उपयुक्त नही रह जाते। वतमान काल मे अल्पविकसित देशो मे बुद्धिवादी प्राय एक सुबद्ध और उग्र अभिजन का रूप ग्रहण कर लेते हैं जो राजनीतिक जीवन मे एक महत्वपूण भूमिका निबाहता है।

सभावित शासक अभिजन के रूप मे ध्यान आकर्षित करनेवाला एक अन्य समूह उद्योगो के प्रबधको का है। एक समय तक आधुनिक समाज मे प्रबधको का उदय, प्रधानत जेम्स बनहम के प्रबधकीय क्राति[8] सिद्धात के प्रभाव के अतगत समाजशास्त्रीय विवाद का केंद्रबिंदु बना रहा। इस सिद्धात के मूल विचार का प्रतिपादन बनहम से बहुत पहल वबलेन ने द इजीनियस ऍंड दि प्राइस सिस्टम' (इजीनियर और मूल्यव्यवस्था) म कर दिया था। वेवलेन ने कहा कि पूजीवाद अर्थात प्रमुखत उत्पादन के साधनो के स्वामियो द्वारा निदेशित उत्पादन व्यवस्था औद्योगिक ससाधनो के अकुशल उपयोग के कारण

वस्तुत समाज म शासक-अभिजन बनता जा रहा है। वह प्रबधकों के दो प्रमुख वर्गों म भेद करता है विज्ञानी और प्रौद्योगिकीविद, तथा उत्पादनप्रक्रिया के निदेशक (डायरक्टस) और समायोजक (कोऑर्डिनेटस)। बनहम इन निदेशकों और समायोजकों को श्रेष्ठतम प्रबधक मानता है, तथा इनके और वब्लेन द्वारा वर्णित इजीनियरों के बीच इस तथ्य के बावजूद भेद करता है कि इन निदेशकों और समायोजकों म स अनक के पास वैज्ञानिक और प्रौद्योगिक योग्यताए हो सकती ह। वस्तुत व व्यापारिक निगमों के सर्वोच्च अधिशासी अधिकारी अथवा कपनी निदेशक (डायरक्टस) होत हैं, तथा समाज म उनकी स्थिति का बनहम द्वारा किया गया विश्लेषण बहुत बडी मात्रा म इस प्रस्थापना पर निभर करता है कि आधुनिक औद्योगिक समाजो मे उद्योगों के स्वामित्वों और नियत्रण के बीच उग्र पृथक्करण हो गया है। उन्नीसवी शताब्दी म जिन समाजशास्त्रियों न सयुक्त पूजी कपनियों के विकास के परिणामों का अवलोकन किया था वे, स्वय मार्क्स भी इस प्रकार के पथक्करण की कल्पना स परिचित थ, किंतु आधुनिक विराट निगम के उदय के कारण उसका महत्व बढ गया। इस महत्व की पहली बार व्यवस्थित शोध ए० ए० बरले और जी० सी मीस ने अपनी पुस्तक 'दि माडन कार्पोरेशन एड प्राइवट प्रापर्टी' (आधुनिक निगम और निजी सपत्ति) म की। बनहम का तक यह है कि प्रबधक उस आर्थिक सत्ता का हथिया रह हैं जो इससे पूव उद्योगो के पूजीपति स्वामियों के हाथों म थी तथा इस प्रकार वे समूची समाजव्यवस्था के निर्माण की शक्ति प्राप्त करते जा रहे हैं। उसकी प्रस्थापना के अनुसार प्रबधक एक पृथक सामाजिक समूह के रूप म गठित होने के अतिरिक्त सत्ता के सघष म अपने समूह के हितों की चेतना से सयुक्त और सुबद्ध समूह भी बन जाएग। बनहम इस प्रस्थापना के समथन म यह दर्शाने की कोशिश करता है कि पूजीवाद के अतगत व्यक्तिवादी विचारधारा का स्थान प्रबधकीयतावादी विचारधारा लेती जा रही है। इस तक के पक्ष मे वह जरमनी और इटली म फासीवादी निगमात्मक राज्य (जो टिक नही पाया), सोवियत (जिसे काफी सतोषजनक रूप मे प्रबधकीय समाज कहा गया है—यह बात मैं इसी अध्याय मे आगे सिद्ध करने की चेष्टा करूगा), तथा सयुक्त राज्य अमरीका और अन्य पाश्चात्य देशों मे सीमित मात्रा म राज्य नियोजन के अनुभव प्रस्तुत करता है।

कालातर म होनेवाली आलोचनाओ से यह बात स्पष्ट हो गई कि आधुनिक औद्योगिक समाजो म स्वामित्व और नियत्रण के पृथक्करण की मूल धारणा अधिक से अधिक अर्द्धसत्य है। उद्योगो के स्वामियो और प्रबधको म

के भूत' तथा मार्क्स के अनुयायियों के साथ लंबे विवाद के दौरान हुआ। समाजवाद के प्रति वेबर के विरोध को इस आशका से अभिप्रेरणा मिली कि उसके फलस्वरूप वैयक्तिक स्वतत्रता समाप्त हो जाएगी और सामाजिक जीवन का प्राय पूर्णत अभिसैयीकरण हो जाएगा। जहा मार्क्स ने आधुनिक समाजो के इतिहास में एक छोटे से पूजीपति वर्ग के हाथो में उत्पादन के साधनो के सकेंद्रण का दर्शन किया तथा बताया कि मानवीय स्वतत्रता मे अभिवृद्धि के युग का सूत्रपात करने की दिशा मे श्रमिको द्वारा इस वर्ग के स्वामित्व का निर्मूलन एक प्रारभिक कदम होगा, वहीं वेबर ने प्रशासन के साधनो (उपकरणो) के सकेंद्रण की प्रक्रिया का दर्शन किया जो समाजवादी समाज मे चरम स्थिति मे पहुच जाएगी, तथा जिसके परिणाम व्यक्तिगत स्वतत्रता के लिए बहुत भयकर होगे। 'आधुनिक राज्य के विकास का उपक्रम राजा के कार्यों द्वारा हुआ। उसने स्वायत्त और अपने से अलग अधिशासी सत्ता के निजी स्वामियो तथा स्वतत्र रूप से प्रशासन युद्ध तथा वित्तीय सगठन के साधनो से सुसज्जित व्यक्तियो की सत्ता छीनने का पथ प्रशस्त किया। यह समूची प्रक्रिया हूबहू स्वतत्र उत्पादनो के क्रमिक स्वामित्वहरण द्वारा पूजीवादी उद्यम व्यवस्था के विकास के समान है। अत मे कहा जा सकता है कि आधुनिक राज्य राजनीतिक सगठन के समस्त साधनो को नियत्रित करता है।[13]

वेबर यह नही मानता था कि राजनीतिक अधिकारीवर्ग नौकरशाही की शक्ति पर अकुश लगा सकता है। लोकतत्री व्यवस्था के अतर्गत भी वह इसे सभव नही मानता। सामान्य दशाओ मे पूर्ण विकसित नौकरशाही की शक्ति अत्यत व्यापक होती है। 'राजनीतिक स्वामी' अपने आपको प्रशासन के प्रबंध के अतर्गत विशेषज्ञ' के विरुद्ध नौसिखुए की स्थिति मे पाता है। नौकरशाही जिस स्वामी की सेवा करती है वह भले ही 'विधायी अभिक्रम', 'मतसग्रह' तथा अधिकारियो को पदच्युत करने के अधिकार से लैस 'जनता' हो अथवा अधिक कुलीनवर्गीय या अधिक लोकतत्री आधार पर निर्वाचित और अविश्वास का प्रस्ताव पास करने की शक्ति से लैस ससद हो, यह स्थिति अपरिवर्तनीय रहती है।'[14]

निस्सदेह वेबर की व्याख्या पर प्रशिया की नौकरशाही का तथा जरमनी मे उदारवादी राजनीतिज्ञो की प्रभावहीनता का अनावश्यक प्रभाव पडा, तथापि अनेक प्रेक्षको ने ऐसा महसूस किया है कि हाल के यूरोपीय इतिहास की घटनाओ ने, और विशेषत रूस मे समाजवादी क्राति के अनुभवो तथा

अतगत नही आते। स्तालिन-युग म भी शासक दन का सरकारी अधिकारिया तथा अय विविध अभिजन समूहा की वत्तिया तथा आकाक्षाओ का ध्यान रखना पडता था तथा अधिक उदारवादी ख्रुश्चेव-युग के बार म ता यह बात जाहिर ही है कि उच्च अधिकारी, औद्योगिक प्रबधक, बुद्धिवादी तथा कतिपय अय लोगा का दलीय निगरानी की कठोर मर्यादाआ के बावजूद सामाजिक नीतिया पर स्वतत्र रूप मे कुछ न कुछ प्रभाव डालन का अवसर मिला।

क्या पश्चिमी लोकतत्रीय देशा म अधिकारिया की स्थिति इसस कुछ भिन्न है? अनक लेखका न नौकरशाही वग की बढती हुई शक्ति का उल्लेख किया है जिसको वे राज्य द्वारा अपनाई गई गतिविधि के क्षेत्र (अथवा राज्य के कायक्षेत्र) के विस्तार तथा लोकप्रशासन की बढती हुइ जटिलता का परिणाम मानते हैं। फ्रास के प्रशासनिक अभिजन के एक आलोचक न उसका वणन इस प्रकार किया है 'वे (उच्च अधिकारी) सर्वोच्च और प्रभुतासपन्न, राजनीतिक हस्तक्षेप से मुक्त और अपन भीतर म ही सदस्या की भरती करनेवाले निकाय के अग होते हैं जो ऐसी चट्टान की तरह है जिसके विरुद्ध उठनेवाले समस्त राजनीतिक तूफान प्रभावहीन और व्यथ सिद्ध होत हैं'।[18] एक अय लेखक ने फ्रास म 'प्रबधकीय क्रान्ति' की प्रगति का ध्यान म रखकर लिखा है कि 'अथव्यवस्था की भाति राज्य मे भी विशेषज्ञा के दा समूहा न प्रमुख स्थिति प्राप्त कर ली है। प्रशासन के अभिजन का ही अनिवायत वित्त विभाग के निरीक्षको तथा राज्यपरिषद के सदस्या के रूप म भरती किया जाता है। यह ऐसा सामाय स्टाफ है जो प्रशासन मे सवत्र व्याप्त रहता है। ये प्रशासक प्राय निजी क्षेत्र म भी स्थानातरित होत रहते ह, अत वे बका तथा बडे पैमाने के औद्योगिक और वाणिज्यिक उद्यमा म भी मिलते है। दूसरा स्रोत पोलीटक्नीक स्कूल के स्नातक है, जो राज्य के तकनीकी विभागा के अभिजन है, किंतु वे अधिकाधिक सख्या म बडे पमाने के उद्योगो के प्रबधक भी बनते जा रहे है।[19]

ऐसे तक फ्रास म बहुत आम हो गए है क्योकि नौकरशाही की सत्ता उस समय अत्यत स्पष्ट रूप मे उभरकर सामने आ जाती है जब राजनीतिक सत्ता स्वय निबल अथवा अस्थिर हो किंतु पाश्चात्य देशो म उसका किसी न किसी रूप म प्रतिकार अवश्य किया जाता है। कभी कभी यह तक प्रबधकीय क्रान्ति' की आम चितनधारा के साथ जोड दिया जाता है जैसा कि आद्रे सीजफ्रीड की ऊपर उद्धत रचना मे हुआ है तथा यह कहा जाता है कि निजी उद्योग और

को कुछ करने के लिए प्रेरित करनेवाले नए सामाजिक सिद्धांतों के प्रतिपादक हैं, तथा अधिकांशतः बुद्धिवादियों का प्रभाव सम्पन्न नए मध्यवर्ग के प्रभाव के साथ घुलमिल गया है जिसकी जीवनपद्धति दृष्टिकोण और सभ्यता के मामले में बहुत थोड़ा और क्रमिक परिवर्तन ही कर पाती है। वहां के अनेक आधुनिक बुद्धिवादी ब्राह्मणवर्ग से आते हैं। यह वर्ग वंशपरंपरा में बुद्धिवादी अभिजन है। उसका अस्तित्व आधुनिक बुद्धिवादियों को नाना रीतियों से रूढ़िवादी समाज के धार्मिक और सामाजिक आदर्शों के साथ जोड़े रखता है। बुद्धिवादी व्यवसायों में अपेक्षाकृत अधिक व्यापक सामाजिक क्षेत्र से भरती होने पर यह आशा की जा सकती थी कि वह इस संबंध को कम कर देगी, किंतु वह भी अभी तक एक एंग आत्मविश्वासयुक्त और आधुनिक बुद्धिवादी वर्ग के निर्माण में विफल रही है जो नेतृत्व की बागडोर संभाल सकता। इसके लिए जातिगत तथा प्रादेशिक निष्ठाओं की विभाजक शक्तियां जिम्मेदार हैं। अधिकांश अल्पविकसित देशों में परंपरागत चिंतन भारत की अपेक्षा कम शक्तिशाली तथा मार्क्सवाद के प्रति अधिक अनुकूल मिलेगा, किंतु वहां भी क्रांतिकारी बुद्धिवादियों का प्रभाव कमजोर रह जाता है, क्योंकि कुछ देशों में ऐसे प्रभावशाली शासक अभिजन हैं जो राष्ट्रवादी अथवा उदारवादी सिद्धांतों पर आधारित नीतियों का अनुसरण करते हैं तथा कुछ देशों में स्वयं बुद्धिवादी अपनी पाश्चात्य संस्कृति के कारण जनसाधारण से कट गए हैं। कुछ स्थितियों में बुद्धिवादी संख्या की दृष्टि से इतने कम होते हैं कि वे व्यवस्था के भीतर हजम हो जाते हैं अतः वे राजनीतिक दृष्टि से तनिक भी सक्रिय नहीं हो पाते तथा इस मामले में वे कतिपय पाश्चात्य देशों के बुद्धिवादियों के समान ही माने जा सकते हैं। किंतु बुद्धिवादियों की स्थिति में चाहे जो विविधताएं हों, यानी वे क्रांतिकारी नेता हों सत्ताधारी अभिजन के समालोचक हों, अथवा शिक्षा प्रशासन, पत्रकारिता सरीखे अन्य व्यवसायों के विशेषज्ञतामूलक कार्यकलाप में लगे हों, अल्पविकसित समाजों में सब कहीं उनकी गिनती सबसे अधिक महत्वपूर्ण समूहों में होती है। इसका कारण यह है कि ये समाज वर्तमान काल में राष्ट्रवाद समाजवाद, मार्क्सवाद और उद्योगवाद सरीखी विचारधाराओं और आस्थाओं के बल पर जी रहे हैं तथा वे अब इसी तरह जीवित रह सकते और विकास कर सकते हैं क्योंकि उनकी परंपरागत संस्थाएं अंशतः नष्ट हो चुकी हैं, तथा उन्हें पुनर्जीवित नहीं किया जा सकता।

जाहिर है कि राष्ट्रवादी आंदोलनों के नेता एशियाई और अफ्रीकी देशों में सबसे अधिक महत्वपूर्ण अभिजन समूह बन गए हैं। उन देशों में आर्थिक

विकास को मूलत राजनीतिक स्वाधीनता के आदोलनो से उत्तेजना मिली है। ये नेता चाहे पाश्चात्य विश्वविद्यालयो और उग्र छात्र आदोलना की उपज हो, स्थानीय व्यापारी और व्यावसायिक समुदायो की उपज हो अथवा परपरागत अभिजन समूहो की वे इस मामले म पूरी तरह एक जैसे ह कि उनकी शक्ति राष्ट्रवादी भावनाओ तथा उन भावनाओ को अभिव्यक्ति प्रदान करनेवाले राजनीतिक दल के भीतर उनकी स्थिति, अर्थात उनके नेतृत्व पर निर्भर है। विकासशील देशो का राष्ट्रवाद विदेशी शासको के विरुद्ध स्वाधीनता सघर्ष तथा उन समस्याओ का परिणाम है जिनसे उन्ह स्वाधीनता की प्राप्ति के पश्चात जूझना पडा। इन सब समस्याओ म विशेष रूप से, परस्परसबद्ध होने के बावजूद, पृथक जनजातीय (कबायली) अथवा भाषाई समूहो को मिलाकर एक राष्ट्र के निर्माण अथवा सुदृढीकरण की जरूरत तथा देश के औद्योगिक विकास के लिए राष्ट्रीय स्तर पर नियोजन करने की आर्थिक आवश्यकता उल्लेखनीय है। ऐसी स्थिति म अनेक विकासशील देशो म स्वाधीनता आदोलन का सफलतापूर्वक नेतृत्व करनेवाले दल द्वारा अपने आपको शासक अभिजन के रूप म स्थापित कर लेने तथा अपनी शक्ति को अपने पिछले कार्यों और भविष्य म एक आधुनिक राष्ट्र के निर्माण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के आधार पर उचित ठहराने की प्रवत्ति पर अचरज नही किया जा सकता।

कहने का तात्पर्य यह नही है कि इन अभिजनो को सत्ता म बनाए रखनेवाला 'राजनीतिक सूत्र' महज राष्ट्रवाद है। लोकतत्र समाजवाद अथवा लोककल्याणकारी राज्य सरीखे अन्य विचारो को भी शासन सिद्धात म उसी प्रकार शामिल किया जा सकता है जिस प्रकार चीन जसे देशो म राष्ट्रवादी चिंतन को क्रातिकारी आदर्शों के भीतर शामिल कर लिया गया है। अफ्रीका म एक ओर राष्ट्रवाद समाजवादी सिद्धातो म प्रेरित है तथा दूसरी ओर सघीकरण की वास्तविक परियोजनाओ म मूतरूप ग्रहण करने जा रहे अखिल-अफ्रीकावाद से। इसी प्रकार अधिकाश एशियाई देशो मे राष्ट्रवाद ने सुदृढतापूर्वक समाजवादी कवच धारण कर रखा है तथा सुदूर पश्चिमी एशिया और लातिन अमरीका के कुछ देशो म राष्ट्रवाद की वृद्धि विदेशी व्यापारिक हितो के विरोध के कारण समाजवाद के साथ जुड गई है। अल्पविकसित देशो के राजनीतिक शासको के लिए राष्ट्रवाद अपने आप मे एक जटिल सिद्धात बन गया है। इसका एक प्रमुख कारक यह है कि राष्ट्रवाद पीछे की ओर झाकनेवाला भी हो सकता है। उस स्थिति म वह परपरागत सस्थाओ और परपरागत अभिजनो को पुनर्जीवित करने

की चेष्टा कर सकता है। विशेषत उन समाजा म इसकी सभावना अधिक रहती है जिन्हाने अपनी प्राचीन सभ्यता को सुरक्षित रखा है। स्वाधीनता सघष के दौरान राजनीतिक सघष के साथ-साथ एक सास्कृतिक सघष भी छिड सकता है जिसमे विदेशी शासका की भाषा उनके मूल्य और उनकी सस्थाआ को अस्वीकार कर दिया जाता है तथा देश के प्राचीन गौरव और उपलब्धिया का स्तवन किया जाता तथा उन्हे अनुकरणीय मान लिया जाता है। इस घटनाक्रम का एक पूर्णतम दृष्टात भारत मे हिंदू धम का पुनर्जागरण है जिसे गाधीजी ने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध जन आदोलन खडा करने के लिए इस्तेमाल ही नही किया वरन बढावा भी दिया। इसके अन्य दृष्टात अरब देशा पाकिस्तान और अफ्रीका के भी कुछ भागो मे मिलते हैं जहा इस्लाम ने औपनिवेशिक शासन के विरोधिया का जोडन का काय किया।[9] जहा राष्टवाद इस प्रकार प्राचीन मूल्या और जीवनपद्धतिया के परपरावादी पुनर्जागरण के साथ जुडा हुआ हो वहा वह विशेषत सामाजिक जीवन के व्यापक बौद्धिकीकरण का विरोध करके आर्थिक विकास के माग म बाधा डाल सकता है। इस प्रकार यद्यपि राष्ट्रवादी राजनीतिक नेताआ का शक्तिशाली तत्वा—स्वाधीनता सघष की स्मृतियो तथा औपचारिकताओ, एक समथ राष्ट्र के सृजन की आकाक्षा तथा आर्थिक जीवन के राष्टीय नियोजन की अपरिहायता—का समथन प्राप्त हो जाता है, तथापि उन्हे गभीर कठिनाइयो का भी सामना करना पडता है। ये कठिनाइया उनके अपने ही दल के भीतर परपरावादिया और आधुनिकतावादिया, तथा आम समाज के भीतर हानेवाले सघष उनकी शक्ति के आधारभूत सिद्धाता मे निश्चितता और सगति की कमी तथा एकदलीय शासनप्रणाली के अतगत उस स्थिति म उत्पन्न होनेवाले नैतिक ह्रास मे से जन्म लेती है जिस स्थिति म व्यक्ति के कार्यो (आचरण) पर एक परपरागत आचरणसहिता अथवा एक स्पष्ट और समथ सामाजिक सिद्धात का कठोर नियत्रण न हो।

कुछ विकासशील देशो म एक अन्य सामाजिक समूह भी है जिसका हमने अभी तक उल्लेख ही नही किया है। सैनिक अधिकारिया का यह समूह बुद्धिवादियो अथवा राजनीतिक नताओ की अपेक्षा अधिक प्रभावशाली है। यह बात बहुत साफ है कि नवस्वाधीन दशा म, जहा राजनीतिक सस्थाआ का अभी निर्माण ही हो रहा है तथा राजनीतिक सत्ता विभिन्न मात्राओ म अस्थिर और असुरक्षित है प्रत्यक्ष भौतिक दमन की अतिम शक्ति के नियताओ (सेनापतियो) को राष्ट की नियति के निर्धारण म महत्वपूर्ण भूमिका अदा करने का अवसर मिल गया है। वे राजनतिक मामला म सचमुच हस्तक्षेप करेंग

या नही, यह अनक कारणो पर निभर करता है जैस सैनिक अधिकारिया का प्रशिक्षण किन परपराओ के अतगत हुआ है, उनके सामाजिक उद्गम क्या है, अपने आधीन सेना पर उनका कितना प्रभाव है तथा दूसरी ओर राजनीतिक नताआ की शक्ति और सेनापतिया के साथ उनके सबधा का चरित्र क्या ह।[10] अतीत म राजनीति के भीतर सैनिक हस्तक्षेप की कुछ प्रमुख घटनाए लातिन अमरीकी देशो म घटित हुई है, किंतु वतमान स्थिति के बारे मे विचार करन की दृष्टि से व तनिक प्रासगिक नही हैं। व घटनाए मुख्यत तीव्र आर्थिक वद्धि की शुरुआत से पहले के काल म हुई, और उनम सशस्त्र सैनिक दस्ता सहित सेनापति (काडिलो) सामती सरदारा जैसे थे जो स्थापित राजनीतिक सत्ता के विफल हो जाने पर कायवाही करत रहे न कि उद्योगीकरण और आर्थिक वद्धि पर तुले हुए अभिजन की भाति, जो यहा हमार अध्ययन का विषय है।[11] यह सही है कि सेनापति आज भी सत्ता हथियान के लिए यह रास्ता अपना सकत है, किंतु वतमान काल मे कुछ अय कारक भी हैं जो उनका महत्त्व बढा सकत हैं। एक समकालीन लेखक का मत है कि सेना कम से कम आठ एशियाई और अफ्रीकी देशो म प्रभुत्वशाली समूह बन गई है, तथा वह सुझाव देता है कि विकासशील देशा म सेना की राजनीतिक भूमिका पर ' प्रथम तो असगठित सक्रमणशील समाजो पर कृत्रिम रीति से थोपी गई सेना की एक आधुनिक सस्था के रूप म राजनीतिक अहमियत की दृष्टि से तथा दूसर समाज के अय क्षेत्रा म लोगा की मनोवत्तिया को आधुनिकता की दशा म मोडने मे सेना की भूमिका की दृष्टि स[12] विचार किया जाना चाहिए। वह कहता है कि अल्पविकसित देशा मे सेनाआ की गणना सबसे अधिक आधुनिक तत्वा म की जा सकती है तथा वे द्रुत प्रौद्योगिक परिवतना की भावना' से अनुप्राणित ह। साथ ही वे वहत्तर भारत का आधुनिकीकरण की दशा म प्रभावित करनेवाली एक महत्वपूण शक्ति है। इसका कारण यह है कि वे अपन सदस्या को आधुनिक तकनीका म प्रशिक्षित करते तथा उनमे राज्य के प्रति नए दृष्टिकोण पैदा करते है।

इन नई सेनाओ का एक अय चारित्रिक लक्षण है, जिसका अनेक लेखको न उल्लेख किया है व ऊध्वगामी सामाजिक सचरणशीलता का सबस अधिक प्रभावशाली माध्यम हैं अथवा रही ह। जिन समाजा म उच्चतर शिक्षा केवल उच्चतर वर्गों की ही पहुच के भीतर रही है तथा राजनीतिक नता भी प्रधानत इसी वग से आय है—पश्चिमी एशिया के राज्यो की यही स्थिति है— वहा सेना ने समाज के मध्य स्तर म एक नए अभिजन के उदय के अवसर

निर्माण किये हैं तथा उसने प्राय अपने आपको कृषक और श्रमिक वर्गों के साथ जोड़ा एवं राजनीतिक प्रभुता प्राप्त करने के संघर्ष में भाग लिया है। मिस्र, सीरिया तथा ईराक में क्रांति का नेतृत्व उन तरुण सैनिक अधिकारियों ने किया जो मुख्यत मध्यवर्ग और निम्न मध्यवर्ग से आये थे। लातिन अमरीका में भी वर्तमान शताब्दी के दौरान सैनिक हस्तक्षेप ने एक नया रूप ग्रहण किया है। वह उस काडिलो के प्रतिरूप से भिन्न है जो भूस्वामी उच्चतर वर्ग का सदस्य होता है अथवा बनना चाहता है तथा गुटों के संघर्ष में विजय प्राप्त करके सत्ता हथिया लेता है। तरुण सैनिक अधिकारियों के नेतृत्व में जनक्रांतियां भी हुई हैं। जैसा कि लियूवेन कहता है 'अनेक लातिन अमरीकी देशों में क्रांति के ढांचे में बीसवीं शताब्दी की तीसरी से पांचवीं शताब्दी के बीच उग्र परिवर्तन हुए। इस दौरान क्रांति का आम रूप यह था कि अपनी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के मामले में कुंठित तरुण सैनिक अधिकारी उदीयमान जनसमूहों के साथ अपने हितों को जोड़ लेते तथा पुराने शासकवर्ग को बलपूर्वक उखाड़ फेंकने में साथ देते थे।'[13]

अल्पविकसित देशों की स्थिति के इस संक्षिप्त दिग्दर्शन से हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि वहां नेतृत्व के संघर्ष में अनेक अभिजन समूह भाग ले सकते हैं जैसे क्रांतिकारी बुद्धिवादी, राष्ट्रवादी राजनीतिक नेता तथा सैनिक अधिकारी। अन्य समूह—यथा सरकारी अधिकारी और व्यापारी—भी आर्थिक वृद्धि का मार्गदर्शन करने के मामले में पर्याप्त प्रभावशाली बन सकते हैं। प्रश्न यह है कि इन समूहों में से किस समूह को प्रमुख भूमिका प्राप्त होगी तथा यह निर्धारित करनेवाले तत्व कौन से हैं? कुछ मामलों में लातिन अमरीका तथा पश्चिमी एशिया में भूमिपतियों अथवा व्यापारियों के वंशगत अभिजनों ने प्रारंभिक काल में ही अपनी जड़ जमा ली थी जिन्हें उखाड़ना आसान नहीं है, हालांकि उनका शासन प्रभावहीन है और आर्थिक वृद्धि के मार्ग में रोड़ा अटकाता है। लातिन अमरीका की तरह कुछ देशों में सैनिक शासन की परंपरा के कारण अथवा मुस्लिम देशों की भांति उस सांस्कृतिक परंपरा के कारण, जो सैनिक और राजनीतिक कृत्यों के बीच पृथक्करण पर बल नहीं देती, सैनिक हस्तक्षेप को अनुकूलता प्राप्त हो जाती है। भूतपूर्व ब्रिटिश उपनिवेशों की तरह दृढ़तापूर्वक स्थापित सैनिक तटस्थता का सिद्धांत सैनिक हस्तक्षेप को हतोत्साहित भी कर सकता है।

इन देशों के सफलतापूर्वक विकास में श्रमसंघ, कृषक संगठनों या राजनीतिक दलों सरीखे मध्यस्थ संगठनों द्वारा अभिजन को जनता की आकांक्षाओं के

प्रतिनिधि और उसके हिता के पूरक के रूप मे प्रदर्शित करने के लिए अभिजन और शेष जनता के बीच घनिष्ठ सबधो का सृजन एक महत्वपूर्ण तत्व प्रतीत होता है। इस स्थिति से आर्थिक और सामाजिक विकास की वतमानकालीन तथा पाश्चात्य जगत म इससे पहले अपनाई गई प्रक्रियाओ के अतर का बोध होता है। कम से-कम उन्नीसवी शताब्दी के मध्य तक अधिकाश पाश्चात्य देशो म नए अभिजन व्यापक जन-समथन का आश्रय लिए बिना ही सगठित हो सकते और सत्ता के लिए सघप कर सकते थे अथवा वे अपने प्रयोजनो और उनकी पूर्ति के लिए जनसाधारण के प्रति उत्तरदायी हुए बिना ही अपन पीछे आवश्यक समथन जुटा सकते थे। औद्योगिक दृष्टि से विकसित तथा रहन महन के उच्चतर स्तर और सामाजिक कल्याण की विस्तृत व्यवस्थावाले देशो के उदाहरण के कारण वतमानकालीन अल्पविकसित देशा का भी जनसमथन की आवश्यकता पड गई है। समूची प्रक्रिया प्रथम औद्योगिक क्राति की अपेक्षा कही अधिक सप्रयोजन और आत्मचेतन बन गई है। इस अतर की ओर ध्यान दिलाने के लिए यह कहा जा सकता ह कि मार्क्सवाद बीसवी शताब्दी की औद्योगिक क्रातियो का काल्विनवाद नही है। काल्विनवाद एक धार्मिक मत था और यदि हम मैक्स वेबर की भाषा का अनुकरण करें तो कहा जा सकता है कि उसके कारण व्यक्ति के चरित्र मे नियमित और निरतर काय करने तथा बचत और आत्मनिग्रह (मद्यपान आदि का परित्याग) के मूल्या के विकास द्वारा आर्थिक और सामाजिक जीवन मे अप्रत्याशित परिणाम आए। मार्क्सवाद एक सामाजिक विज्ञान है, तथा साथ ही वह एक सामाजिक और राजनीतिक मत भी है जो प्रत्यक्षत मानवजाति की भावी स्थिति का दशन और उसकी सिद्धि के लिए कायक्रम प्रस्तुत करता है। किंतु मार्क्सवाद एक विशिष्ट तौर पर आकषक रूप म इन लक्षणो का दिग्दशन मात्र कराता है। अल्पविकसित देशा की योजनाओ और नीतिया का मूतरूप देनेवाले सभी सिद्धात अधिकाशत समाज की एक आदश कल्पना लेकर चलते हैं—एक वगहीन समाज, एक लोककल्याणकारी राज्य एक सहकारी कामनवल्थ, जिसम औद्योगिक अथव्यवस्था के अतिरिक्त और भी बहुतकुछ शामिल है हालाकि उद्योगो के विकास को उस सबकी प्राप्ति की प्रमुख और बुनियादी शत बताया जाता है। अत तीव्र आर्थिक वद्धि का क्रियान्वित करन मे विविध अभिजना की सफलता बहुत सीमा तक इस बात पर निभर करती है कि व जनता का उत्साह जगाने म कितने सफल रहत हैं तथा वे निधन किसाना और औद्योगिक श्रमिका सरीखे प्रमुख सामाजिक वर्गों का समथन किस मात्रा म प्राप्त कर पात हैं।

यह समर्थन प्राप्त करने और विकास की राजनीतिक तथा सामाजिक गतिविधि के अंतर्गत लोगों को बड़ी संख्या में खींच लाने की चेष्टाएं जनाधारित दलों के निर्माण से लेकर कृषि-सहकारी संस्थाओं और सामुदायिक विकासयोजनाओं की संघटना तक अन्य अनेक रूपों में दिखाई पड़ती है। कठिनाई यह आती है कि अनेक अल्पविकसित देशों में अभिजनों की पाश्चात्य शिक्षा, उच्चतर जातियों, जमींदार और व्यापारी परिवारों, कबायली सरदार (जनजातीय मुखिया) के परिवारों में जन्म तथा समग्र जीवनप्रणाली के कारण उनके और शेष जनता के बीच गहरी खाई पड़ गई है। इस स्थिति में यह खतरा निहित है कि उसके भीतर किसी न किसी प्रकार के अधिनायकवादी अभिजन शासन का उदय और विकास हो सकता है। यह संभावना उस स्थिति में विशेषतः अधिक वास्तविक खतरे का रूप ले लेती है जबकि इस दशा में जनता एक दीर्घ काल तक इस प्रकार के शासन में रहने के कारण उसकी अभ्यस्त हो जाती है। साथ ही छोटे अभिजन समूहों द्वारा उपार्जित अथवा उन्हें प्रदान किया जानेवाला महत्व समाज के निम्नतर तथा परंपरागत तौर पर दासता की स्थिति में चले आ रहे स्तरों के उद्यमी व्यक्तियों को अलग रखकर अथवा उन्हें आगे आने से हतोत्साहित करके नियोजित आर्थिक वृद्धि के प्रयोजनों को अंशतः विफल कर देता है। इसका उदाहरण अनेक देशों में, तथा विशेषतः भारत में पाए जानेवाले सामुदायिक विकास कार्यक्रम हैं जो विकास की गतिविधि में आम लोगों का सहयोग जगाने में सामान्य तौर पर ही सफल रहे हैं[14] तथा जिन पर उच्चतर जातियों अथवा मालदार भूमिपतियों का प्रमुख रूप से प्रभाव पड़ा है। इसके बावजूद सामुदायिक विकास ने सामाजिक सोपानक्रम के सबसे निचले स्तर के समूहों को इस बात के अवसर प्रदान किए कि अपने हितों पर बल दे सकें तथा उसने निम्नतर स्तरों पर कुछ प्रशासनिक पद भी उन्हें दिए जिनको पाने की आकांक्षा इस समूह के सदस्यों के मन में जाग सकती है तथा जिन पदों पर वे सरकारी कामकाज का अनुभव प्राप्त कर सकते हैं। व्यापक पैमाने पर ऐसे ही अवसर शिक्षा के प्रसार ने भी उत्पन्न किए। प्रगतिशील औद्योगिक देशों द्वारा प्रस्तुत किए गए उदाहरण के साथ ही शिक्षा संभवतः वह प्रमुखतम कारक रही है जिसने जनसाधारण की आकांक्षाओं को जगाने और उन्हें ठोस आकार प्रदान करने की दिशा में सबसे अधिक कार्य किया है।

अल्पविकसित देशों में अभिजनों तथा व्यक्तिगत तौर पर नेताओं को कुछ हद तक आम जनता के पिछड़ेपन के परिप्रेक्ष्य में लाभदायक स्थिति के कारण

जो अधिक प्रमुखता प्राप्त हुई है उसके बावजूद उन देशा के विकास की वतमान स्थिति की सफलता तथा उसके स्वरूप के निर्धारण का समूचा श्रेय अतत इन अभिजनो तथा नेताओ की गतिविधि का नही दिया जा सकता। यह सही है कि अभिजनो और नेताआ का समथ और सक्षम होना चाहिए, किंतु यह काफी नही है। उनके लिए यह भी आवश्यक है कि वे सामाजिक वर्गों के आदर्शों को पयाप्त रूप म अभिव्यक्ति प्रदान कर तथा उनका तेजी से अनुसरण करें, जिनम जनता की भारी बहुसख्या सघटित है, तथा जा वतमान काल मे अपनी युगो पुरानी दरिद्रता और दासता की बेडिया से मुक्त होन के लिए सघष कर रहे है।

## पादटिप्पणिया

1 कुल जनसख्या म शहरी क्षत्रा का जनसख्या का अनुपात अर्जेंताना तथा चिली मे 60 से 65 प्रतिशत के बीच और ब्राजील म 36 प्रतिशत है

2 क्लाक केर जान टी० डनलप फ्रडरिक एच हार्बिसन और चाल्स ए० मायस इडस्ट्रियलिज्म ऍड इडस्ट्रियल मन, अध्याय 3 दि इन्डस्ट्रियालाइजिंग एलीट्स एड देयर स्ट्रेटीजीज प० 50

3 यहा मैं औपनिवेशिक प्रशासको की वास्तविक उपलब्धिया का उल्लेख कर रहा हू मेरे कहने का अभिप्राय यह नहा है कि यदि औपनिवेशिक साम्राज्य की स्थापना न होती तो स्थानीय प्रयासो के फलस्वरूप घटनाक्रम ठीक यही रूप नहीं ल सकता था हालाकि अनेक मामला म मुझे इसम शका होती है

4 बी० बी० मिश्रा दि इडियन मिडिल क्लासज प० 343

5 डब्लू० थान नील दि माडन इडानेशियन एलीट

6 एच० एच० स्मिथ और एम० एम० स्मिथ दि नाइजीरियन एलीट

7 रेमड ऐरन 'सोशल स्ट्रक्चर एड दि रूलिंग क्लास ब्रिटिश जर्नल आफ सोसियालाजी II, 1950 प० 135

8 मोस्का पू० उ० 70 शासक वग अपनी सत्ता को महज इस आधार पर न्यायसगत नही ठहराते कि उनके पास तथ्यत वह सत्ता है वरन व उसके लिए नतिक तथा वधानिक आधार खोजने तथा यह सिद्ध करने की कोशिश करते हैं कि वह सत्ता आम तौर पर मान्य और स्वीकृत सिद्धाता और धारणाआ का तकसगत एव नतिक परिणाम है। राजनीतिक वग की सत्ता जिस वधानिक तथा नतिक आधार पर टिकी हुई है उसे ही हमने अयत्र 'राजनीतिक सूत्र' कहा है।

9 उदाहरण के लिए, स्वतत्रता म पूव सेनेगल के बारे म किए गए एक अध्ययन म कहा गया है कि 'परम्परागत राजनीतिक सरदारा (शासको) की शक्ति और उनका प्रभाव बहुत सीमा तक महान मुस्लिम सम्प्रदाय के खलीफाआ का हस्तातरित कर दिए गए जो आज आधुनिकतावादी अभिजन का प्रतिरोध करने

म सग्रम प्रमुख शक्ति बन गए हैं और जिनके साथ आधुनिकतावादियों और उनके साथ सबद्ध राजनीतिक आन्दोलनो को कुछ सीमा तक समझौता करना होगा।
पी० मर्सियर 'इवाल्यूशन आफ सेनेगलीज एलीटस' इन्टरनेशनल सोशल साइंस बुलेटिन VIII (3) 1956

10 इसम निहित कारको की सामान्य चर्चा के लिए एम० ई० फाइनर की पुस्तक दि मन आन हासबक' दखिए विशपत अध्याय 8 और 9 जिनम अलाविकमिन दशा की चर्चा की गई है

11 एडविन लियूवेन आम्स एंड पालिटिक्स इन लैटिन अमरिका भाग I

12 लूसियन डब्ल्यू० पाई आर्मीज इन दि प्रोसेस आफ पालिटिकल माडर्नाइजशन यूरोपियन जनल आफ सासियालाजी II 1961 पृ० 83

13 एडविन लियूवेन पू० उ० पृ० 132 उसम इन दशा के उदाहरण दिए गए हैं 1963 म बोलीविया 1944 म गुआटमाला 1943 म अर्जेंतीना तथा 1963 म कोलंबिया

14 उदाहरण क तौर पर सयक्त राष्ट्रसघ द्वारा प्रस्तुत अध्ययन कम्यूनिटी डवलपमट एन्ड इकानामिक डवलपमट (बकाक 1960)

# लोकतन्त्र और अभिजनों
# की वहुलात्मकता

□ □

मोस्का और परेता ने राजनीति के लोकतंत्रीय सिद्धांतों की जिस आलोचना का निरूपण अभिजन सिद्धांत के अंतर्गत किया उसमें आरंभ में ही कहा गया है 'प्रत्येक समाज में एक ऐसी अल्पसंख्या होती है जो प्रभावशाली रीति से शासन करती है।' मोस्का स्वयं यह समझता था कि इस आलोचना का सामना इस तर्क के आधार पर किया जा सकता है कि यद्यपि प्रत्येक समाज में शासक अभिजन का होना अनिवार्य है तथापि शासनप्रणाली के रूप में लोकतंत्र की विलक्षणता यह है कि वह अभिजनों के मुक्त निर्माण की अनुमति देता है और सत्ता के पदों के लिए अभिजनों के बीच एक नियमित प्रतिस्पर्धा की स्थापना (अथवा आयोजन) करता है। एक राजनीतिक व्यवस्था के रूप में लोकतंत्र की यह कल्पना जिसके भीतर राजनीतिक दल जनस्तर पर निर्वाचकों के मतों के लिए आपस में होड़ करते हैं इस तथ्य की ओर संकेत करती है कि अभिजन अपेक्षाकृत 'मुक्त' (अथवा खुले) हैं तथा उनके सदस्यों की भरती योग्यता के आधार पर होती है (अर्थात यह मान लिया गया है कि अभिजनों का निरंतर और व्यापक पैमाने पर परिसंचार हो रहा है) तथा आम जनता शासक समाज के भीतर इस अर्थ में भाग लेने में समर्थ होती है कि वह प्रतिद्वंद्वी अभिजनों के बीच चुनाव कर सकती है। पीछे हम यह देख चुके हैं कि कार्ल मानहाइम ने प्रारंभ में अभिजन सिद्धांतों को फासीवाद तथा 'प्रत्यक्ष कार्यवाही' वाले प्रति-बुद्धिवादी सिद्धांतों के साथ जोड़ दिया था, किंतु बाद में उसके विचारों ने कुछ इस प्रकार का रूप ग्रहण कर लिया नीति का वास्तविक निर्माण अभिजनों के हाथों में होता है, किंतु इसका अर्थ यह नहीं है कि समाज लोकतंत्रीय नहीं है। लोकतंत्र के लिए इतना काफी है कि भले ही नागरिकों को व्यक्तिगत तौर पर पूरे समय सरकार के भीतर प्रत्यक्ष भाग लेने

की अनुमति देता है, फिर भी स्वतन्त्र रूप से प्रभावशाली ढंग से [illegible] लिया [illegible] अर्थात् शासन के अधिकार से अलग [illegible] अभिजनों द्वारा करें। [illegible] इस बात पर बल देता है कि राज्य और शासन का प्रभाव होना चाहिए (अभिजन) का है तथा राजनीतिक दलों द्वारा प्रतिनिधित्व के इस सिद्धान्त को स्वीकार किया जा सकता है कि [illegible] के चुनाव में [illegible] की प्रवृत्ति होती है। [illegible] लोकतन्त्रात्मक समाजों में इस प्रकार के अभिजनों के सम्बन्ध, अथवा स्वच्छन्दतावादी नीति से [illegible] प्रभाव की उनकी क्षमता के बारे में [illegible] पर का मूल्यांकन नहीं करना चाहिए। [illegible] अभिजन [illegible] अथवा बहुसंख्या के हित में [illegible] के लिए बाध्य करने की क्षमता प्रदान कर सकते हैं।[1] मानहाइम ने धारणा के आधार पर चयन [illegible] अभिजनों और [illegible] के बीच सामंजस्य स्थापित करने की प्रक्रिया के तौर पर अभिजनों और जनसाधारण के बीच की दूरी को घटाने के महत्त्व पर बल दिया। [illegible] कि [illegible] का प्रमुख लक्षण अभिजन स्तर का अभाव (अनुपस्थिति) नहीं वरन् अभिजन के चयन की नई पद्धति और अभिजनों का एक नई आत्मव्याख्या (आत्मबोध) है [illegible] प्रक्रिया के दौरान अभिजनों और जनसाधारण के बीच की दूरी घटती जाती है। [illegible] अभिजन की एक जनपृष्ठभूमि होती है, इसी कारण जनसाधारण के लिए उनका कुछ महत्त्व है।[2]

अभिजनों की धारणा और लोकतंत्री शासन की धारणा के बीच बीसवीं शताब्दी में तेजी से सामंजस्य स्थापित हुआ है तथा अनेक अनुकूल परिस्थितियों ने सामंजस्य की इस प्रक्रिया में मदद पहुँचाई है। मानहाइम की अपनी कृतियाँ ही इस सामंजस्य की गवाह हैं। इन अनुकूल परिस्थितियों में से एक है व्यापक पैमाने पर युद्ध, आर्थिक वृद्धि के मामले में अंतर्राष्ट्रीय होड़ तथा नए राष्ट्रों के उदय और विकास के परिणामस्वरूप नेतृत्व के महत्त्व में होनेवाली आम वृद्धि। इन सब कारकों ने मनुष्यों का ध्यान अभिजन शासन के खतरों की ओर से हटाकर कार्यकुशल और साहसी अभिजनों की आवश्यकता पर केंद्रित कर दिया है। वास्तव में प्रतिस्पर्धामूलक प्रतिरूप का बल पहुँचानेवाली एक अन्य परिस्थिति एकदलीय राज्यों में अभिजन शासन के परिणामों तथा उन लोकतंत्री समाजों के अनुभवों का अंतर है जिनके भीतर अनेक ऐसे राजनीतिक दलों के बीच सत्ता की होड़ होती है जिनमें से किसी का भी लक्ष्य सामाजिक संरचना में उग्र परिवर्तन करना नहीं होता।

इसके अतिरिक्त यह प्रतिरूप एक मुक्त उद्यम व्यवस्था के भीतर आर्थिक व्यवहार के प्रतिरूप के साथ जो समानता पेश करता है, तथा आर्थिक विश्लेषण की भांति राजनीतिक व्यवहार के सही और कठोर एवं बहुत ही सीमित विश्लेषण के आधार पर जो संभावनाएं प्रस्तुत करता है उनके कारण इसे वैज्ञानिक आधार प्राप्त हो जाता है। इस समानता का स्पष्ट उल्लेख शुपीटर ने किया है।[3] वह सामान्य तौर पर तर्क पेश करता है कि आधुनिक लोकतन्त्र का उदय पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के साथ हुआ तथा उसके साथ इसका कार्यकारण संबंध है।[4] इस दृष्टिकोण का निरूपण एक सफल राजनीतिज्ञ ने बहुत सूक्ष्म रीति से किया है जिसका कथन शुपीटर उद्धृत करता है 'व्यापारी यह बात नहीं समझ पाते हैं कि जिस प्रकार उनमें से कोई तेल का धंधा करता है ठीक उसी प्रकार मैं मता (वोट) का धंधा करता हूं।[5] राजनीतिक दलों के बीच मतों के लिए स्पर्धा के रूप में लोकतन्त्र की कल्पना को इन दिनों अधिक विस्तृत रूप में पेश किया गया है, जैसे अपनी पुस्तक 'इकानामिक थियरी आफ डिमाक्रेसी' (लोकतन्त्र का आर्थिक सिद्धांत) में डाउंस ने अपने चिंतन को सार में इस प्रकार प्रस्तुत किया है 'हमारा प्रमुख प्रतिपादन यह है कि लोकतन्त्र में राजनीतिक दल मुनाफाखोर अर्थव्यवस्था में उद्यमियों के सदृश होते हैं। अपने निजी उद्देश्यों की पूर्ति के लिए वे उन नीतियों का निर्माण करते हैं जिनके बारे में उन्हें यह भरोसा हो जाता है कि वे अधिकतम मत प्राप्त कर सकती हैं। यह ठीक वैसा ही है जैसे कि उद्यमी उन वस्तुओं का ही उत्पादन करता है जो उसके हितों की पूर्ति के लिए अधिक मुनाफा कमा सकती है।[6] जिस प्रतिरूप के प्रयोग का एक अन्य उदाहरण खेलों के सिद्धांतों को राजनीतिक दलों पर लागू करने का सरसरा प्रयास है, जैसे राजनीतिक दलों की गतिविधि पर उस गणितीय योजना को लागू करना जिसका उपयोग व्यापारिक उद्यमों के विश्लेषण में किया जाता है।[7]

किंतु अभिजनों के अस्तित्व और लोकतन्त्र के बीच सामंजस्य पैदा करनेवाले तत्वों में राजनीतिक दलों की स्पर्धा अकेली नहीं है। इस दृष्टिकोण के समर्थक लोकतन्त्रीय समाजों के भीतर अभिजनों की बहुलात्मकता में अवरोध और संतुलन की अधिक व्यापक व्यवस्था की तलाश करते हैं। रेमंड ऐरन ने इस पक्ष को व्यवस्थित और व्यंजक रीति से प्रस्तुत किया है ' यद्यपि व्यापार प्रबंधक, सरकारी अधिकारी, श्रमसंघों के सचिव तथा मन्त्री लोग, सब कहीं होते हैं, तथापि उनकी भरती हर जगह एक ही रीति से नहीं होती, और वे या तो एक सुसंगत इकाई का निर्माण करते हैं अथवा तुलनात्मक दृष्टि से

एक दूसर से भिन्न हात हैं। सोवियत तथा पाश्चात्य ढग के समाजा म बुनियादी अतर यह है कि सोवियत समाज म एकतावद्ध अभिजन हाता है तथा पाश्चात्य समाज म विभाजित अभिजन। सोवियत सघ म श्रमसघो के सचिव, व्यापार प्रबधक तथा उच्च अधिकारी आमतौर पर साम्यवादी दल के सदस्य होते हैं। इसके विपरीत लोकतत्रीय समाज, जिन्हें मैं बहुलात्मक समाज कहना पसद करूगा, उत्पादन के साधना के स्वामिया, श्रमसघीय नताओ और राजनीतिज्ञो के बीच सावजनिक सघप के शोरशराबे स भर होत हैं। उनम सब लोगा को सघ बनान का अधिकार होना है अत व्यावसायिक और राजनीतिक सगठना की भरमार हो जाती है, जो अपन अपन सदस्या के हिता की रक्षा पूर उत्साह के साथ करत हैं। लोकतत्रीय दशा म सरकार समझौता का धधा बन जाती है। सत्ताधिकारिया को अपनी कठिन स्थिति का भली प्रकार बोध रहता है। वे विरोधिया के प्रति उदार रहते ह क्योकि वे स्वय भी विरोधी पक्ष रह चुके है तथा एक दिन पुन उस स्थिति म पहुच जाएग।[8]

लोकतत्र की इस परिभाषा की अनेक आधारा पर आलोचना की जा सकती है कि वह अभिजनो के बीच प्रतिस्पर्धा की स्थिति है। उसे अत्यत मनमानी परिभाषा कहा जा सकता है क्योकि वह लोकतत्र के आमतौर पर मान्य लक्षणा का वणन ही नहीं करती या उसे जिस सिद्धात म इस्तेमाल किया गया है वही अपर्याप्त या असत्य है अथवा यह है कि वह एक प्रकार के मूल्यनिष्कर्षो पर आधारित है जिनके विरोध म अन्य मूल्यनिष्कप पश किए जा सकते हैं। आधुनिक लोकतत्र की अधिकाश राजनीतिक विचारका ने बहुधा, सरकार मे जनसाधारण द्वारा भाग लेने की प्रक्रिया के रूप म परिभाषा की है। इस परिभाषा का एक शास्त्रीय निरूपण लिकन के गटिसबग भाषण मे उपलब्ध है जनता का, जनता द्वारा तथा जनता के लिए शासन। सभी अभिजन सिद्धात यह मानने से इकार करते हैं कि यथार्थत जनता के शासन की स्थापना की जा सकती है।[9] यह अस्वीकृति परेतो और मोस्का की तरह इस सारहीन तथ्य पर आधारित हो सकती है कि अतीत के अधिकाश ज्ञात समाजा मे शासका और शासितो के बीच स्पष्ट भेद रहा है अथवा मिचेल्स, मानहाइम तथा ऐरन की रचनाओ की भाति उस अधिकाशत शास्त्रीय विश्लेषण पर जो यह प्रदर्शित करने का प्रयास करता है कि किसी भी बडे और जटिल समाज मे (तथा समाज के भीतर बडे और जटिल सगठना म) लोकतत्र महज प्रतिनिधिमूलक हो सकता है प्रत्यक्ष नहीं तथा प्रतिनिधि एक अल्पसख्या होते है और उनके पास उन लोगो की

अपेक्षा अधिक सत्ता होती है जो उन्हें चुनते हैं, क्योंकि निर्वाचकों का प्रभाव (अथवा उनकी सत्ता या शक्ति) काफी लंबे अंतराला के बाद इस अल्पसंख्या की गतिविधि के बारे में निर्णय की घोषणा करने तक सीमित है। किंतु इस विश्लेषण के विरुद्ध अनेक आपत्तियां उठाई जा सकती हैं। पहली आपत्ति तो यह कि लोकतंत्र के विचाराधीन दृष्टिकोण के अनुसार प्रतिनिधिमूलक व्यवस्था को साफ तौर पर लोकतंत्र की अपूर्ण सिद्धि माना गया है क्योंकि इसमें बहुसंख्या को शासन का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त करने से हमेशा के लिए वंचित कर दिया जाता है। प्रतिनिधिमूलक सरकार का अलोकतंत्रीय चरित्र उस समय एकदम सामने आ जाता है जब प्रतिनिधित्व के सिद्धांत को परोक्ष निर्वाचन व्यवस्था में लागू किया जाता है जिसके अंतर्गत निर्वाचित अभिजन स्वयं एक अन्य अभिजन को चुनता है जिसको समान अथवा उच्चतर कोटि की राजनीतिक सत्ता प्राप्त हो जाती है। लोकप्रिय शासन के विरोधियों ने इस उपाय का बहुधा आश्रय लिया है। इसका एक ताजा उदाहरण दगाल के नेतृत्व में फ्रांस के भीतर पांचवें गणराज्य का गठन है। द ताकवील तथा अन्य विचारकों की निगाह में यह लोकतंत्र को सीमित करने का प्रयास था। यद्यपि अभिजनों के बीच होड़ के रूप में लोकतंत्र की धारणा के समर्थक इस धारणा का प्रतिपादन एक अन्य अर्थ में यानी राजनीति में जनसाधारण के प्रवेश के निरोध के रूप में लोकतंत्र के विरुद्ध नहीं करते—दि ताकवील परेतो, मास्का और ऑरतेगा वाई गैसेत इस प्रकार के प्रवेश की एक स्वर से निंदा करते हैं—तथापि वे जनता द्वारा सरकार में प्रत्यक्ष भाग लेने के आदर्श तथा इस आदर्श की अधिकतम पूर्ति के लिए साधनों की खोज के बजाय प्रतिनिधिमूलक सरकार को आदर्श मानते हैं।

यह तर्क शुंपीटर ऐरन तथा अन्य लेखकों द्वारा प्रस्तुत लोकतंत्र के विश्लेषण के विरुद्ध एक दूसरी आपत्ति उठाता है। उनके मतानुसार लोकतंत्र को एक स्वयंसिद्ध और पूर्ण धारणा के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए जिसकी तुलना सीधे अन्य प्रकार की राजनीतिक व्यवस्थाओं के साथ की जा सकेगी। दूसरी ओर उन्नीसवीं शताब्दी के अधिकांश में प्रचलित लोकतंत्र की 'जनता द्वारा शासन' की धारणा में लोकतंत्र की कल्पना एक ऐसी सतत प्रक्रिया के रूप में की गई थी जिसमें समाज के उन समूहों को राजनीतिक अधिकार तथा सार्वजनिक नीतिसंबंधी निर्णयों को प्रभावित करने की शक्ति धीरे धीरे दी जानी थी जो अभी तक इनसे वंचित थे। इसमें दो बातें निहित हैं। पहली तो यह कि लोकतंत्र कुलीन तथा संपन्न वर्गों के प्राधान्य के विरुद्ध समाज के निम्नतर वर्गों का सिद्धांत

और राजनीतिक आदोलन प्रतीत होता था (वस्तुत यह एक मुख्य कारण है जिससे अभिजन सिद्धात का प्रतिपादन करने के लिए उत्तेजना प्रदान की)। दूसरी बात यह है कि उसे समाज का उस आदर्श स्थिति की ओर ले जानेवाला आदोलन मान लिया गया था जिसमे मनुष्यो के पूर्णतया आत्मशासित अथवा स्वाधीन होने की कल्पना की गई थी, तथा यह स्वीकार कर लिया गया था कि भले ही वह स्थिति कभी प्राप्त न हो सके तथापि लोकतत्रवादियो को उसकी प्राप्ति के लिए चेष्टा करते रहना चाहिए। उन्नीसवी शताब्दी के अधिकाश लोकतत्रवादी विचारको की दृष्टि म व्यापक मताधिकार, अनेक राजनीतिक दलो के बीच होड और प्रतिनिधि शासन की मर्यादाए भले ही अन्य राजनीतिक व्यवस्थाओ की सस्थाओ की अपेक्षा कितनी भी अधिक श्रेष्ठ हो, तथापि उनके मन म यह कल्पना भी नही हो सकती थी कि ये सस्थाए लोकतत्रीय प्रगति का चरम बिंदु बन जाएगी जिसके परे लोकतत्र की यात्रा सभव ही नही होगी।

बीसवी शताब्दी मे लोकतत्र की उस स्थिर धारणा के उदय के पीछे निहित कारणो को जिसमे अभिजन शासन को निश्चित अवधियो के उपरात होनेवाले चुनावो के आधार पर अनुमोदन प्रदान कर दिया गया है, इस शताब्दी की राजनीतिक परिस्थितियो मे खोजना होगा। जरमनी और इटली म फासीवादी रूप में और सोवियत सघ म साम्यवादी रूप मे एकदलीय राज्यो की स्थापना ने लोकतत्र को बहुदलीय प्रतिनिधिमूलक व्यवस्था से अभिन्न होने की समझ और उसके प्रति विश्वसनीयता पैदा की। पीछे उदधृत रेमड ऐरन की पुस्तक के अवतरण से यह बात एकदम स्पष्ट हो जाती है जिसम सोवियत प्रणाली के समाजो के एकताबद्ध अभिजन की तुलना म पाश्चात्य ढग के समाजो मे अभिजनो की बहुलता का उल्लेख है। फिर भी हम यह पूछ सकते हैं कि क्या सगठित राजनीतिक दल—तथा अधिक स्पष्टता के लिए सगठित अभिजन समूह'—लोकतत्रीय ढग के शासन के अस्तित्व के लिए आवश्यक अथवा पर्याप्त हैं? बहुधा यह माना जाता है कि वे आवश्यक नही है तथा उदाहरण के लिए कहा जाता है कि अधिकाश आधुनिक राष्ट्रो मे मौजूद राजनीतिक व्यवस्था की अपेक्षा अधिक विकेंद्रित राजनीतिक व्यवस्था म फिलहाल राजनीतिक नेताओ का चुनाव उन सगठनो की गतिविधि के माध्यम से किया जा सकता है जो कम सगठित तथा कम नौकरशाहीमूलक और वतमान राजनीतिक दलो की अपेक्षा कम स्थायी हो। इसके साथ

यह भी कहा जाना चाहिए कि जिस समाज से सामाजिक वर्गों का खत्म किया जा चुका है (अनेक लेखकों ने लोकतंत्र के विकास के फलस्वरूप इस स्थिति के निर्माण की कल्पना की है) उसमें राजनीतिक दलों के निर्माण का सबसे अधिक महत्वपूर्ण और एकमात्र आधार भी तिरोहित हो जाएगा तथा यद्यपि सामाजिक भेदभाव के उन अन्य आधारों की कल्पना असंभव नहीं है जो राजनीतिक दलों का नया आधार प्रदान कर सकते हैं तथापि आज यह कहना संभव नहीं है कि राजनीतिक जीवन में नए राजनीतिक दलों का क्षेत्र और प्रभाव वर्तमान राजनीतिक दलों के समान ही होगा। यह तर्क एक ऐसी राजनीतिक व्यवस्था की ओर संकेत करता है जिसमें राजनीतिक दलों का अस्तित्व ही नहीं होगा न कि एकदलीय शासन व्यवस्था की ओर। एकदलीय व्यवस्था को तनिक भी लोकतंत्रीय नहीं माना जा सकता क्योंकि वह महत्वपूर्ण सामाजिक निर्णयों के बारे में शासक दल के मुकाबले में व्यक्ति को अपने मतभेद व्यक्त करने अथवा उसको क्रियात्मक रूप देने की वास्तविक संभावना से ही वंचित कर देता है, क्योंकि उसके (व्यक्ति के) पास कोई ऐसा मंच ही नहीं होता जिसपर से एक स्वायत्त और शक्तिशाली संघ (समुदाय) के रूप में वह अपने मत की व्यवस्था कर सके अथवा अपने साथियों के मत के बारे में जानकारी प्राप्त कर सके। हां यह हो सकता है कि जनोत्साह के कालों में एक ही दल राष्ट्र की विशाल बहुसंख्या के प्रयोजन की अभिव्यक्ति करे और किसी प्रकार की बाध्यता के बिना ही वह जनता की एक बड़ी संख्या को विधिनिर्माण और प्रशासन की गतिविधि में खींच ले किंतु उस स्थिति में बचे खुचे अन्य राजनीतिक दलों के दमन की आवश्यकता नहीं होगी। यह भी हो सकता है कि युद्ध, तीव्र उद्योगीकरण अथवा भूतपूर्व औपनिवेशिक क्षेत्र को एक नए राष्ट्र का स्वरूप प्रदान करने की आवश्यकताओं के आधार पर एकदलीय शासन को उचित ठहराया जाए। किंतु जिस राजनीतिक व्यवस्था के अंतर्गत यह अकेला दल कार्य करता है उसे लोकतंत्र नहीं कहा जा सकता। यदि आवश्यकता सिद्ध की जा सके तो शासकदल के बारे में यह माना जा सकता है कि वह जनता के लिए शासन कर रहा है लेकिन इस व्यवस्था में जनता का शासन नहीं रह जाता।

राजनीतिक दल लोकतंत्रीय व्यवस्था के लिए आवश्यक हैं या नहीं इस बारे में होनेवाली चर्चा अपरिहार्य तौर पर अनुमानपरक ही हो सकती है तथा इस बारे में विचार करना सुगम और अधिक व्यावहारिक होगा कि दलों और अभिजनों के बीच होड़ लोकतंत्र के बने रहने के लिए 'पर्याप्त'

है। आज अनेक उदारवादी विचारक उसे पर्याप्त मानते हैं अथवा वे अभिजनों के बीच होड़ को इतना अधिक महत्वपूर्ण मान लेते हैं कि वे अपने आपको लोकतंत्र की दशाओं के बारे में और अधिक जांच से मुक्त कर लेते हैं। कार्ल मानहाइम इन विचारकों का समर्थक है। जैसा कि हम पीछे अध्ययन कर चुके हैं वह कहता है कि समाज को लोकतंत्रीय स्वरूप प्रदान करने के लिए इतना काफी है कि नागरिकों के पास कम से कम निश्चित अवधियों के अंतराल में अपनी आकांक्षाओं की अभिव्यक्ति कर सकने की संभावना बनी रहे।[10] दूसरी ओर शुंपीटर और ऐरन दोनों राजनीतिक व्यवस्था पर पड़नेवाले अन्य प्रभावों पर अधिक ध्यान देते हैं। शुंपीटर उन दशाओं को चार वर्गों में बांटता है जिन्हें वह लोकतंत्रीय पद्धति की सफलता की शर्तें कहता है 1 राजनीति की मानवीय सामग्री (अर्थात अभिजन) काफी ऊंची किस्म की होनी चाहिए, 2 राजनीतिक निर्णय का प्रभावशाली क्षेत्र बहुत अधिक विस्तृत नहीं होना चाहिए, 3 सरकार को अच्छी हैसियत और परंपराओं वाली सुप्रशिक्षित नौकरशाही की सेवाएं प्राप्त करने में समर्थ होना चाहिए, और 4 समाज में लोकतंत्रीय आत्मनियंत्रण (आत्मसंयम अथवा आत्मानुशासन) होना चाहिए अर्थात प्रतिस्पर्धी अभिजनों को एक दूसरे का शासन सहन करना चाहिए और गुंडों तथा बदमाशों की तरकीबों से बचना चाहिए। जब निर्वाचक (जनता) चुनाव में अपना फैसला घोषित कर दें तो उन्हें अपने प्रतिनिधियों के राजनीतिक कार्यों में निरंतर विघ्न डालने से बाज आना चाहिए। इसी प्रकार ऐरन ने पूर्व उल्लिखित निबंध में समकालीन बहुलात्मक लोकतंत्रीय समाजों की सफलता के लिए तीन शर्तों का उल्लेख किया है 1 सरकार की ऐसी सत्ता की पुनर्स्थापना जो समूहों के बीच उठनेवाले विवादों को तय करने और समाज के सम्मिलित हित के लिए आवश्यक निर्णयों को लागू करने में समर्थ हो, 2 सृजनशीलता बनाए रखने और प्रोत्साहनकारी उपायों को लागू करने में समर्थ

अभिजनों की होड के अलावा, अभिजनों की संरचना और उनके संगठन में, अपने बारे में उनकी अपनी धारणाओं तथा शेष जनसंख्या के साथ उनके संबंधों में परिवर्तन भी आवश्यक होते हैं। मानहाइम ने भी यह बात मान ली है हालांकि लोकतंत्र की शर्तों के बारे में उसकी अन्य घोषणाओं के साथ इसका मेल नहीं बैठता। संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि ऐसा मान लिया गया प्रतीत होता है कि लोकतंत्र में अभिजनों के भीतर तथा उनमें से बाहर की ओर आवागमन (परिसचार) अधिक तीव्र और व्यापक पैमाने पर होगा, समूची जनसंख्या के संदर्भ में अभिजन पदों की संख्या अधिक हो जाएगी, अभिजन एक कम 'कुलीनवर्गीय' दृष्टिकोण अपना लेंगे और अपने आपको जनसाधारण के साथ निकट से संबद्ध मानने लगेंगे तथा विविध समत्वकारी प्रभावों के परिणामस्वरूप वे अपनी जीवनप्रणाली के मामले में सचमुच आम जनता के अधिक समीप पहुच जाएंगे। इनमें से प्रथम दो दशाएं एक ऐसी स्थिति उत्पन्न कर देंगी जिसमें शासन करने और शासित होने का अनुभव अपेक्षाकृत अधिक लोगों को प्राप्त हो सकेगा। अन्य दशाएं राजनीतिक शासन के चरित्र को कुछ सीमा तक बदल देंगी जनता के साथ उसकी दूरी घटा देंगी तथा उसे कम अधिसत्तावादी (आथारिटेरियन), कम राजसी, और कम अप्रतिरोधनीय बना देंगी। अब यदि हम वर्तमानकालीन पाश्चात्य लोकतंत्रीय समाजों पर दृष्टिपात करें तो हमें ज्ञात होगा कि वे लोकतंत्र के प्रतिस्पर्धा प्रतिरूप की कसौटी पर तो खरे उतरते हैं लेकिन वे इन अन्य दशाओं के मामले में पिछड गए हैं उनमें अभिजनों के सदस्यों का तीव्र परिसचार नहीं होता, उनकी भरती अभी तक मुख्यतया समाज के उच्चतर वर्गों से होती है।[11] अभिजनों का दृष्टिकोण बहुत धीमी गति से बदला है तथा उच्चतर वर्गों से भरती, कुलीनतंत्रीय सिद्धांतों तथा 'बढते रहो' तथा 'चोटी पर पहुचकर दम लो' की प्रचलित सामाजिक धारणाओं ने उनके कृत्यों के बारे में पुरानी कुलीनतंत्रीय धारणाओं को जीवित बनाए रखा है। इसके अतिरिक्त पाश्चात्य समाजों में परिस्थितियों का समतलीकरण (समत्वकरण) इतनी मंद गति से आगे बढा है कि अभी तक आर्थिक और सामाजिक दृष्टियों से शासक शासितों की अपेक्षा बहुत भिन्न हैं। इस संदर्भ में यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि अभिजनों की होड के केंद्र में स्थित राजनीतिक दलों ने आम दल बनकर स्वयं कुछ सीमा तक लोकतंत्रीय चरित्र गंवा दिया है। अधिकांश मामलों में भले ही उन्होंने अल्पतंत्रीय संगठनों का वैसा रूप ग्रहण न किया हो जिसकी कल्पना मिचेल्स ने की थी[12] किंतु उनपर उनके पदाधिकारियों का प्रभुत्व अब अधिक आसानी से स्थापित हो जाता है तथा आम सदस्यों के लिए नीतियों के निर्माण की प्रक्रिया को कारगर ढंग से

कि कोई भी मनुष्य अपने जीवन का अधिकांश समय पूर्ण और अपरिवर्तनीय पराधीनता की स्थिति में बिताते हुए अपने भीतर उत्तरदायित्वपूर्ण रीति से चयन और आत्मशासन की वे आदतें विकसित कर सकता है जो राजनीतिक लोकतंत्र में उससे अपेक्षित होती हैं। यह सही है कि पाश्चात्य समाजों में व्यक्ति को पहले की अपेक्षा कम कठोर अधीनता की स्थिति में काम करना पड़ता है, व्यक्तिगत श्रमिक अपनी कार्यदशाओं पर अपने श्रमसंघ तथा उन परामर्शकारी संस्थाओं के माध्यम से कुछ प्रभाव डालने में समर्थ हो गया है जो अभी अपने विकास की प्रारंभिक अवस्था में हैं, तथा अवकाश के समय में काफी मात्रा में वृद्धि होने के कारण अपने लिए निर्णय लेने का उसका क्षेत्र अपेक्षाकृत अधिक विस्तृत हो गया है। दूसरी ओर अधिकांश औद्योगिक कार्य आधुनिक काल में उपविभाजित और पुनरावृत्तिमूलक बना गया है जिसके परिणामस्वरूप अपने मालिक के पुराने ढंग के अधिसत्तावादी नियंत्रण से मुक्त होने के बावजूद श्रमिक के लिए अपने कार्य में अपनी निर्णयशक्ति, कल्पना अथवा बुद्धिकौशल के प्रयोग के अवसर निरंतर कम होते जा रहे हैं।[14]

लोकतंत्रीय सरकार को प्रभावित करनेवाली कुछ अन्य परिस्थितियां भी हैं जिनकी बहुधा चर्चा होती है। संपदा तथा आय की भारी विषमताएं साफ तौर पर समाज पर शासन की गतिविधि में व्यक्ति द्वारा भाग लेने की क्षमता को प्रभावित करती हैं। धनी व्यक्ति को स्वर्ग के साम्राज्य के भीतर प्रवेश पाने में भले ही कठिनाई होती हो किंतु राजनीतिक दलों की उच्चतर परिषदों अथवा सरकार की किसी शाखा में प्रवेश पाना उसके लिए अपेक्षातर सुगम होता है। वह अन्य रीतियों से भी राजनीतिक जीवन को प्रभावित कर सकता है संचार के माध्यम पर नियंत्रण स्थापित करके, राजनीति के उच्चतर क्षेत्रों में परिचय बढ़ाकर नाना प्रकार के दबावसमूहों तथा परामर्शकारी निकायों की गतिविधि में प्रमुख भाग लेकर। गरीब आदमी को इस प्रकार का कोई भी लाभ नहीं मिल पाता प्रभावशाली व्यक्तियों के साथ उसका कोई संबंध नहीं होता उसके पास राजनीतिक गतिविधि के लिए न समय ही होता है न शक्ति ही तथा राजनीतिक विचारों और तथ्यों का व्यापक ज्ञान प्राप्त करने के पर्याप्त अवसर भी नहीं होते। आर्थिक विषमताओं में से पैदा होनेवाले अंतर शैक्षणिक अंतरों के कारण और भी बढ़ जाते हैं। अधिकांश पाश्चात्य लोकतंत्रीय समाजों में प्रमुखतया शासक प्रशासन करनेवाले वर्गों को दी जानेवाली शिक्षा शासितों के अधिक बड़े और बहुसंख्यक वर्ग को दी जानेवाली शिक्षा से बहुत भिन्न प्रकार की होती है।[15] अधिकांश पाश्चात्य समाजों में शिक्षा व्यवस्था शासकों और शासितों

सकता है और समृद्ध हो सकता है जब इन समूहा के मध्य सही अथ मे सयुक्त कायवाही हो। अभिजन के भीतर अनिवाय प्रश्नो पर किसी न किसी रूप म मत और कम की एकता होनी चाहिए।'[18] वस्तुत इलियट मत और कम की जिस एकता, तथा सामाजिक सातत्य की कामना करता हे उसे पाश्चात्य समाजा म उच्चतर वर्गों मे से अभिजन की भरती तथा स्वय अभिजन सिद्धात के वचारिक समथन द्वारा काफी हद तक बल पाप्त हाता रहता है। यह अभी तक सच है कि 'कुछ लोग जन्म की घडी स ही अधीनता के लिए और कुछ आदेश देने के लिए नियत होते है।'[19] पाश्चात्य समाजा मे अभिजन अधिकाशत वग विभेदो द्वारा प्रस्तुत विराट अवराध के एक छोर पर खडे होते है अत यदि हम अभिजनो की होड पर ध्यान केंद्रित कर दे और वर्गों के बीच होनेवाले सघर्षो तथा विविध सामाजिक वर्गों के साथ अभिजनो के सबधो की उपेक्षा कर दें तो राजनीतिक जीवन के बारे मे एक भ्रामक धारणा का निर्माण हो जाता है।

हमारे युग का एक राजनीतिक मिथक यह है कि लोकतत्र का सरक्षण और पोषण मुख्यत अथवा पूणत अभिजना की होड द्वारा हाता है जो एक दूसरे की शक्ति को सतुलित और सीमित रखते है। इस प्रस्थापना के समथन मे अभिजनशास्त्रिया के तर्को का अध्ययन करने पर एक अन्य विसगति का बोध होता है जो तर्क के विभिन्न स्तरा पर अभिजना की बहुलात्मकता की धारणा से स्वच्छिक सघो (समुदाया) की अनेकता की एक नितात भिन्न धारणा की ओर बढने से उपजती है। उदाहरण के लिए मास्का को ही लें जिसने लोकतत्रीय व्यवस्था के अतगत अन्य सामाजिक शक्तिया तथा विशेषत नौकरशाही की शक्ति के परिसीमन के लिए अनेक विभिन्न सामाजिक शक्तिया (अभिजन नही) द्वारा राजनीतिक जीवन मे भाग लेने की सभावना का उल्लेख किया है। इसी प्रकार ऐरन बहुलात्मक लोकतत्र म शक्ति के बिखराव के महत्व पर बल देते समय केवल अपनी दृष्टि म प्रतिष्ठित प्रमुख अभिजना की ही मदद नही लेता वरन वह नाना प्रकार के व्यावसायिक और राजनीतिक सगठना का जिक्र करता है जो इस प्रकार के समाजा म पाए जाते हैं तथा जो शासका की शक्ति मर्यादित करते ह। किंतु प्रभावशाली लाकतत्र के लिए वृद्धिशील स्वैच्छिक सगठनो को एक अन्य शत मानने की इस वकालत म अभिजन सिद्धाता को बल नही मिलता। शक्तिशाली स्थानीय सरकार, व्यावसायिक सघा तथा अन्य स्वच्छिक और स्वायत्त निकाया के महत्व को इतनी प्रमुखता देने का अथ यह नही है कि य सगठन राजनीतिक सत्ता के सघर्षो मे भाग लेनेवाले अभिजन हैं वरन यह कि य सगठन सामान्य स्त्री

पुरुषो को स्वशासन की कला सीखने और उसके अभ्यास के अवसर जुटाते है। ये वे साधन है जिनके द्वारा बडे और जटिल समाज मे 'जनता द्वारा शासन' की कल्पना व्यावहारिक रूप ग्रहण करती है।

इस प्रकार हम इस भाग मे भी उसी दृष्टिकोण पर पहुचते है जिसका उल्लेख पीछे किया जा चुका है कि लोकतत्रीय शासनव्यवस्था का सरक्षण और विशेषत विकास तथा सुधार बुनियादी तौर पर उन छोटे अभिजन समूहो के बीच होड को प्रोत्साहन देने पर निर्भर नही करता जिनकी गतिविधिया साधारण नागरिक की दृष्टि अथवा उसके नियत्रण से परे के क्षेत्रो मे चलती है, वरन ऐसी दशाओ के निर्माण और उनकी स्थापना पर निर्भर करता है जिनके अतर्गत समस्त नही तो नागरिको की विशाल बहुसख्या उन सामाजिक मुद्दो की निर्णयप्रक्रिया मे भाग ले सके जो उसके सदस्यो के व्यक्तिगत जीवन पर—काम के दौरान स्थानीय समुदाय मे तथा राष्ट्रीय जीवन मे महत्वपूर्ण प्रभाव डालते है, तथा जिनके अतर्गत अभिजनो और जनसमाज के बीच का अतर घटकर न्यूनतम रह जाता है। इस प्रकार के दृष्टिकोण मे दो बाते निहित है पहली तो यह कि स्वशासन के क्षेत्र के विस्तार के अवसरो की परिश्रमपूर्वक खोज की जानी चाहिए। विशेषत आर्थिक उत्पादन के क्षेत्र मे युगोस्लाविया मे श्रमिक परिषदो तथा भारत मे सामुदायिक विकास परियोजनाओ के रूप मे जो कुछ आधुनिक प्रयोग हो रहे है उसके मार्ग की समस्त कठिनाइयो के बावजूद उनकी ओर ध्यान दिया जाना अपेक्षित है। दूसरी बात यह कि सरकार मे पूरी तरह भाग लेने के मामले मे स्वच्छिक सगठनो को इस समय जिन बाधाओ का सामना करना पड रहा है उनका उदय मुख्यत सामाजिक वर्गो के अतरो मे से हुआ है, और वे इन सगठनो के अधिकारियो मे उच्चतर वर्ग तथा मध्यवर्ग की प्रधानता मे स्पष्टत दृष्टिगोचर होती है। इन बाधाओ पर जैसे तसे विजय प्राप्त की जानी चाहिए।

## पाद टिप्पणिया

1 कार्ल मानहाइम एस्सेज आन दि सोशियोलाजी आफ कल्चर पृ० 179
2 वही पृ० 200
3 कार्निलियस कासोरियस एड डिमाक्रसी अध्याय 22 एनदर थियरी आफ डिमाक्रसी उपयोग का प 16 भी देखें
4 वही पृ० 296-97
5 वही पृ० 28६

6 ए० डाउन्स एन इकानामिक थियरी आफ डिमाक्रेसी पृ० 295 96

7 अब तक अन्तराष्ट्रीय सबधों के अध्ययन म खेलों के सिद्धान्त का विस्तृत तौर पर प्रयोग हुआ है विशेषत आजकल प्रचलित युद्ध खेलों म इस क्षेत्र म उनके उपयोगों की समालोचनात्मक समीक्षा रेमड एरन न पेस एट ग्वेर एन्त्रे लेस नशन्स के अन्तिम अध्याय 'स्ट्रैटीजी रेशनल एट पालिटिक रेशनल' म पृ० 751 70 पर की है

8 रेमड एरन सोशल स्ट्रक्चर एड दि रूलिंग क्लास ब्रिटिश जनरल आफ सोसियालाजी I (1), पृ 10

9 ऊपर उद्धृत निबध म रेमड एरन कहता है कि किसी भी समाज म इसके सिवाय दूसरा कोई उपाय ही नहीं है कि सरकार चन्द लोगों के हाथों म रहे सरकार जनता के लिए होनी है मगर वह जनता द्वारा कभी नही चलाई जाती

10 हालांकि उसने आधुनिक लोकतन्त्र के विकास म कारकों के रूप म समानता की वद्धि तथा अभिजनों और जनसाधारण के बीच की दूरी के घटने का विवरण किंचित विसगतिपूर्ण रीति से किया है

11 *उपर्युक्त अध्याय 3 देखिए डब्लू० एल० गटसमन दि ब्रिटिश पालिटिकल* एलीट अध्याय 11 भी देखिए जिसमे यह बताया गया है कि किस प्रकार चद लोगों को राष्ट्रीय नीतियों के निर्माण म भाग लेने के अवसर प्रदान *कर दिया जाता है ब्रिटन म अच्छे और महान लोगों का एक छोटा सा* समूह है जिसम मुख्यत उच्च वर्ग से आये हुए मुश्किल से चन्द हजार लोग हैं जो सलाहकार समितियो शाही आयोगो तथा ऐसे ही अन्य सावजनिक निकायो मे काम करते हैं

12 राबर्ट मिचल्स पालिटिकल पार्टीज

13 कार्ल मार्क्स आन दि ज्यूइश क्वेश्चन

14 इन शब्दो के बारे म देखिए जार्जेस फ्राइडमान दि एनेटामी आफ वर्क

15 ब्रिटेन मे उच्चवर्ग तथा श्रमिकवर्ग के बच्चों के खास चरित्रो का वर्णन यो किया जा सकता है उच्चतर वर्ग के बच्चे को पब्लिक स्कूलो तथा आक्सफोर्ड और कैंब्रिज विश्वविद्यालयो मे शिक्षा दी जाती है जहा से वे व्यापार राजनीति तथा लोकसेवा के प्रशासक वर्ग म जाते हैं श्रमिकवर्ग के बच्चो को राज्य के विद्यालयो अधिकाशत आधुनिक माध्यमिक विद्यालयो म शिक्षा दी जाती है जहा से वे उद्योगो मे शारीरिक श्रम तथा क्लर्की के धधो *मे जाते हैं उनमे से कुछ (25 साल पहले की अपेक्षा यह सख्या अब* अधिक हो गई है) ग्रामर स्कूलो मे तथा वहा से किसी प्रान्तीय विश्वविद्यालय अथवा तकनीकी महाविद्यालय म चले जाते हैं प्रत्येक वर्ग के कुछ बच्चे अपनी नियति से निकल भागते हैं लेकिन ऐसे लोगो की सख्या इतनी कम है कि उससे स्थिति मे कोई अतर नही आता सयुक्तराज्य अमरीका की शिक्षाव्यवस्था ब्रिटेन व यूरोप के अन्य देशो से भिन्न है हालांकि वहा हाल के वर्षों म ही परिवर्तन हुआ है वहा प्रत्येक वर्ग मे निश्चित आयसमूह के बच्चो का एक बडा भाग (लगभग 90 प्रतिशत) सत्रह वर्ष की आयु तक माध्यमिक शिक्षा प्राप्त करता है और काफी बडा भाग (लगभग 35 प्रतिशत) अध्ययन के

लिए विश्वविद्यालयो मे जाता है

16 कार्ल मानहाइम एस्सेज आन दि सोसियालाजी आफ कल्चर

17 टी० एस० इलियट नोट्स टुवर्ड स दि डेफीनीशन आफ कल्चर इलियट मानहाइम के इस विचार की आलोचना करता है कि आधुनिक समाजो मे अभिजन पूर्ववर्ती शासकवर्गों के कृत्यो की पूर्ति पर्याप्त रीति से कर सकते हैं वह यह नही देखता कि मानहाइम ने स्वय पहले ही इस आलोचना का निरूपण कर लिया था वस्तुत ऐसा प्रतीत होता है कि मानहाइम आधुनिक समाज मे अभिजनो के स्थान के बारे मे किसी निश्चित राय पर नही पहुच पाया कभी वह लोकतन्त्र के सुरक्षा कवच के रूप मे अभिजनो की होड के पक्ष मे तर्क देता है, और कभी बुद्धिवादियो के एकल अभिजन के शासन का समर्थन करता है तथा अतत वह यह सुझाव देता है कि कोई भी अभिजन अथवा अभिजनो का कोई भी समूह तब तक राजनीतिक स्थिरता उत्पन्न नही कर सकता जब तक कि वह शासकवर्ग का स्वरूप ग्रहण न कर ले इसलिए उसे विद्यमान उच्चतर वर्ग के साथ मिलना पडता है और वशानुगत तथा सपत्तिशाली समूह बन जाना पडता है मानहाइम ने केवल एक धारणा पर समावेश नही किया है वह है वर्गहीन समतावादी समाज

18 रेमण्ड ऐरन सोशल स्ट्रक्चर एण्ड दि रूलिंग क्लास, ब्रिटिश जनरल आफ सोसियालोजी I (2) पृ० 129

19 अरस्तू पालिटिक्स

# अभिजनो की समानता

□ □

लोकतत्र म व्यक्तिया के बीच काफी मात्रा म समानता का अस्तित्व अनिवाय माना गया है। इस समानता के दो अथ है 1 समाज के जीवन के महत्वपूण पक्षा को प्रभावित करनवाले निणया पर समाज के समस्त वयस्क सदस्या का यथासभव समान प्रभाव होना चाहिए, 2 सपत्ति, सामाजिक श्रेणी अथवा शिक्षा तथा ज्ञान तक पहुच के मामल म विद्यमान असमानताए इतनी अधिक नही होनी चाहिए कि उनके परिणामस्वरूप जीवन के विविध क्षेत्रा म मनुष्यो के कुछ समूह स्थायी तौर पर दूसरो की अधीनता की स्थिति म पहुच जाए अथवा राजनीतिक अधिकारा के वास्तविक प्रयाग के मामले म बडी विषमताए उत्पन्न हा जाए। समानता के हिमायतिया न ऐसा बेवकूफी का दावा कभी नही किया कि शरीर रचना बुद्धिमत्ता अथवा चरित्र के मामले म सभी व्यक्ति हूबहू एकसे हाते है। उन्हान अपन तर्कों का विविध मुद्दा पर आधारित किया, जिनम से तीन का विशिष्ट महत्व ह प्रथम मुद्दा यह ह कि अपनी व्यक्तिगत वैचारिक सनका के बावजूद मानवमात्र कुछ बुनियादी मामला मे बहुतकुछ एकसमान ह उनकी भौतिक, सवेगात्मक तथा बौद्धिक आवश्यकताए एकसी हाती है। यही कारण है कि एक पोषण विज्ञान तथा काफी हद तक मानसिक स्वास्थ्य और उपचार तथा बच्चा की शिक्षा के विज्ञानो का अस्तित्व सभव है। इसके अतिरिक्त व्यक्तियो के गुणा म भिन्नताओ का दायरा अपक्षतया घट गया ह तथा ये भिन्नताए अथवा विविधताए उस दायरे के मध्य म ही एकत्र हा गइ है। यदि ऐसा न होता अर्थात यदि मनुष्यो म मात्रा के बजाय किस्म का अतर होना एक सिरे पर हिंस्र पशुवत मनुष्य होते और दूसरे सिरे पर देवदूत अथवा दैवी पुरुष होत ता समतावादिया के पक्ष का एक तथ्यात्मक आधार समाप्त हो जाता।

दूसरा मुद्दा यह है कि मनुष्यों में व्यक्तिगत अंतर तथा उनके बीच सामाजिक अंतर दो अलग बातें हैं। बहुत समय हुआ, रूसो ने इस महत्वपूर्ण अंतर का उल्लेख किया था 'मेरी धारणा है कि मनुष्य जाति के सदस्यों में दो प्रकार की असमानताएं हैं एक, जिसे मैं प्राकृतिक अथवा भौतिक असमानता कहता हूं क्योंकि उसकी स्थापना प्रकृति ने की है तथा जो आयु, स्वास्थ्य, शारीरिक शक्ति तथा मस्तिष्क और आत्मा के गुणों के अंतर में निहित है, तथा, दूसरी को नैतिक अथवा राजनीतिक असमानता कहा जा सकता है, क्योंकि वह एक प्रकार के रिवाज (परिपाटी कनवेंशन) पर आधारित होती है, तथा उसकी स्थापना मनुष्यों की सहमति से होती है अथवा कम-से कम उसे उसके द्वारा अधिकृत रूप प्राप्त होता है। यह दूसरी असमानता उन विभिन्न सुविधाओं में निहित होती है जिनका उपभोग कुछ लोग दूसरों को उनसे वंचित रखकर करते हैं, जैसे अधिक धनी, अधिक सम्मानित, अधिक शक्तिशाली अथवा ऐसी स्थिति में होना जहां से दूसरों को आज्ञापालन के लिए विवश किया जा सके।'[1] यह बात निश्चयपूर्वक नहीं कही जा सकती कि ये दोनों प्रकार की असमानताएं आधुनिक काल तक चले आनेवाले अधिकांश समाजों में किस सीमा तक एक जैसी रही हैं। अभिजनों के परिसंचार के सिद्धांत का प्रयोजन अंशतः यह बताना था कि उनमें इस विषय में समानता थी, अर्थात प्रत्येक समाज में अधिकांश योग्य व्यक्ति अभिजन के भीतर प्रवेश करने अथवा एक नए अभिजन की स्थापना में सफल हो जाते थे जो कालांतर में प्रमुखता धारण कर लेता था। लेकिन हम पीछे यह देख चुके हैं कि इस स्थापना के समर्थन में प्रस्तुत ऐतिहासिक साक्ष्य नितांत अनिश्चयात्मक है, तथा आधुनिक समाजों के बारे में उपलब्ध अन्य प्रचुर साक्ष्यों से यह बात पुष्ट नहीं होती जबकि इन आधुनिक समाजों के बारे में यह सत्य है कि इनमें सामाजिक संचार की मात्रा असामान्य रूप से अधिक होती है। समाज की प्रमुख असमानताएं मुख्यतः समाज की ही उपज होती हैं, उनका सृजन और संरक्षण संपत्ति तथा उत्तराधिकार की संस्थाएं, तथा राजनीतिक और सैनिक शक्तियां करती हैं एवं विशिष्ट आस्थाएं और सिद्धांत उनका समर्थन करते हैं हालांकि वे असाधारण व्यक्तियों की आकांक्षाओं का कभी पूर्णतया प्रतिरोध नहीं करते।

ये मुद्दे हम तीसरे मुद्दे की दिशा में ले जाते हैं जिसका संबंध समतावादी तर्कों के चरित्र से है। यदि समानता और असमानता में से कोई भी प्राकृतिक नियम नहीं है जिसे मनुष्य को स्वीकार करना ही पड़े तब इनमें से किसी की भी हिमायत पूर्णतया तथ्यों पर आधारित वैज्ञानिक तर्कों द्वारा नहीं की

जा सकती वरन उसके लिए नैतिक और सामाजिक आदर्शों की रचना करनी होती है। हम समानता का चुनाव कर सकते हैं हालांकि ऐसा करते समय हम उन यथार्थ स्थितियों पर ध्यान देना ही होगा जो इस आदर्श की व्यावहारिकता तथा इसकी पूर्ति के लिए उपयुक्त साधनों पर प्रभाव डालती है। हमारे चयन के पक्ष में जुटाए गए अंतिम तर्क अपने आप में कोई तथ्य अथवा यथार्थमूलक स्थिति नहीं होते वरन वे इस बात का तर्कबद्ध दावा मात्र होते हैं कि समानता की तलाश में एक अधिक सराहनीय समाज का निर्माण हो सकता है। 'हम' शब्द से मेरा तात्पर्य बीसवीं शताब्दी के समाजों में जी रहे लोगों से है। उससे पहले तो एक स्थिर और टिकाऊ समतापरक समाज की व्यावहारिक धारणा का उदय होना ही कठिन था क्योंकि उस समय आर्थिक जीवन अनिश्चित था, संचार के प्रभावशाली साधनों का अभाव था, शिक्षा अपर्याप्त थी तथा सामाजिक संरचना और व्यक्तिगत चरित्र के बारे में ज्ञान का अभाव था। बीसवीं शताब्दी इस मामले में अनुपम रही कि उसने मनुष्यों को यह अवसर और साधन प्रथम बार दिया है कि वे सामाजिक जीवन का निर्माण अपनी इच्छाओं के अनुसार कर सकते हैं, तथा इसी कारण यह एक आशाजनक शताब्दी और एक विभीषिका—दोनों बन गई है।

यहां मेरा प्रयोजन समानता के पक्ष में एक नैतिक तर्क प्रस्तुत करना नहीं[2], वरन उन सामाजिक और राजनीतिक समस्याओं के बारे में विचार करना है जो समानता की तलाश में बाधा डालती हैं तथा नैतिक आपत्तियों के अतिरिक्त अभिजन सिद्धांतों द्वारा उसके विरुद्ध उठाई जानेवाली अन्य आपत्तियों का अध्ययन करना है। मार्क्स की वर्गहीन समाज की धारणा की समीक्षा से शुरू करना इस विवेचन की दृष्टि से सुविधाजनक रहेगा, क्योंकि वह समानता का आदर्श एक ऐसे रूप में प्रस्तुत करती है जो आधुनिक जगत में उसके किसी भी अन्य रूप की अपेक्षा अधिक व्यापक तौर पर प्रचलित है तथा वही वह प्रमुख स्रोत है जिससे विरोधस्वरूप स्वयं अभिजन सिद्धांतों का जन्म हुआ। यह बात सर्वविदित है कि मार्क्स ने उस समाजवादी समाज की रूपरेखा तैयार नहीं की जिसकी कल्पना और कामना उन्होंने की थी[3] इसके बावजूद भावी समाजवादी समाज का उल्लेख करनेवाली उनकी कृतियों में मोटे तौर पर उसके (समाजवादी समाज के) प्रमुख लक्षणों का स्पष्ट बोध होता है। मार्क्स की वर्गहीन समाज की रूपरेखा में नैतिक, समाजशास्त्रीय तथा ऐतिहासिक तत्वों का समावेश हुआ है। नैतिक पक्ष का विवेचन उनकी कुछ प्रारंभिक पांडुलिपियों में अधिक पूर्णता के साथ हुआ है विशेषत 'इकानामिक एंड फिलासाफिकल मैनुस्क्रिप्ट्स आफ

1844' (1844 की आर्थिक और दार्शनिक पाडुलिपिया)[4] म, तथापि उनकी परवर्ती रचनाओ म उसकी उपेक्षा किसी तरह नही की गई है।[5] इस पहलू से दी गई वर्गहीन समाज की परिभाषा मे कहा गया है कि उसमे मनुष्य अपने व्यक्तिगत भाग्य पर अ य समाज व्यवस्थाओ की अपेक्षा कही अधिक और एकसमान मात्रा म नियत्रण कर सकेंगे, वे राज्य और नौकरशाही तथा पूजी और प्रौद्योगिकी सरीखी अपनी ही रचनाओ के दमन से मुक्त सग्रहशील होने के बजाय उत्पादनशील हो जाएगे, और अ य मनुष्यो के साथ होड की कडवाहट तथा विद्वेष के बजाय उनके सग सामाजिक सहयोग द्वारा सुख और सहारा प्राप्त करेंगे। मार्क्स ने समाज की इस स्थिति की स्थापना के सबध म सदा एसी ही आशावादिता प्रकट नही की[6], किंतु आदर्श के रूप मे इसका परित्याग कभी नही किया। व्यक्ति के आत्मनिर्णय म उनका क्या अभिप्राय ह यह उ होने विभि न प्रकार से व्यक्त किया है। प्रथम व्यक्ति पर से उसके वर्ग अथवा धधे का आधिपत्य समाप्त होना चाहिए। उ होने जरमन आइडियालाजी' म लिखा ' एक वर्ग के व्यक्ति (सदस्य) जिस सामुदायिक सबध म बधत ह तथा जिसका निर्माण एक तीसरे पक्ष के विरुद्ध उनके समान हितो के आधार पर होता है, वह सबध एक ऐसे समुदाय को ज म देता ह जिसके भीतर वे औसत व्यक्ति का रूप ले लेते हैं, अर्थात उन समुदायो म उनके जीवन का उतना ही पक्ष प्रतिबिम्बित होता है जितना कि उनके वर्ग के अस्तित्व की दशाओ के अतर्गत आता है। यह एक ऐसा सबध है जिसम वे व्यक्ति के नही वरन एक वर्ग के सदस्य के रूप म भाग लेते है। परतु क्रातिकारी सर्वहारा के समुदाय द्वारा अपने तथा समाज के अ य सदस्यो के अस्तित्व की दशाओ पर नियत्रण की स्थापना के पश्चात स्थिति एकदम उलट जाती है उसम व्यक्ति व्यक्ति के रूप म ही भाग लेते हैं। व्यक्तियो का ठीक यही सयोग (जो वस्तुत आधुनिक उत्पादक शक्तियो के विकसित स्तर पर निर्भर होता है) मुक्त विकास की दशाओ तथा व्यक्तिगत गतिविधि पर व्यक्तिगत नियत्रण की स्थापना कर सकता है। ये दशाए पहले सयोग अथवा भाग्य के भरोसे छोड दी गई थी तथा उ होने असगठित व्यक्तियो पर तथा उनके विरुद्ध एक स्वतत्र सत्ता प्राप्त कर ली थी।' दूसरा अभिप्राय व्यक्ति को दूरवर्ती, उसकी पहुच से परे तथा अनुत्तरदायी सरकार और प्रशासन के नियत्रण से मुक्त कराना तथा उसको यह अवसर प्रदान करना है कि वह आम सामाजिक महत्व के प्रश्नो पर निर्णय की प्रक्रिया म यथासभव अधिकतम भाग ले सके। इस प्रकार के सहकार के प्रत्यक्ष उदाहरण के तौर पर मार्क्स ने पेरिस कम्यून का उल्लेख किया है जिसम सरकार के कृत्य नगरपालिका परिषद के सदस्यो ने सभाल लिये थ, जिनका निर्वाचन व्यापक

मताधिकार के आधार पर हुआ था जो उत्तरदायी थे और जिन्हें अल्पावधि के उपरान्त हटाया जा सकता था। उसमें कम्यून के सदस्यों से लेकर नीचे के स्तरों तक समस्त सार्वजनिक कृत्यों का पालन करनेवाले अधिकारी तथा कर्मचारी पारिश्रमिक के रूप में श्रमिकों की मजदूरी के बराबर राशि लेते थे।

मार्क्स की धारणा के भीतर समाजशास्त्रीय तत्व का दर्शन इस सिद्धांत के प्रतिपादन में होता है कि असमानता समाजिक वर्गों की संस्थाओं—उत्पादन के स्वामियों तथा अस्वामियों के मध्य समाज के विभाजन तथा और भी बुनियादी तौर पर समाज में श्रम विशेषतः शारीरिक और बौद्धिक श्रम—के विभाजन में निहित होती है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि समानता की स्थापना वर्गों की समाप्ति के द्वारा ही संभव है तथा इसके लिए श्रमिक विभाजन को समाप्त करना अनिवार्य शर्त है। मार्क्स ने हमेशा इस अंतिम शर्त पर बल दिया। 'जरमन आइडियालाजी' में उन्होंने इसे किंचित रूमानी ढंग से बयान किया है : श्रम का विभाजन ज्यों ही शुरू होता है त्यों ही प्रत्येक व्यक्ति को काय का निश्चित और एकान्तिक क्षेत्र मिल जाता है, जो वस्तुतः उस पर लाद दिया जाता है तथा जिसमें वह छुटकारा नहीं पा सकता। वह शिकारी, मछुआरा, गडरिया अथवा समालोचक समीक्षक[7] बन जाता तथा यदि वह अपनी आजीविका का साधन बनाए रखना चाहता है तो उसे वह बना रहना पड़ेगा, जबकि साम्यवादी समाज में किसी का भी कोई एकांतिक कार्यक्षेत्र नहीं होता तथा प्रत्येक व्यक्ति जिस शाखा में चाहे उसमें प्रशिक्षण ले सकता है, उसमें समूचे उत्पादन का नियमन समाज करता है इस प्रकार मेरे लिए (व्यक्ति के लिए) शिकारी, मछुआरा, गडरिया अथवा समालोचक बने बिना ही अपनी इच्छा के अनुसार आज एक और कल दूसरा काम—सवेरे शिकार करना, तीसरे पहर मछली पकड़ना, शाम को पशु पालना और ब्यालू के बाद आलोचना करना—संभव हो जाता है। बाद में 'कैपिटल' (ग्रंथ) के प्रथम अध्याय में उन्होंने यही विचार अधिक यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया है : आज के फुटकर श्रमिक, सीमित व्यक्ति विशिष्ट सामाजिक कृत्यों का ढोनेवाले व्यक्ति का स्थान पूर्ण विकसित व्यक्ति ले लेगा जिसके लिए अपने विविध सामाजिक कृत्य महज विविध वैकल्पिक गतिविधियां बन जाएंगे। इस क्रांति की दिशा में एक कदम अनायास ही उठाया जा चुका है वह है तकनीकी, कृषि और व्यावसायिक विद्यालयों की स्थापना, जिनमें श्रमिक वर्गों के बच्चे प्रौद्योगिकी तथा श्रम के विविध उपकरणों के इस्तेमाल का कुछ व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं।

इस बारे में तनिक संदेह नहीं रह जाता कि जब श्रमिक वर्ग सत्ता संभालेगा तब सैद्धांतिक और प्रायोगिक तकनीकी प्रशिक्षण को श्रमिक वर्गों के विद्यालयों में समुचित स्थान मिल जाएगा। मार्क्स का यह तर्क कृत्यमूलक अभिजनों—पूर्णतया योग्यता के आधार पर भरती किए जानेवाले अभिजनों—की धारणा के भी उतना ही विरुद्ध है जितना कि वर्गों की धारणा के। श्रम का विभाजन तथा उससे भी अधिक सोचने और नियोजन करनेवालों तथा आवश्यक शारीरिक श्रम करनेवालों के बीच किया जानेवाला विभाजक (भेदभाव) निरंतर वर्गव्यवस्था का सृजन करता है, तथा व्यक्ति को ऐसे जीवनमान के भीतर कैद कर देता है जिसका उसने अपने लिए खुद चयन नहीं किया है तथा जिसके भीतर वह अपनी प्रतिभा के समस्त पक्षों के विकास के साधन प्राप्त नहीं कर सकता।

इस धारणा में निहित ऐतिहासिक तत्त्व के दो पहलू हैं। पहला, मार्क्स एक ऐसी ऐतिहासिक योजना पेश करते हैं जो मुख्यतः पाश्चात्य सभ्यता के क्षेत्र पर ही लागू होती है, जिसमें प्रभुत्व और अधीनता—स्वामी और दास, सामंत और खेतिहर मजदूर (सर्फ), औद्योगिक पूंजीपति तथा श्रमिक—विविध रूप एक ऐसी शृंखला का निर्माण करते हैं जिसका प्रमुख लक्षण व्यक्ति के रूप में मनुष्य के गुणों तथा एक सामाजिक श्रेणी के सदस्य के रूप में उसके गुणों के बीच की विषमता के बारे में बढ़ती हुई चेतना है। ऐतिहासिक विकास के दौरान—व्यक्ति के व्यक्तिगत जीवन और श्रम की किसी शाखा तथा उससे संबंधित दशाओं द्वारा निर्धारित जीवन के बीच भेद उत्पन्न हो जाता है। जागीरों की व्यवस्था के अंतर्गत (और उससे भी अधिक कबीले के भीतर) यह स्थिति अभी तक छिपे हुए रूप में मौजूद है। उदाहरण के लिए कुलीन पुरुष सदा कुलीन ही रहता है और साधारण व्यक्ति अपने अन्य संबंधों के बावजूद साधारण ही बना रह जाता है। कुलीनता और साधारणता एक ऐसा गुण हो जाता है जो व्यक्ति के व्यक्तित्व से अलग नहीं किया जा सकता। व्यक्ति के व्यक्तिगत और वर्गीय व्यक्तित्वों के भेद, अर्थात जीवन की दशाओं की संयोगमूलक प्रवृत्ति का उदय, वर्ग का निर्माण होने पर ही होता है, तथा वर्ग स्वयं बुर्जुआ व्यवस्था की उपज है। सर्वहारा वर्ग के व्यक्ति के व्यक्तित्व तथा उसपर उसके श्रम पर लादी गई जीवन-दशा के बीच के अंतर्विरोध का स्वयं उसे बोध हो जाता है, क्योंकि यौवनकाल से लेकर अंत तक उसका बलिदान किया जाता रहता है तथा उसे अपने वर्ग के भीतर उन दशाओं की प्राप्ति का तनिक भी अवसर नहीं मिल पाता जिनसे वह दूसरे वर्ग में प्रवेश पा सके। (दि जरमन

आाज्ियालाजो) इस शृखना म मावस ने एव और पारिभाषिव शब्द जाड दिया, 'भविष्य वा वगहीन ममाज जिमम व्यक्ति वे व्यक्तिगत गुणा तथा उमवे मामाजिव जीवन वी दशाआ वे बीच वाई वडा विराध नही रहगा, प्रत्यव व्यक्ति अपनी शक्तिया (क्षमताआ) वा पूणतया विवसित वर मवेगा और उसे अस्तित्व वे भौतिव साधना वे उत्पादन की विवशता तथा अपनी मरणशील प्रकृति वे कारण ही वतिपय मीमाआ वा अहमास हागा।

दूमरा पहलू यह ह कि मावम वगहीन समाज वा उस प्रवार वा समाज मानता है जिसकी वल्पना तथा स्थापना उस ऐतिहासिव वाल म ही सभव ह जब पूजीवाद पूणतया विवमित हा जाए क्योकि पूजीवाद की चरम अवस्था मानव जाति व इतिहास म प्रथम बार एव ऐसे अधीनवग—अर्थात मवहारा —वा निर्माण वरती ह जिसक भीतर आग किसी सामाजिक विभेदीवरण व तत्व नही रह जात। जब उद्योगा वे पूजीपति स्वामिया वे स्वामित्व व अपहरण वे फलस्वरूप सवहारा वग मुक्त हो जाएगा तब वह नई सामाजिव मस्थाआ वा सृजन वरगा जा इस वग वी अपनी एवरूपता तथा घनिष्ठता वी अभिव्यक्ति करेगी, और समाज म नए सुविधाभोगी ममूहा व निमाण वा रावेंगी।

ममानता वे आधुनिव हिमायतिया म से शायद ही वाई एसा हा जा मावस वे वगहीन समाज वे नतिक आदश से असहमत हा, लेकिन वे उनके उन समाजशास्त्रीय और ऐतिहासिव तर्को पर आपत्ति उठा सवत है जिनके द्वारा मावम ने वगहीन ममाज व उदय तथा उमवे चारित्रिक लक्षणा की व्याख्या की है। वे वगहीन ममाज की उस रूढिपथी मावसवादी व्याख्या पर और भी अधिक आपत्ति उठा सक्ते है परतु यह हाल वे वर्षो म वदलती रही है जिसके कारण यह धारणा महज एक तवनीवी अभिव्यक्ति बनकर रह गई है अर्थात जो एक ऐसी स्थिति का वणन करती है जिसम उद्योगा वा व्यक्तिगत स्वामित्व समाप्त हो जाता ह। मावस वे अपन विवरण वे बारे म प्रमुख आपत्ति यह उठनी चाहिए कि वह एक वगहीन ममाज की उपलब्धियो—वास्तविव समानता और स्वतत्रता—वा चित्रण इस प्रकार करते है मानो वह एकरगी हमेशा के लिए कायम हा जानेवाली स्थिति होगी। अभी, वतमान म मनुष्य पजीवाद की अहम यतापरक, सग्रहशील तथा सघषग्रस्त दुनिया म जी रहे ह, दूसरे ही क्षण प्राग इतिहास का अत हा जाना है तथा वे ही मनुष्य एक वगहीन ममाज की नई

सस्थाओ की रचना म व्यस्त हो जात है। यह आपत्ति मार्क्स के साथ पूरी तरह न्याय नही करती क्याकि वह पूजीवाद और समाजवाद के बीच एक सक्रमणकाल की व्यवस्था करत ह। इस काल को उ होने एक अपशकुनकारी शब्दसमूह—सवहारा की अधिनायकता—मे अभिहित किया है। उन्होने 'साम्यवादी समाज' की दिशा मे विकास की उच्चतर अवस्थाओ का भी उल्लेख किया हे (क्रिटीक आफ दि गाथा प्राग्राम जरमन समाजवादी दल के कायक्रम की टीका)। लेकिन इस अथ मे यह आपत्ति उचित मानी जा सकती है कि मार्क्स पल भर को भी इस सभावना पर विचार नही करते कि कुछ परिस्थितियो के अन्तगत पूजीवाद का स्थान ग्रहण करनेवाले नए समाज के भीतर नए सामाजिक भेद तथा एक नए शासक वग का उदय हो सकता है। उदाहरण के लिए, स्वय सवहारा वग की अधिनायकता म से ही यह नया वग जन्म ले सकता है क्याकि उस अधिनायकता को बहुत आसानी से एक दल की निरकुशता म बदला जा सकता है। मार्क्सवादी चिंतन म यह एक कमजोर कडी है जिस पर अभिजनशास्त्रियो, और उनमे भी विशेष तौर पर मिचेल्स ने सफलतापूवक आक्रमण किया हे। उनकी आलोचना को स्तालिन के शासनकाल म सोवियत सघ तथा पूव यूरोपीय देशा के अनुभवो ने एक नई तकसगति प्रदान की है। इसी कारण रेमड ऐरन वगहीन समाज की परिभाषा इन शब्दो मे कर सका है

इस तरह के समाज म अब भी थोडे से ऐसे लाग रह जात हैं जो प्रत्यक्षत औद्योगिक सस्थाना का सचालन करत है सेना को आदेश दत है, यह तय करते है कि राष्ट्रीय ससाधना का कौन सा भाग बचत और निवेश के लिए निर्धारित किया जाना चाहिए तथा पारिश्रमिक की दरें क्या हो। इन थाडे से लोगा के पास लोकतत्रीय समाज के राजनीतिक शासका की अपेक्षा अनत रूप से अधिक शक्ति होती है क्याकि उनके हाथा म राजनीतिक और आर्थिक दाना शक्तिया सकेंद्रित हो जाती हैं। राजनीतिक, श्रमसघ नेता, सावजनिक अधिकारी (कमचारी) सेनापति और प्रबधक—सबके सब एक ही दल के सदस्य तथा एक अधिसत्तावादी सगठन के अग होत हैं। इस एकताबद्ध अभिजन के पास पूण और निरसीम शक्ति होती है। समस्त मध्यवर्ती निकाया समस्त पृथक समूहा और विशेष तौर पर व्यावसायिक समूहा पर इस अभिजन के प्रतिनिधियो, अथवा या कहा जा सकता है कि राज्य के प्रतिनिधिया का नियत्रण है। वगहीन समाज आम जनता के पास एसा कोई साधन नही छोडता जिसके द्वारा वह अभिजना मे अपनी रक्षा कर सके।[9]

उसके पश्चात एरन इस विवरण पर उठाई गई इस आपत्ति पर विचार करता है कि सोवियत समाज की कमोबेश सही तसवीर को वर्गहीन समाज की धारणा का मूतरूप मानकर भ्रांति उत्पन्न की जा रही है, तथा वह यह स्वीकार करता है कि सिद्धांतत सोवियत समाज से भिन्न प्रकार के वर्गहीन समाज की कल्पना संभव है। तथापि वर्तमान दशाओं में अन्य प्रकार के वर्गहीन समाजों की स्थापना की व्यावहारिक दृष्टि से कोई संभावना नहीं है। राज्य के नियंत्रण करनेवाले चंद लोगों के समूह के हाथों में सत्ता का एकाधिकार स्थापित होने से रोकने के लिए यह आवश्यक होगा कि फिर से सत्ता के अनेक केंद्र स्थापित किए जाएं विविध संस्थानों अथवा ट्रस्टों (न्यासों) को केंद्रित राज्य के बजाय उनमें काम करनेवाले लोगों, स्थानीय समुदायों अथवा श्रमसंघों की संपत्ति बना दिया जाए। इस समय मनोवैज्ञानिक तथा तकनीकी कारणों से इस प्रकार के विकेंद्रीकरण की कोई संभावना नहीं है। यह कल्पना भी की जा सकती है कि सत्तासीन अभिजन एक प्रकार का धार्मिक और सैनिक संप्रदाय बनने के बजाय जनतंत्रीय पद्धति से संघटित किया जा सकता है। यह कल्पना भी सैद्धांतिक दृष्टि से भले ही संभव हो व्यवहार में उसकी तनिक भी संभावना नहीं है। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात यह कि सत्तासीन अभिजन ने जो सैद्धांतिक एकाधिकार स्थापित कर रखा है वह मुझे इस प्रकार की शासन व्यवस्था की एक मूलभूत आवश्यकता के अनुरूप प्रतीत होता है।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि अभिजनों की एकताबद्ध होना उनके हाथों में सकेंद्रित समूची आर्थिक और राजनीतिक शक्ति से अलग नहीं है तथा वह सकेंद्रण स्वयं एक संपूर्णत समूहीकृत अर्थव्यवस्था से अलग नहीं हो सकता।[10]

क्या इन आपत्तियों का समाधान तथा समतावादी समाज के बारे में एक अधिक स्वीकार्य पद्धति का निरूपण संभव है? हम पहले इस बात पर विचार करें कि ऐरन के विवरण में प्रस्तुत सोवियत संघ के वर्गहीन समाज तथा सी० राइट मिल्स द्वारा निरूपित संयुक्तराज्य अमेरिका में विकसित हो रहे जनसमाज (मास सोसाइटी) के बीच कुछ महत्वपूर्ण समानताएं हैं। मिल्स ने जनसमाज और लोकतंत्रीय जनताओं के समाज (सोसाइटी आफ पब्लिक्स) के बीच भेद किया है तथा वह कहता है कि जनसमाज के अंतर्गत जनताओं के समुदाय द्वारा संचार के माध्यमों से व्यक्तियों के अमूर्त पुंज के रूप में प्रभाव (छाप अथवा संस्कार) ग्रहण करने के कारण उन्हें ग्रहण करनेवाले लोगों की अपेक्षा मतों की अभिव्यक्ति करनेवाले लोगों की

सख्या कम होती है। दूसरे, समाज में प्रभावशाली संचारसूत्रों का इस प्रकार संगठन किया जाता है कि व्यक्ति के लिए तुरत अथवा प्रभावशाली रीति से उत्तर देना (प्रतिक्रिया व्यक्त करना) कठिन अथवा असंभव होता है। तीसरे, मत के क्रियान्वयन पर उन अधिकारियों का नियंत्रण होता है जो इस प्रकार की कार्यवाही का संगठन और नियंत्रण करते हैं। चौथे, जन (मास) संस्थाओं से मुक्त अथवा स्वतंत्र नहीं होता, इतना ही नहीं, अभिकृत संस्थाओं के एजेंट अथवा अभिकर्ता इस जन में घुस जाते हैं तथा विचार विमर्श द्वारा मत के निर्माण की बची खुची स्वतंत्रता को और भी कम कर देते हैं।'[11] वर्गहीन समाज तथा जनसमाज का सबसे अधिक महत्वपूर्ण लक्षण मध्यवर्ती संगठनों का ह्रास अथवा उनका सर्वथा अभाव है तथा सभी प्रकार के संगठनों के भीतर नेताओं तथा जनों के बीच दूरी बढ़ती जाती है। जहां तक मध्यवर्ती स्वैच्छिक संगठनों का सवाल है वे इतने छोटे होते हैं कि व्यक्ति उनकी गतिविधि के नियंत्रण में प्रभावशाली रीति से भाग ले सकता है इसीलिए वे लोकतंत्र की दृष्टि से महत्वपूर्ण माने जाते रहे हैं। जाहिर है कि ये लक्षण सोवियत पद्धति के समाजों में पाश्चात्य देशों की अपेक्षा कहीं अधिक उजागर हैं। पाश्चात्य समाजों में संघ बनाने पर किसी प्रकार का राजनीतिक अथवा वैधानिक प्रतिबंध नहीं होता तथा उनमें बड़े संगठनों के बीच नागरिक का समर्थन प्राप्त करने के लिए खुली तथा छिपी हुई दोनों प्रकार की होड़ चलती है। किंतु कुछ समान लक्षण भी हैं जिनका सृजन अधिक सामान्य कारणों से हुआ है जिनमें उत्पादन, संचार आदि के माध्यमों के क्षेत्र में होनेवाली औद्योगिक प्रगति के कारण संगठनों के आकार में होनेवाली वृद्धि, हर किस्म की अर्थव्यवस्था में आर्थिक उत्पादन पर राज्य के बढ़ते हुए नियंत्रण तथा प्रभाव तथा राष्ट्रों के बीच अर्द्ध युद्धस्तर पर संगठित अंतर्राष्ट्रीय प्रतिद्वंद्विता की गणना की जा सकती है जो केंद्रित तथा अधिसत्तावादी राजनीतिक नेतृत्व के विकास के लिए अनुकूल होती है। यहां यह बात स्मरणीय है कि जहां तक अर्थव्यवस्था की किस्म का सवाल है उसका निर्धारण अधिकांशत विराट पैमाने पर युद्धसामग्रियों के उत्पादन द्वारा होता है।

इन प्रतिकूल प्रभावों में से सबका सामना एक ही समाज में प्रभावशाली रीति से नहीं किया जा सकता, वे राष्ट्रों के पारस्परिक संबंधों में परिवर्तन की भी मांग करते हैं। जिन समस्याओं का समाधान राष्ट्रीय स्तर पर संभव है वे प्रधानत संगठनों के आकार और उनकी जटिलता में से तथा समाजों में एकत्र संकेन्द्रण है विशेषत सम्मृद्ध (समष्टिवादी) अर्थव्यवस्था के भीतर

हितों की दृष्टि से आवश्यक विविध प्रकार के नियंत्रणों के अधीन रहते हुए भी कीमत और उत्पादन की किस्म के मामले में कम-से-कम उतनी प्रभावशाली रीति से परस्पर होड़ कर सकते हैं जितनी प्रभावशाली रीति से इस समय निजी उद्यमों में होड़ चलती है। युगोस्लाविया में इस प्रकार की व्यवस्था की उपलब्धियां जिसमें सार्वजनिक स्वामित्व को एक प्रकार की बाजार अर्थव्यवस्था के साथ जोड़ दिया गया है यह सिद्ध करती हैं कि अनेक व्यावहारिक कठिनाइयों के बावजूद यह आर्थिक संगठन का व्यावहारिक रूप है, तथा अब महज कल्पित स्वप्न नहीं रह गया है।[12] यह मानने का कोई कारण प्रतीत नहीं होता कि जिन उन्नत औद्योगिक समाजों को प्रारंभिक पूंजी संचय का कठिन कार्य नहीं करना पड़ता उनमें केंद्रीय नियोजन सत्ता द्वारा सार्वजनिक स्वामित्व व्यवस्था के अंतर्गत अर्थव्यवस्था का नियंत्रण, समग्रत निजी उद्यमव्यवस्था की अपेक्षा अधिक कठोर अथवा अधिसत्तावादी होना ही चाहिए क्योंकि दोनों व्यवस्थाओं में लगभग एक सी ही समस्याओं का सामना करना पड़ता है, तथा एक सी तकनीकें अपनाई जाती हैं। उदाहरण के लिए फ्रांस में युद्धकाल के दौरान आर्थिक नियोजनकर्ताओं की शक्तियां काफी अधिक थीं तथा उनपर जनता के निर्वाचित प्रतिनिधियों का कोई कठोर नियंत्रण न था। ब्रिटेन में हाल में ही स्थापित नेशनल इकनामिक डेवलपमेंट काउंसिल (राष्ट्रीय आर्थिक विकास परिषद्) को यदि अपनी गतिविधि को सार्थक बनाना होगा तो उसे केंद्रीय सरकार द्वारा लागू की जानेवाली पाबंदियों और प्रोत्साहनकारी रियायतों की मांग करनी होगी जिससे कि आर्थिक वृद्धि वांछित किस्म और दर के अनुरूप हो सके।

मेरा विचार है कि ये तमाम बातें एरन के इस दावे के बारे में गंभीर शंका उत्पन्न करने के लिए काफी हैं कि समूहीकृत अर्थव्यवस्था के भीतर सत्ता का प्रामाणिक विकेंद्रीकरण, अथवा बौद्धिक और सांस्कृतिक एकरूपता से बच पाना, असंभव होगा। सचमुच यह सही है कि जिस वर्गहीन समाज में विकेंद्रीकरण दूरगामी रहा हो तथा जिसमें विविध स्वतंत्र संगठन पनप रहे हों वहां समाज के सदस्यों में उसके संगठन के सामान्य रूपों के बारे में कुछ बुनियादी सहमति होना अनिवार्य है। लेकिन यह तो हर उस समाज के लिए लाजमी है जो टिकना चाहता है तथा जैसा कि हम पीछे अध्ययन कर चुके हैं, जो लोग लोकतंत्र को प्रतिस्पर्धी अभिजनों की बहुलात्मकता पर आधारित मानते हैं वे भी यह शर्त लगाते हैं कि प्रतिस्पर्धा दूरगामी नहीं होनी चाहिए तथा समाज में एक बुनियादी सहमति होनी चाहिए। समानता के हिमायतियों की यह आशा है कि जो समाज तेजी से इस आदर्श की ओर

उसकी बढ़ती हुई दर के कारण अगले एक या दो दशकों के भीतर समस्त विकसित औद्योगिक देश प्रत्येक श्रमिक से प्रति सप्ताह केवल 25 या 30 घंटे काम लेकर उसे पूरी मजदूरी देने में समर्थ हो जाएंगे। ये देश एक नया तथा क्रांतिकारी तथ्य निर्मित करने की स्थिति में पहुंच गए हैं, उसका नाम है 'अवकाशसंपन्न वर्ग' (लेजर क्लास), जिसमें समूची जनसंख्या का समावेश होगा। संयुक्तराज्य अमरीका में समाज की इस स्थिति के लक्षण प्रकट होने लगे हैं। उदाहरणार्थ, 1962 में अंतर्राष्ट्रीय बिजली कर्मचारी बिरादरी (इंटरनेशनल ब्रदरहुड आफ इलेक्ट्रिकल वर्कर्स) की न्यूयार्क शाखा ने अपने सदस्यों के लिए बुनियादी तौर पर पांच घंटे के दिन और पच्चीस घंटे के पांच दिवसीय श्रम सप्ताह की व्यवस्था करा ली।[13] तीसरे, यदि सार्वजनिक स्वामित्ववाले उद्योगों में वैसी व्यवस्था लागू कर दी जाए, जिसकी चर्चा मैंने पीछे की है, तथा उस प्रकार का सार्वजनिक स्वामित्व समस्त बड़े उद्यमों में स्थापित हो जाए, तो शारीरिक श्रमिकों तथा बौद्धिक कर्मियों के कार्य की गतिविधि का क्षेत्र बहुत काफी मात्रा में विस्तृत हो सकता है। व्यक्तिगत श्रमिक (कर्मी) अपने विशिष्ट कार्य तक सीमित नहीं रहेगा, वरन वह उत्पादन के नियोजन और प्रबंध में भी भाग ले सकेगा।

श्रमिक जीवन के संगठन के ये विविध परिवर्तन कुल मिलाकर श्रम के विभाजन की मूल भावना में भारी संशोधन कर डालेंगे। जैसाकि मार्क्स ने सोचा था, पर्याप्त अवकाश मिलने पर व्यक्ति को एक से अधिक कार्य में लगने, भौतिक और बौद्धिक दोनों प्रकार के विविध कार्यक्षेत्रों में आत्माभिव्यक्ति करने, आर्थिक उत्पादक के रूप में प्रबंध में भाग लेने तथा प्रौद्योगिकी उद्योग जिस विज्ञान पर आधारित है उसका यत्किंचित ज्ञान प्राप्त करने के कारण अपनी क्षमताओं के बहुविध विकास के अवसर प्राप्त होंगे।

श्रम का विभाजन महज एक ऐसी विधि (तकनीक) बन जाएगा जिसका उपयोग मनुष्यों को अपने जीवन साधनों के उत्पादन के लिए करना होगा लेकिन उसपर उनका नियंत्रण भी रहेगा। उसमें उनके समूचे जीवन को एक खास आकार देने तथा उसे अवरुद्ध करने—यानी संयोजन पंक्ति में एक व्यक्ति को हमेशा के लिए श्रमिक, दूसरे को क्लर्क और तीसरे को उद्योगपति बनाने—की क्षमता नहीं रहेगी। इन परिवर्तनों में शिक्षा का समस्त रूपों में व्यापक विस्तार—सर्वव्यापी माध्यमिक शिक्षा की अवधि के विस्तार, 18 से 21 वर्ष के आयुसमूह के अधिक विद्यार्थियों के लिए उच्चतर शिक्षा, बड़े पैमाने पर वयस्क शिक्षा तथा जो लोग परिपक्वावस्था में नये व्यवसायों का

प्रशिक्षण लेना चाहते ह उनके लिए विशेष सुविधाओ की व्यवस्था—तथा बडे पैमाने पर क्रीडा और मनोरजन के उपकरणो का प्रबध निहित है, तथा उनकी ये उपलब्धिया सामने आने लगी हैं। शायद इस वर्णन की समाप्ति के साथ ही मुझे एक विख्यात ब्रिटिश अर्थशास्त्री के शब्द उद्धृत करके यह दिग्दर्शित करना चाहिए कि जगत म नये और क्रातिकारी विचार कितनी धीमी गति स अपना स्थान बनाते है। इस अर्थशास्त्री अलफ्रेड माशल ने भावी समाज के अतगत श्रम की जिस भूमिका की कल्पना की थी वह मार्क्स के चितन के बहुत समीप ठहरती है। 1873 म प्रकाशित अपने निबंध 'दि फ्यूचर आफ दि वर्किंग क्लासेज' (श्रमिक वर्गों का भविष्य) म माशल ने लिखा था

मनुष्य स्वभावत प्रतिदिन आठ दस या बारह घटे का कठोर शारीरिक श्रम सहन कर लेते है। हम इस तथ्य स इतनी भली भाति परिचित हैं कि यह महसूस ही नही कर पाते कि यह तथ्य विश्व के नतिक और मानसिक इतिहास को कितनी बडी मात्रा म प्रभावित करता ह यह बात हम मुश्किल से समझ पाते है कि मनुष्य का विकास अवरुद्ध करने म मनुष्य के शरीरश्रम का प्रभाव कितना अधिक सवव्यापी और शक्तिशाली हो सकता है। श्रेष्ठ अथ म श्रम, अर्थात शक्तियो का स्वस्थ और ऊर्जापूर्ण प्रयोग जीवन का लक्ष्य है स्वय जीवन ही है तथा इस अथ म (माशल की कल्पना के आदश समाज म) प्रत्येक मनुष्य इस समय की अपेक्षा अधिक पूर्ण रूप म श्रमिक बन जाएगा लेकिन मनुष्य उस सीमा तक महज शारीरिक श्रम करना बन्द कर देंगे जिससे उनकी उच्चतर शक्तिया शिथिल हो जाती है। जिस अथ म श्रम मनुष्य के जीवन को कुचल डालता ह उस निकृष्ट अथ म उसे गलत समझा जाएगा। लोगो की सक्रिय शक्ति निरतर बढती जाएगी, तथा प्रत्येक नयी पीढी म यह बात और अधिक सही उतरेगी कि प्रत्येक मनुष्य पेशे स भद्र पुरुष था। यह वह स्थिति होगी जिसका चित्रण या किया जा सकता है कि उसम प्रत्येक व्यक्ति की शक्तिया और क्षमताए पूणतया विकसित हो सकेंगी तथा मनुष्य इस समय की अपेक्षा कम नही वरन अधिक काम करेंगे। इस बात का अच्छे शब्दो म कहा जाए तो या भी कहा जा सकता है कि उनका अधिकाश काय प्रेम का काय होगा। वह एक ऐसा काय होगा जो बदले मे कुछ पाने के लिए किया जाए या निःस्वार्थ भाव स, उसम उनकी शक्तियो का उपयोग और हर स्थिति म पोषण ही होगा। व्यक्ति की उच्चतर प्रवृत्ति के मुक्त विकास और वद्धि के अवसर अवरुद्ध करनेवाला अतिशय शरीरश्रम मात्र ही उस आदश समाज म समाप्त होगा, लेकिन वह सचमुच समाप्त हो जाएगा। श्रमिक वग इस अथ म समाप्त हो जाएगा कि उसके सदस्यो को अतिशय श्रम नही करना पडेगा।'[4]

अब तक मैंने वर्गहीन समतावादी समाज के विरुद्ध उठाई जानेवाली मुख्यतः उन आपत्तियों के बारे में विचार किया है जो प्रधानतः बौद्धिक दमन की सत्ता तथा राजनीतिक अधिनायकवाद के खतरों को अपना विषय बनाती है। इसके अतिरिक्त आलोचना का एक अन्य आधार भी है जो अभिजनों की समस्या का एक भिन्न पहलू उजागर करता है। प्रायः किसी न किसी रूप में यह कहा जाता रहा है कि सभ्यता का विकास असामान्य रूप से प्रतिभाशाली लोगों की थोड़ीसी संख्या पर निर्भर रहा है, तथा हमेशा ही ऐसा होता है। ओरतगा वाई गसत ने 'दि रिवाल्ट आफ मासेज' में लिखा है "व्यक्ति जैसे-जैसे जीवन में आगे बढ़ता जाता है उसे यह बात अधिकाधिक मात्रा में महसूस होती जाती है कि अधिकांश स्त्री पुरुष उस प्रयास (श्रम) के अतिरिक्त और कोई भी प्रयास करने में असमर्थ होते हैं जो बाह्य दबाव के कारण उनपर कठोरतापूर्वक लाद दिया जाता है। इसी कारण, समाज में सहज तथा प्रसन्नतापूर्वक प्रयास (श्रम) करने में समर्थ थोड़े से लोग दूसरों से अलग थलग दिखाई पड़ते हैं, तथा हमारी चेतना में वे विशिष्ट स्थान ग्रहण कर लेते हैं। ये ही थोड़े से लोग कुलीन और एकमात्र सक्रिय लोग हैं। वे महज प्रतिक्रियाशील नहीं होते वरन जीवन उनके लिए एक सतत प्रयास बन जाता है एक अखंड प्रशिक्षण।[15] इसी प्रकार क्लाइव बेल ने अपनी पुस्तक 'सिविलेजेशन (सभ्यता) में कहा है कि सभ्य समाज का प्रमुख लक्षण तर्कसंगतता और एक मूल्यचेतना है तथा इन गुणों का सृजन, प्रत्यारोपण और संरक्षण अभिजन द्वारा ही हो सकता है। निश्चय ही इन लेखकों की कुछ धारणाएं सही हैं, जैसे— असाधारण व्यक्तियों के कार्यों द्वारा सभ्यता में भारी प्रगति हुई है। (अन्य असाधारण व्यक्तियों के कारण उसकी अवनति भी हुई है), परंतु इसका अभिप्राय यह नहीं है कि ऐसे लोग और उनके सहकारी अथवा अनुयायी मिलकर एक सामाजिक अभिजन का गठन कर लेते हैं, तथा ऐसा तो और भी कम देखने में आया है कि वे स्वयं शासक अभिजन बन गए हों। संभव है कि उन्हें अत्यल्प सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त हो अथवा समाज के शासक उनका जानबूझकर अपमान ही करते हों। वे आर्थिक दृष्टि से उच्चतर वर्ग के संरक्षण पर आश्रित हो सकते हैं किंतु इसके लिए यह आवश्यक नहीं है कि वे उसका अंग हों अथवा अंग बन जाएं। समाज को उनकी देन व्यक्तिगत किस्म की होती है तथा साधारणतया वह एक पृथक सामाजिक समूह की रचना पर निर्भर नहीं होती। बहुधा उनके कार्य के प्रति समूचे समाज (पांचवीं शताब्दी के एथेंस की तरह) अथवा समूचे वर्ग (पुनर्जागरण काल के इटली अथवा अठारहवीं शताब्दी के फ्रांस की तरह) द्वारा व्यक्त किया जाने वाला समर्थन और उत्साह उसपर कहीं अधिक गहरा प्रभाव डालता है।

एसा माना जा सकता है कि असाधारण लोग उस अर्थ मे स्वय एक अभिजन होते है जो अथ परेतो न उसे पहले पहल दिया था, अथात उन विशेषज्ञो की श्रेणी के अर्थ म जिनमे अपने काय के मामले म सर्वोच्च योग्यता होती है। हा यह बात अवश्य है कि जिन अनेक गतिविधियो का सभ्यता की प्रगति स कोई भी सबध नही है इस अर्थ म उनका भी समावेश हो जाएगा। इस प्रकार परिभाषित अभिजन प्रतिभाशाली व्यक्तियो का समूह होते है न कि असाधारण सृजनशक्तिया वाले लोगो का समूह। सृजनशील लोगो के लिए किसी अन्य शब्द का प्रयोग उचित होगा जसे अर्नाल्ड टायनबी ने अपने ग्रथ स्टडी आफ हिस्टरी' मे 'सृजनशील अल्पसख्या (क्रियेटिव माइनारिटी) शब्द का प्रयोग किया है। वह कहता है 'सामाजिक सृजन के समस्त कार्यो म सृजनकर्ता या तो सृजनशील व्यक्ति होत है या अधिक से अधिक एक सृजनशील अल्पसख्या।[16]

जो लोग बौद्धिक और कलात्मक सृजनशीलता के महत्व का उल्लेख करके अभिजन सिद्धाता की हिमायत करत हैं वे दो भूलो के शिकार होते हैं पहली भूल तो यह कि वे सृजनशील व्यक्तियो तथा उनके समाज के बीच चलने वाले महत्वपूण घात प्रतिघात की उपेक्षा कर देते है—वह घात प्रतिघात वैज्ञानिक काय मे शायद सबसे अधिक स्पष्ट है, लेकिन उसे चित्रकला अथवा स्थापत्य साहित्य, धार्मिक आदोलना और नैतिक सुधारो के क्षेत्र म भी खोजा और पाया जा सकता है—तथा दूसरी भूल यह है कि वे यह मान लेत है कि इस प्रकार के व्यक्ति ऐसे अभिजन अथवा अभिजनो के रूप म सगठित हो जात है जिनका अस्तित्व एक सोपानवत समाज म ही सभव होता है तथा जो उस समाज म ही भली प्रकार बन रह सकते है जो स्थिर तथा टिकाऊ वर्गो म बटा हो। टी० एस० इलियट न अपनी पुस्तक 'नोटस टुवडस दि डेफीनीशन आफ कल्चर' म कहा है कि इस अंतिम धारणा म चर्चा का विषय सस्कृति के सृजन की जगह सस्कृति का सचार हो जान की सभावना रहती है। इलियट की दष्टि म, प्रत्येक जटिल समाज के भीतर सस्कृति के अनेक स्तर होते है, समाज के स्वास्थ्य के लिए यह बात महत्वपूण है कि ये विभिन्न स्तर एक दूसरे से सबधित हो साथ ही वे पृथक भी बन रहे, तथा समूचे समाज का आचरण और उसकी रुचिया सर्वोच्च सस्कृति से प्रभावित होनी चाहिए। सस्कृति का सचार मूलत परिवार द्वारा ही हो सकता है अत यह तभी सभव है जब समाज मे पीढी दर पीढी एक निश्चित जीवनपद्धति बनाए रखने मे समर्थ परिवारो से मिलकर बननेवाला एक उच्च वर्ग हो। इलियट यह स्वीकार करता है कि एक उच्च वर्ग का अस्तित्व उच्च सस्कृति की

गारंटी रही है । मैंने संस्कृति की जिन दशाओं का विश्लेषण किया है उनमें उच्च कोटि की सभ्यता का उदय होना अनिवार्य नहीं है । मैं केवल इस बात पर जोर देना चाहता हूँ कि इन दशाओं के अभाव में उच्चतर सभ्यता के अस्तित्व की कोई संभावना नहीं होगी ।[1] मगर यह संभावना हो भी सकती है । हम अभी तक समतावादी समाज की जीवनपद्धति का प्रत्यक्ष अनुभव नहीं है तथा हम संस्कृति के एक उच्च स्तर के सृजन और संरक्षण के बारे में उसकी सामर्थ्य के बारे में अटकल लगाने के सिवा और कुछ नहीं कर सकते । सृजन एक व्यक्तिगत कर्म है, किंतु समूचे समाज के भीतर व्याप्त उत्साह और जीवंतता से उसमें सुगमता हो जाती है तथा मोटे तौर पर यह अपेक्षा की जा सकती है कि समतावादी समाज अपनी उदार अवकाश व्यवस्था तथा प्रतिभा के विकास के लिए व्यक्तियों को दिए जानेवाले प्रोत्साहन के द्वारा कम-से-कम उन समाजों के समान सृजनशील तो होगा ही जिन्होंने उन प्रारंभिक जमानों में महान उपलब्धियाँ की जबकि समाज की आर्थिक दशाओं तथा वर्गसंरचना का तेजी से रूपांतरण हो रहा था । जहाँ तक एक उच्च संस्कृति के संरक्षण और संचार का मामला है, हम इस विचार के प्रति असहमति प्रकट कर सकते हैं कि यह मुख्यतः परिवार का कार्यक्षेत्र रहा है तथा रहना चाहिए । अतीत में संस्कृति के संचार में अन्य अनेक सामाजिक समूहों—धार्मिक समुदायों, दार्शनिक विचार संप्रदायों, अकादमियों आदि का परिवार के समान महत्त्व रहा है । परिवार, अर्थात समाज के उच्चतर वर्गों के परिवारों ने आमतौर पर उन्हीं मूल्यों का संचार किया है जो उन समुदायों द्वारा संरक्षित और जीवित रखे गए थे जिनकी सभ्यता में पीढ़ी पर पीढ़ी बहुत स्थिरता नहीं थी । वर्गहीन समाज में उच्च संस्कृति तथा निम्न कोटि की संस्कृति के बीच बहुत अधिक भेद नहीं रहेगा, और प्रादेशिक तथा स्थानीय विविधता अधिक उग्र रूप धारण कर सकती है । उसमें सांस्कृतिक विरासत का हस्तांतरण शिक्षण संस्थाओं तथा विविध प्रकार के स्वैच्छिक समुदायों द्वारा अतीत की अपेक्षा कहीं अधिक मात्रा में तथा कतिपय परिवारों द्वारा पहले के मुकाबले कम किए जाने की संभावना रहेगी । यह भी संभव है कि वर्तमानकालीन समाजों में वर्गीय विशेषाधिकारों के साथ अभिन्न रूप से जुड़ी हुई संस्कृति के संरक्षण पर बहुत अधिक बल नहीं दिया जाएगा, अथवा उसका पहलू बदल दिया जाएगा तथा उसे अधिकांशतः उसके ही भरोसे छोड़ दिया जाएगा, संस्कृति के नए रूपों के सृजन तथा कलाओं और विज्ञानों के क्षेत्र में नए अनुसंधान करने की सामर्थ्य का अधिक सम्मान और प्रोत्साहन किया जाएगा ।

अभिजनशास्त्री इन विविध रीतियां द्वारा अतीत के विषमतामूलक समाजा की विरासत की हिमायत करते और साथ ही समानता की भावना के लिए छूट देत हैं। वे शासका और शासितो के बीच पूरी तरह भेद करने पर वहुधा जार देते हैं। उसे वे वैज्ञानिक रूप म पेश करत हैं, तथापि व इस स्थिति को अभिजना के बीच होड की स्थिति बताकर, उसके और लोकतत्र के बीच सामजस्य स्थापित करने की कोशिश करत ह। वे समाज का वर्गों मे विभाजन स्वीकार करते और उमे न्यायसगत ठहराते है लेकिन साथ ही इस विभाजन को यह कहकर अधिक अधिक ग्राह्य बनाने की कोशिश करते है कि उच्चतर वग ही अभिजन है, परन्तु यथाथ मे अभिजन का निर्माण याग्यतम व्यक्तिया से मिलकर होता है भले ही उनके सामाजिक उदगम कुछ भी हा। उनकी यह हिमायत बहुत सीमा तक समानता की कल्पना के स्थान पर अवसर की समानता की धारणा के प्रतिपादन पर निभर करती है। परतु अवसर की समानता की धारणा नितात निम्न नैतिक महत्व के बावजूद अपना खडन अपने आप ही कर डालती है। इसम असमानता के अस्तित्व को पहले से ही मान लिया गया है, क्याकि 'अवसर' का अथ है स्तरित समाज मे उच्चतर स्तर तक उठने का अवसर । साथ ही वह कल्पना समानता का अस्तित्व भी स्वीकार करती है क्याकि इसमे यह बात निहित है कि स्तरित समाज मे मूलरूप से विद्यमान असमानताओं का प्रत्यक पीढी मे निरोध किया जाना चाहिए जिससे कि व्यक्ति सचमुच अपनी व्यक्तिगत योग्यताओं का विकास कर सके। अवसर की समानता के लिए अनिवाय दशाओं की प्रत्येक खोज से—जसे शिक्षा के क्षेत्र मे—यह सिद्ध होता है कि व्यक्ति के जीवन अवसरा पर सामाजिक वग के रूढ भेदो का प्रभाव कितना शक्तिशाली और मूलगामी होता है। अवसर की समानता उस समाज मे ही यथाथ रूप ग्रहण कर सकती है जिसम वग अथवा अभिजन न हो। उस स्थिति म यह धारणा स्वय निरथक हो जाएगी, क्योंकि प्रत्यक नई पीढ़ी म व्यक्तिया के समान जीवन अवसर यथाथ रूप ले लेंगे, तथा अवसर की कल्पना का अथ उच्चतर सामाजिक वग में प्रवेश पाने के लिए होनेवाले सघष के बजाय प्रत्येक व्यक्ति के लिए अन्य मनुष्यों के साथ निर्बाध ससग के वातावरण मे बुद्धि और चेतना की उन शक्तियां के विकास के अवसर बन जाएगा जो उसमे व्यक्ति के नाते मौजूद हैं।

# पाद टिप्पणिया

1 ज० जे० रूसो ए डिसरटेशन आन दि आरिजिन एड फाउडेशन आफ दि अनीक्वलिटी आफ मनकाइड (एवरीमन सस्करण) प० 160

2 आर० एच० टानी ने इक्वलिटी म इसका प्रतिपादन बहुत सराहनीय रीति से किया है

3 अचरज की बात यह है कि इसे बुद्धिमत्ता तथा वर्गबद्ध समाजो के नियत्रणो के भीतर भी व्यक्त होनेवाली एव उन नियत्रणो के हटने पर और भी अधिक सुगमतापूर्वक अभिव्यक्तिशील मानवीय सर्जनात्मक क्षमताओ म बनती आस्था का प्रमाण मानने के बजाय उसका दोष माना जाता है

4 टी० बी० बाटमोर द्वारा सपादित कार्ल मार्क्स अर्ली राइटिंग्स देखिए

5 उदाहरण के तौर पर कैपिटल भाग 1 म श्रम विभाजन के हानिकारक प्रभावो पर विजय प्राप्त करने के साधनो तथा कैपिटल, भाग 3 म मानवीय स्वतत्रता की दशाओ के बारे म उसका अभिमत दि सिविल वार इन फ्रास म कम्यून द्वारा प्रामाणिक लोकतत्रीय स्वशासन की स्थापना के लिए उसकी प्रशसा तथा क्रिटीक आफ दि गोथा प्रोग्राम म जरमनी के समाजवादी श्रमिक दल (सोशलिस्ट वर्कर्स पार्टी) के कार्यक्रम के बारे म उसकी टीका देखिए

6 दृष्टात के तौर पर कैपिटल भाग 3 म मानवीय स्वतत्रता विषयक अवतरण म मार्क्स घोषणा करता है कि आर्थिक उत्पादन का क्षेत्र किसी भी सभावित उत्पादनप्रक्रिया के अतर्गत आवश्यकता का ही क्षेत्र रहता है स्वतत्रता का क्षेत्र वस्तुत वहा शुरू होता है जहा आवश्यकता और बाह्य प्रयोजनो के के लिए किया जानेवाला श्रम समाप्त हो जाता है, स्वतत्रता अपनी प्रकृति के अनुसार पदार्थगत उत्पादन के क्षेत्र से बाहर रहती है

7 मार्क्स यहा युवा हीगलवादियो का उल्लेख करता है जो अपने द्वारा परिवर्धित हीगेलवादी दर्शन को आलोचनात्मक समालोचना (क्रिटिकल क्रिटिसिज्म) कहते थे

8 विशेषत पोलिटिकल पार्टीज भाग 6 अध्याय 2 देखिए

9 उल्लिखित निबध ब्रिटिश जर्नल आफ सोशियालाजी 1 (2) म प० 131 पर देखिए

10 वही प० 131 32

11 सी० राइट मिल्स दि पावर एलीट प० 304

12 युगोस्लाव व्यवस्था के सक्षिप्त विवरण के लिए फ्रेड सिंगिलटन तथा टोनी टोफाम का निबध युगोस्लाव वर्कर्स कट्रोल दि लेटेस्ट फेज न्यू लेफ्ट रिव्यू (18) म प० 73 84 पर देखिए

13 आर्जेस फ्राइडमान की पुस्तक दि एनाटमी आफ वर्क म श्रम विभाजन

और अवकाश के विराम की विस्तत विवेचना मेरे जमे दृष्टिकोण से ही की गई है

14 अल्फ्रड माशल दि फ्यूचर आफ दि वकिंग क्लासेज देखिए ए० सी० पिग द्वारा सपादित मेमारियल आफ अल्फ्रड माशल मे प० 101 18 पर

15 वही प० 49

16 ए स्टडी आफ हिस्टरा भाग 3 प 239 अनिम भाग म टायनबी ने अपन विचारा के बारे म पुनर्चिंतन किया है उमम वह अभिजन सिद्धाला के बहुत समाप पहुच गया है वह कहता है सजनशा‍ल अल्पसख्या से मेरा तात्पय शासक अल्पसख्या से है जिसम मानवप्रकृति की सजनशील शक्ति समाज म भाग लेनवाल समस्त व्यक्तिया के लिए लाभप्रद प्रभावपूण काय में अभिव्यक्ति क अवसर खाजता है प्रभुत्वशाला अल्पसख्या से मेरा अभिप्राय एक शासक अल्पसख्या से है जा शासन करने क मामले म आकषण के बल पर कम और शक्ति के बूते पर अधिक निभर रहती है भाग 12 रिकसीडरेशन प० 305)

17 वही प० 49

# सदर्भ ग्रथ सूची

रेमड एरन रा निवध सोशल स्टक्चर एड दि रूलिंग क्लास'। ?ेखिए ब्रिटिश जनरल आफ सासियालोजी, I (1) मार्च, 1950, पृ० 1 16 और I (2) जन 1950 म पृ० 126 43 पर।

रेमड एरन वा निवध 'क्लास सोसियेल क्लास पॉलीतीक, क्लासे दिरिजियात देखिए यूरोपियन जनरल ऑफ सासियाल्ाजी I (2) 1960 म पृ० 260 81 पर।

ओसो स्वी, स्तानिस्लाव क्लास स्ट्रक्चर इन दि सोशल कॉशसनेम (लदन रटलेज ऐंड केगन पाल, 1963)।

कोल जी० डी० एच०, स्टडीज इन क्लास स्ट्रक्चर (लदन, रटलेज ऐंड केगन पाल 1955), अध्याय 5, 'एलीटस इन ब्रिटिश सोसाइटी'।
क्लिफफड वान मिचेलिना, वा निवध 'सम फ्रेंच कासेप्ट्स आफ एलीटम,।
देखिए ब्रिटिश जनरल आफ सोसियालोजी, XI (4) दिसवर, 1960, मे पृ० 319 31 पर।

जिसवग एम० वा निवध दि सोसियालोजी आफ परतो'। देखिए रीजन ऐंड अनरीजन इन सासाइटी (लदन, लागमैंम, ग्रीन ऐंड क०, 1947) म।
जैग्गी अस डाई जैसेल्मखापनलिख एलीट आइन स्टडी झुम प्राब्लेम डेर माझियालेन मैख्त (वन,पाल हाप्त 1960)।

नाडेल, एस० एफ०, का निबंध दि कासेप्ट आफ साशल एलीटस' देखिए, इंटरनेशनल साशल साइंस बुलेटिन, VIII (3), 195०, पृ०413-24।

परेतो, विल्फ्रेडो लेम सिस्तम्म सोसियालिस्तम (परिस, मासल गियाड,1902)।

परेतो विल्फ्रेडो दि माइंड एंड सोसायटी (4 भाग, लदन, जानाथन केप,1935) त्रात्तातो दि सोसियोलोजिया जेनरेल (1915 19) का अंग्रेजी अनुवाद।

बोरकेनो, फ्राज परेतो' (लदन चैपमैन एड हाल, 1936)।

बनहम, जेम्स, 'दि मैकियावेलियन' डिफेंडस आफ फ्रीडम (लदन, पुटनाम ऐंड क०, 1943)।

मीजेल, जेम्स एच०, दि मिथ आफ दि रूलिंग क्लास गायताना मास्का ऐंड दि एलीट (एन आबर, यूनि० आफ मिशीगन प्रेस, 1958)। इसमे मोस्का की रचनाओ की सूची है।

मिल्स, सी० राइट दि पावर एलीट (न्यूयार्क मैकग्रा हिल, 1959)।

मोस्का गायतानो दि रूलिंग क्लास (न्यूयार्क, मैकग्रा हिल,1939)।

लासवैल, हैराल्ड डी०, लर्नर, डेनियल और रौथवल सी० ईस्टन दि कपरेटिव स्टडी आफ एलीटस (हूवर इस्टीटयूट स्टडीज, सीरीज बी एलीटस, सख्या 1 स्टानफोड 1952)।

शुपीटर, जे० ए० इपीरियलज्म एड साशल क्लासेज (आक्सफर्ड, बेसिल ब्लैकवैल 1951)।

सेरेनो,रेंजो का निबध 'दि एंटी-अरिस्टोटेलियनिज्म आफ गायताना मास्का ऐंड इटस फेट दखिए ईथिक्स XIVIII (4) जुलाई 1938 मे।

## राजनीतिक अभिजन

गटसमैन डब्लू० एल० दि ब्रिटिश पालिटिकल एलीट (लदन मैकगिबन ऐंड क० 1963)।

मेकेंजी आर० टी० ब्रिटिश पोलिटिक्ल पार्टीज (लदन हाइनमान द्वितीय सस्करण 1963)।

मारविन डबन द्वारा सपादित, पोलिटिनल डिमीजन मेन्स (ग्नेनवा दि फ्री प्रेस, 1961) उसकी भूमिका मे आधुनिक शाध का सर्वेक्षण किया गया है।

मैथ्यूज डी० आर० दि सोशल बकग्राउड आफ पोलिटिक्ल डिसीजन मेक्स (न्यूयाक डबलडे 1954)

मिचेल्स, राबट पालिटिक्ल पार्टीज (ग्लेनको दि फ्री प्रेम 1949)। यह उसकी जरमन कृति का अग्रेजी अनुवाद है। मूल कृति 1925 म लीपजिग से छपी थी।

ओस्टागोर्स्की, एम०, डिमाक्रेमी ऐंड दि आरगनाइजेशन आफ पोलिटिक्ल पार्टीज (2 भाग लन्न मैक्मिलन 1908) ला देमाक्राती एत ल आर्गेनाइजेशन ल्स पार्टीज पोलोटीक्स, पेरिस 1903 का अग्रेजी अनुवाद।

रूचीमान डब्न० जी० सोशल साइस ऐंड पोलिटिकल थियरी (केंब्रिज कैंब्रिज यूनि० प्रेम 1963) अध्याय 4 'एलीटस ऐंड ओलीगार्कीज'।

## उद्योगो के स्वामी और प्रबधक

एक्शन सोसाइटी ट्रस्ट, मैनेजमट सक्शन (लदन, एक्शन मोमाइटी ट्रस्ट, 1956)।

बाल्टजेल ई० डिगबी एन अमरिकन बिजिनस अरिस्ट्राक्रेमी (ययाक कालियर बुक्स 1962) बर्ले ए० ए० तथा मीम जी० मी० दि माडन कारपोरेशन ऐंड प्राइवेट प्रापर्टी (न्यूयाक मकमिलन 1933) बनहम जेम्म दि मैनेजीरियल रिवाल्यूशन (लदन 1943)।

क्लीमट्स, आर० वी०, मनेजस ए स्टडी आफ दयर कॅरियम इन इडस्ट्री (लदन, अलेन एड अनविन 19*8)।

कापमान जी० एच० लीडस आफ दि ब्रिटिश इडस्ट्री ए स्टडी आफ दि करियम आफ मोर दैन ए थाउजेंड पब्लिक कपनी डायरक्टम (लदन, गी ऐंड

कपनी, 1955) ।

फ्लोरेंस, पी० सार्जेंट, दि लाजिक आफ ब्रिटिश ऐंड अमरिकन इडस्ट्री (लदन, रटलेज ऐंड कैगन पाल, 1953) ।

बाल्जटल, ई डिग्बी, एन अमेरिकन बिजनेस अरिस्टोक्रेसी (न्यूयाक, कोलियर बुक्स, 1962, मूलत फिलाडेलफिया जटिलमैन दि मेकिंग आफ ए नेशनल अपर क्लास, के नाम से 1958 म प्रकाशित ।

बरले, ए० ए०, और मीन्स, जी० सी०, दि माडर्न कारपोरेशन एड प्राइवेट प्रापर्टी (न्यूयाक, मैकमिलन, 1933) ।

बनहम, जेम्स, दि मनेजीरियल रेवोल्यूशन (लदन, पुटनाम ऐंड क०, 1943) ।

मिलर, विलियम, द्वारा सपादित, मैन इन बिजनेस एसेज आन दि हिस्टारिकल रोल आफ दि एंटरप्रेन्योर (न्यूयाक, हापर ऐंड रो, नया सस्करण,1962) ।

टासिग, एफ० डब्लू० और जोसलिन, सी० एस०, अमेरिकन बिजनेस लीडस (न्यूयाक दि मैकमिलन क०, 1932)

वेबलेन, थोसटीन, दि इजीनियस ऐंड दि प्राइस सिस्टम ( न्यूयाक, दि वाईकिंग प्रेस, 1921)

वारनर, लायड डब्लू० और एबेगलेन, जेम्स सी०, बिग बिजनेस लीडस इन अमेरिका (न्यूयाक, हापर 1955) ।

## नौकरशाह

आमस्टाग जान ए० दि सोवियत ब्यूरोक्रेटिक एलीट ए केस स्टडी आफ युक्रेनियन अपैरेटस (लदन, स्टीवेंस ऐंड सस, 1959) ।

आइसेनस्ताद, एस० एन० दि पोलिटिकल सिस्टेम्स आफ एपायस दि राइज एड फाल आफ दि हिस्टोरिकल ब्यूरोक्रेटिक एपायस (न्यूयाक, कोलियर-मकमिलन 1963) ।

कैंनसाल, आर० के०, हायर सिविल सर्वेंटस इन ब्रिटेन (लदन, रटलेज एड केगन पाल, 1955)।

किंग्सले, जे० डोनाल्ड, रेप्रेजेंटेटिव ब्यूरोक्रेसी (यलो स्प्रिंग्स अतियाक प्रेस, 1944)।

जिलास, एम०, दि न्यू क्लास (लदन टेम्स एँड हृडसन 1957)।

बेंडिक्स, आर०, हायर सिविल सर्वेंट्स इन अमेरिकन मोसाइटी (बोल्डर यूनि० आफ कोलेरेडो प्रेस) 1949)।

ब्ला, पीटर एम०, ब्यूरोक्रेसी इन माडन सोसाइटी (न्यूयाक, रेंडम हाउस 1956)।

बोटमोर, टी० बी०, हायर सिविल सर्वेंट्स इन फ्रास' ट्राजक्शस आफ दि सेकड वल्ड काग्रेस आफ सोसियोलाजी (लदन, इटरनेशनल सोसियोलाजिकल एसोसिएशन, 1954) भाग II, पृ० 143 52।

वेवर, मैक्स, 'ब्यूरोक्रेसी' नामक निबध जा एच० एच० गथ और सी० राइट मिल्स द्वारा सपादित मैक्स वेबर नामक पुस्तक मे प्रकाशित हुआ, (लदन, केगन पाल, 1947)।

विट्फोगल, के० ए०, ओरियटल डेस्पाटिज्म (न्यू हेवन, यल यूनि० प्रेस, 1957)।

स्टीवाड, जूलियन एच०, इरिगशन सिविलिज़ेशस ए कपरटिव स्टडी (वाशिगटन, पेन अमेरिकन यूनियन, 1955)।

## बुद्धिवादी

ऐरन, रेमड, दि ओपियम आफ दि इटलैक्चुअल्स (लदन, सेकर एँड वारबग, 1957)।

ग्राम्सची अतानियो, गिल इटेलैक्टचुअली एल आर्गेनिज्माजिने डेला कुल्तूरा (मिलान आइनोदी, 1955)।

डे हुसजार, जाज बी०, दि इटैलैक्चुअल्स ए कन्ट्रावर्शल पोर्ट्रेट (ग्लेनको, दि फ्री फ्रेस 1960)।

बेंडा जूलियन, ला त्राहिसन देस क्लर्क्स (पेरिस, ग्रासेट, 1927)।

बोदा, लुई, लेस इटैलैक्चुअल्स (परिस, प्रेसेज युनिवर्सितेयस दे फ्रास, 1962)।

मानहाइम, कार्ल, आइडियालाजी ऐंड यूटोपिया (लदन, केगन पाल, 1936), अध्याय III, खंड 4, 'दि सोसियालाजिकल प्राब्लेम आफ दि 'इंटेलीजेंशिया'।'

मानहाइम कार्ल, मैन एंड सोसाइटी इन ऐन एज आफ रिकंस्ट्रक्शन (लदन, केगन पाल, 1940), भाग II, अध्याय 8 9।

मिचेल्स, राबर्ट 'इटैलैक्चुअल्स', एसाइक्लोपडिया आफ दि सोशल साइंसेज, सपादक ई० आर० ए० सेलिगमान (न्यूयार्क, मकमिलन 1932), भाग 8, पृ० 118-26 (इस लेख मे एक विस्तृत पुस्तक सूची जुडी हुई है)।

ले गाफ, जैक लेस इटैलैक्चुअल्स औ मोयन एज (पेरिस, एडीशन दु सियूल 1957)।

लिपसट एम० एम०, पोलिटिकल मन (लदन, हाइनमान, 1960), अध्याय 10 'अमेरिकन इटलैक्चुअल्स देयर पालिटिक्स ऐंड स्टेटस।

वेबर, मैक्स, दि चाइनीज लितराती'। देखिए 'फ्राम मक्स वेबर म (पू० उ०)।

## अभिजनो का परिसचार

कालाविस्का मारी ला सकुलेशन देस एलीत्स एन फ्रास एतु दे हिस्तारीक दे पुइस ला फिन दु क्षाई सिक्ल जस्क्वा ला ग्रादे रेवोल्यूशन (लुसाने इम्प्राइमरीज रीयूनीज 1912)।

गिराड अलेन ला रूसाइट सासियाले एन फ्रास सेस कैरेक्टस सेस लोइस सस इफेटस (परिस प्रेसेज युनिवर्सितेयस द फ्रास 1961)।

पिरेन, हेनरी, 'लेस पेरियेड्स दे ल' हिस्तायर सोसियाले दु केपित्तलिस्मे, बुलटिन द अकेदेमी रायेल दे वेल्जीक, मई, 1914 (अमेरिकन हिस्टारिकल रिव्यू अप्रल 1914, म उसका अंग्रेजी अनुवाद दिया गया है।)

ब्रिटन ब्रेन, दि अनाटमी आफ रेवाल्यूशन (न्यूयाक, परिवर्द्धित सस्करण, 1957)।

माश, राबट एम०, दि मैंडेरिस दि सक्युलेशन आफ एलीटस इन चायना, 1600-1900 (ग्लेनको, दि फ्री प्रेस 1961)।

मिलर, एस० एम०, कपेरटिव सोशल मोबिलिटी करट सोसियालाजी 9 (1) 1960, पृ० 89।

डेहरेनडाफ राल्फ, यूबेर आइनिगे प्राब्लेम डेर सोसियालोजिस्चेन थियरी डेर रवोल्यूशन, यूरोपियन जनरल आफ सोसियालाजी, II (1), 1961, पृ० 153 62।

लिपसेंट, एस० एम०, आर बेडिक्स, आर साशल माबिलिटी इन इडस्ट्रियल सोसायटी (बक्ल, यूनि० आफ कलीफार्निया प्रेस, 1949)।

## अल्पविकसित देशो मे अभिजन

आमड, जो० ए०, और कालमैन, जे० एम०, दि पालिटिक्स आफ दि डेवलपिग एरियाज (प्रिसटन, प्रिसटन यूनि० प्रेस, 1960)। इस पुस्तक म पाच उपयोगी क्षेत्रीय अध्ययना का समावेश किया गया है दक्षिणपूव एशिया, दक्षिण एशिया, अफ्रीका म सहारा क्षेत्र, सुदूरपूव और लेटिन अमरीका)।

केर क्लाक, डनलप, जान टी०, हार्बिसन फ्रेडरिक एच० और मायस, चाल्स ए०, इडस्ट्रियलिज्म ऐंड इडस्ट्रियल मैन, (कैब्रिज, हावड यूनि० प्रेस, 1960)। विशेष तौर पर अध्याय 3 'दि इडस्ट्रियलाइजिंग एलीटस एड दयर स्ट्रेटीजीज') नील, आर० वान, दि इमर्जेंसीज आफ दि माडन इडानेसियन एलीट (दि हग, डब्लू वान होव, 1960)

पाई, लूसियन डब्लू०, आर्मीज इन दि प्रासस आफ पालिटिकल माडनाइजशन, यूरोपियन जनरल आफ सामियोलाजी II (1), 1961, पृ० 82 92।

फाइडमान, जार्जेस, प्राब्लेम्स दि अमेरीर लेटीन, (परिस, गैलीमाड,1959)।

फाइडमान, जार्जेस सिगनल दि उन व्रायसियम वाय ? (परिस, गैलीमाड 1961)।

बरगर, मोरो, ब्यूराक्रेसी एँड सोसाइटी इन माडन इजिप्ट ए स्टडी आफ दि हायर सिविल सर्विस (प्रिंसटन प्रिंसटन यूनि० प्रेस, 1957)।

मिश्रा बी० बी० दि इंडियन मिडिल क्लासेज (लन्दन, आक्सफोर्ड यूनि० प्रेस, 1961)।

यूनेस्को इंटरनेशनल सोशल साइंस बुलेटिन, 8 (3), 1956। सिंपोजियम आन अफ्रीकन एलीटस', पृ० 413 88।

लियूवन, एडविन आर्म्स एँड पालिटिक्स इन लेटिन अमेरिका (न्यूयार्क, फ्रेडरिक ए० प्रेगर परिवर्द्धित सस्करण 1961)।

वर्दाइम, डब्लू० एफ०, इंडोनेशियन सोसाइटी इन ट्राजीशन ए स्टडी आफ सोशल चेंज (दि हेग एँड वादंग, डब्लू० वान होव, द्वितीय सस्करण, 1959)।

## अभिजन और लोकतन्त्र

बैल क्लाइव सिविलिजेशन एन एस्से (लदन, चैटो एँड विंडस, 1928)।

मानहाइम काल, मन एंड सोसाइटी इन एन ऐज आफ रिकस्ट्रक्शन (लदन, केगन पाल 1940), भाग II अध्याय 2 से 7।

मानहाइम, काल, एस्सेज आन दि सासियोलाजी आफ कल्चर (लदन, रटलेज एंड केगन पाल,1956), भाग III दि डिमाक्रेटाइजेशन आफ कल्चर'।

यूनेस्को, डिमाक्रेसी इन ए वर्ड आफ टेंशस सपादक रिचर्ड मैकवियोन (परिस, यूनेस्को, 1951)। विशेषतया जी० डी० फील्ड ग्राड लिंडसे, एस० ओसोव्स्की और ईथियल द साला पूल के निबंध देखिए।

## पुस्तक मे उल्लिखित अन्य कृतिया

इलियट, टी० एस०, नोटस टुवड्स दि डेफीनीशन आफ कल्चर (लदन फेबर ऐंड फेबर 1948)।

ऐरन, रेमड पैक्स एट ग्वेर एन्ट्रे लेस नशस (पेरिस कालमन लेवी 1962)।

इआरत्गा वार्गसेत, जास, दि रिवाल्ट आफ दि मासेज (1930 अग्रेजी अनुवाद, 1932 नया सस्करण लदन अलेन ऐंड अनविन 1961)।

क्रोस, बोनेडेटटो, हिस्टारिकल मैटीरियलिज्म ऐंड दि इकानामिक्स आफ काल माक्स (लदन होवड लेटिमर, 1913)।

ग्राम्सची अतोनिया, नोट सुल मैकियावेली, सुल्ला पालीतीका ए सुल्लो स्तातो माडर्नो (मिलान आइनौदी, 1955)।

नामेंड, मैक्स, रिबेल्स ऐंड रेनीगेडस (न्यूयाक, मैकमिलन 1932)।

पिगू, ए० सी० द्वारा सपादित ममोरियल्स आफ अल्फ्रेड माशल (लदन मकमिलन, 1925)।

फाइनर एस० आई०, दि मैन आन हार्सबैक दि रोल आफ दि मिलिटरी इन पालिटिक्स (लदन, पालमाल प्रेस, 1962)।

फ्राइडमान, जार्जेस दि अनाटमी आफ वक (लदन, हाइनमान, 1962)।

फ्रीडरिख, काल जे० दि न्यू इमेज आफ दि कामन मैन (बोस्टन, बेकन प्रेस, द्वितीय सस्करण, 1950)।

ब्लोक माक, फ्यूडल सोसाइटी (लदन, रटलेज ऐंड केगन पाल 1961)

बाटमोर, टी० बी०, द्वारा सपादित, काल माक्स अरली राइटिंग्स (लदन, वाटस ऐंड क०, 1963)।

टानी जार० एच० ईक्वेलिटी (लदन, अलेन ऐंड अनविन, चौथा सम्करण, 1952)।

टिटिमस रिचड एम०, इनकम डिस्ट्रीब्यूशन ऐंड सोशल चेंज (लदन, अलेन एड अनविन, 1962)।

टायनबी एच० जे०, ए स्टडी आफ हिस्टरी (12 भाग, लदन, आक्सफोड यूनि० प्रेस, 1934 61)

रूसो जे० जे० ए डिसर्टेशन आन दि आरिजिन ऐंड फाउडेशन आफ दि इनीक्वेलिटी आफ मैनकाइड (दि सोशल काट्रक्ट ऐंड डिस्कोर्सेज का एवरीमन सस्करण लदन, डेंट ऐंड सस 1913)।

लूथी एच०, दि स्टेट आफ फ्राम (लदन, सीकर ऐंड वारबग, 1955)।

वेबर, मैक्स, पालिटिक्स एज ए वोकेशन' फ्राम मैक्स वेबर म। सपादक, एच० एच० गथ और सी० राइट मिल्स (लदन केगन पाल, 1947)।

वेबर, मैक्स, दि मैथडोलाजी आफ दि साशल साइसेज (ग्लेनको, दि फ्री प्रेस 1949)।

विलियम्स, रेमड कल्चर ऐंड सासाइटी (हामड्सवथ पेंगुइन बुक्स 1961)।

सपमन एथनी, अनाटमी आफ ब्रिटेन (लदन, होडर ऐंड स्टौग्न, 1962)।

सीजफ्रिड, आद्रे, द ला इल्लेमे ए ला वे मे रिपब्लीक (परिस ग्रासेट, 1957)।

स्ट्रैची जान, कटेंप्रेरी कपिटलिज्म (लदन, गालाज, 1956)।

# अनुक्रमणी